

CLASSROOM PROGRAMME

CLASS X CBSE - HINDI

SPARSH

SHORT NOTE

INDEX

CHAPTER NO:	CHAPTER NAME	PAGE NO:
1	साखी	3 - 12
2	पद	13 - 20
3	मनुष्यता	21 - 38
4	पर्वत प्रदेश में पावस	39 - 51
5	तोप	52 - 58
6	कर चले हम फ़िदा	59 - 66
7	आत्मत्राण	67 - 73
8	बड़े भाई साहब	74 - 87
9	डायरी का एक पन्ना	87 - 95
10	तताँरा-वामीरो कथा	96 - 106
11	तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र	107 - 118
12	अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले	119 - 128
13	पतझर में टूटी पत्तियाँ	129 - 141
14	कारतूस	142 - 153

पाठ - 1

साखी

कवि परिचय

कवि	– कबीरदास
जन्म	– लहरतारा , काशी
मृत्यु	– मगहर , उत्तरपरदेश

साखी पाठ का सारांश

कबीरदास की रचनाओं का संकलन बीजक नाम से किया गया है, जिनके तीन भाग हैं, साखी , सबत और रमैनी। इनमें 'साखी' शब्द 'साक्षी' शब्द का ही (तद्भव) बदला हुआ रूप है। साक्षी शब्द साक्ष्य से बना है। जिसका अर्थ होता है -प्रत्यक्ष ज्ञान अर्थात् जो ज्ञान सबको स्पष्ट दिखाई दे। यह प्रत्यक्ष ज्ञान गुरु द्वारा शिष्य को प्रदान किया जाता है। संत (सज्जन) सम्प्रदाय (समाज) में अनुभव ज्ञान (व्यवाहरिक ज्ञान) का ही महत्व है -शास्त्रीय ज्ञान अर्थात् वेद , पुराण इत्यादि का नहीं। कबीर का अनुभव क्षेत्र बहुत अधिक फैला हुआ था अर्थात् कबीर जगह -जगह घूम कर प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करते थे। इसलिए उनके द्वारा रचित साखियों में अवधि , राजस्थानी , भोजपुरी और पंजाबी भाषाओं के शब्दों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। इसी कारण उनकी भाषा को 'पचमेल खिंचड़ी' अर्थात् अनेक भाषाओं का मिश्रण कहा जाता है। कबीर की भाषा को सधुक्कड़ी भी कहा जाता है।

इन दोहों में कबीर ईश्वर प्रेम के महत्व को प्रस्तुत कर रहे हैं। पहले दोहे में कबीर मीठी भाषा का प्रयोग करने की सलाह देते हैं ताकि दूसरों को सुख और अपने तन को शीतलता प्राप्त हो। दूसरे दोहे में कबीर ईश्वर को मंदिरों और तीर्थों में ढूंढने के बजाये अपने मन में ढूंढने की सलाह देते हैं। तीसरी साखी में कबीर ने अहंकार और ईश्वर को एक दूसरे से विपरीत(उल्टा) बताया है। चौथी साखी में कबीर कहते हैं कि प्रभु को पाने की आशा उनको संसार के लोगो से अलग करती है। पांचवी साखी में कबीर कहते हैं कि ईश्वर के वियोग में कोई व्यक्ति जीवित नहीं रह सकता,

अगर रहता भी है तो उसकी स्थिति पागलों जैसी हो जाती है। छठी साखी में कबीर निंदा करने वालों को हमारे स्वभाव परिवर्तन में मुख्य मानते हैं। सातवीं साखी में कबीर ईश्वर प्रेम के अक्षर को पढने वाले व्यक्ति को पंडित बताते हैं और अंतिम साखी में कबीर कहते हैं कि यदि ज्ञान प्राप्त करना है तो मोह – माया का त्याग करना पड़ेगा।

प्रस्तुत पाठ की साखियाँ प्रमाण हैं की सत्य को सामने रख कर ही गुरु शिष्य को जीवन के व्यावहारिक ज्ञान की शिक्षा देता है। यह शिक्षा जितनी अधिक प्रभावशाली होगी, उतनी ही अधिक याद रहेगी।

शब्दार्थ

बाँणी : बोली

आपा : अहम् (अहंकार)

खोइ : त्याग करना

सीतल : शीतल (ठंडा ,अच्छा)

औरन : दूसरों को

होइ : होना **Individual Tuition Concept**

कुंडली : नाभि

मृग : हिरण

घटि घटि : कण कण

मैं : अहम् (अहंकार)

हरि : परमेश्वर

अँधियारा : अंधकार

सुखिया : सुखी

अरु : अज्ञान रूपी अंधकार

सोवै : सोये हुए

दुखिया : दुःखी

रोवै : रो रहे

बिरह : बिछड़ने का गम

भुवंगम : भुजंग , सांप

बौरा : पागल

निंदक : निंदा करने वाला

नेडा : निकट

आँगणि : आँगन

साबण : साबुन

निरमल : साफ़

सुभाइ : स्वभाव

पोथी : पुस्तक

मुवा : मरना

भया : बनना

अषिर : अक्षर

पीव : प्रिय

जाल्या : जलाया

आपणों	: अपना
मुराड़ा	: जलती हुई लकड़ी , ज्ञान
जालों	: जलाऊं
तास का	: उसका

साखी की पाठ व्याख्या

काव्यांश

ऐसी बाँणी बोलिये ,मन का आपा खोइ।

अपना तन सीतल करै ,औरन कौ सुख होइ॥

प्रसंग -: प्रस्तुत दोहा हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श' के कबीर की साखियाँ से ली गई है। यह दोहा कबीर जी द्वारा लिखा गया है। इसमें कबीर ने मीठी बोली बोलने और दूसरों को दुःख न देने की बात कही है

व्याख्या -: इसमें कबीरदास जी कहते हैं कि हमें अपने मन का अहंकार त्याग कर ऐसी भाषा का प्रयोग करना चाहिए जिसमें हमारा अपना तन मन भी सवस्थ रहे और दूसरों को भी कोई कष्ट न हो अर्थात् दूसरों को भी सुख प्राप्त हो।

काव्यांश

कस्तूरी कुंडली बसै ,मृग ढूँढै बन माँहि।

ऐसैं घटि- घटि राँम है , दुनियां देखै नाँहि॥

प्रसंग -: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श' से ली गई है। इसके कवी कबीरदास जी हैं इसमें कबीर कहते हैं कि संसार के लोग कस्तूरी हिरण की तरह हो गए हैं जिस तरह हिरण कस्तूरी प्राप्ति के लिए इधर उधर भटकता रहता है उसी तरह लोग भी ईश्वर प्राप्ति के लिए भटक रहे हैं।

व्याख्या -: कबीरदास जी कहते हैं कि जिस प्रकार एक हिरण कस्तूरी की खुशबु को जंगल में ढूँढता फिरता है जबकि वह सुगंध उसी की नाभि में विद्यमान होती है परन्तु वह इस बात से

बेखबर होता है, उसी प्रकार संसार के कण कण में ईश्वर विद्यमान है और मनुष्य इस बात से बेखबर ईश्वर को देवालयों और तीर्थों में ढूँढता है। कबीर जी कहते हैं कि अगर ईश्वर को ढूँढना ही है तो अपने मन में ढूँढो।

काव्यांश

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहि।

सब अँधियारा मिटी गया, जब दीपक देख्या माँहि॥

प्रसंग -: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श' से ली गई है। इस साखी के कवि कबीरदास जी हैं। इसमें कबीर जी मन में अहम् या अहंकार के मिट जाने के बाद मन में परमेश्वर के वास की बात कहते हैं।

व्याख्या -: कबीर जी कहते हैं कि जब इस हृदय में 'मैं' अर्थात् मेरा अहंकार था तब इसमें परमेश्वर का वास नहीं था परन्तु अब हृदय में अहंकार नहीं है तो इसमें प्रभु का वास है। जब परमेश्वर नमक दीपक के दर्शन हुए तो अज्ञान रूपी अहंकार का विनाश हो गया।

काव्यांश

सुखिया सब संसार है, खायै अरु सोवै।

दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै॥

प्रसंग -: प्रस्तुत दोहा हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श' के कबीर की साखियाँ से ली गई है। यह दोहा कबीर जी द्वारा लिखा गया है। इसमें कबीर जी अज्ञान रूपी अंधकार में सोये हुए मनुष्यों को देखकर दुःखी हैं और रो रहे हैं।

व्याख्या -: कबीर जी कहते हैं कि संसार के लोग अज्ञान रूपी अंधकार में डूबे हुए हैं अपनी मृत्यु आदि से भी अनजान सोये हुये हैं। ये सब देख कर कबीर दुःखी हैं और वे रो रहे हैं। वे प्रभु को पाने की आशा में हमेशा चिंता में जागते रहते हैं।

काव्यांश

बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ।

राम बियोगी ना जिवै, जिवै तो बौरा होइ॥

प्रसंग -: -: प्रस्तुत दोहा हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श' के कबीर की साखियाँ से ली गई है। यह दोहा कबीर जी द्वारा लिखा गया है। इसमें कबीर कहते हैं कि ईश्वर के वियोग में मनुष्य जीवित नहीं रह सकता और अगर रह भी जाता है तो वह पागल हो जाता है।

व्याख्या -: कबीरदास जी कहते हैं कि जब मनुष्य के मन में अपनों के बिछड़ने का गम सांप बन कर लोटने लगता है तो उस पर न कोई मन्त्र असर करता है और न ही कोई दवा असर करती है। उसी तरह राम अर्थात् ईश्वर के वियोग में मनुष्य जीवित नहीं रह सकता और यदि वह जीवित रहता भी है तो उसकी स्थिति पागलों जैसी हो जाती है।

काव्यांश

निंदक नेड़ा राखिये , आँगणि कुटी बँधाइ।

बिन साबण पाँणीं बिना , निरमल करै सुभाइ॥

प्रसंग-: -: प्रस्तुत दोहा हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श' के कबीर की साखियाँ से ली गई है। यह दोहा कबीर जी द्वारा लिखा गया है। इसमें कबीरदास जी निंदा करने वाले व्यक्तियों को अपने पास रखने की सलाह देते हैं ताकि आपके स्वभाव में सकारात्मक परिवर्तन आ सके।

व्याख्या -: इसमें कबीरदास जी कहते हैं कि हमें हमेशा निंदा करने वाले व्यक्तियों को अपने निकट रखना चाहिए। हो सके तो अपने आँगन में ही उनके लिए घर बनवा लेना चाहिए अर्थात् हमेशा अपने आस पास ही रखना चाहिए। ताकि हम उनके द्वारा बताई गई हमारी गलतियों को सुधर सकें। इससे हमारा स्वभाव बिना साबुन और पानी की मदद के ही साफ़ हो जायेगा।

काव्यांश

पोथी पढि – पढि जग मुवा , पंडित भया न कोइ।

ऐकै अषिर पीव का , पढै सु पंडित होइ।

प्रसंग -: -: प्रस्तुत दोहा हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श' के कबीर की साखियाँ से ली गई है। यह दोहा कबीर जी द्वारा लिखा गया है। इसमें कबीर जी पुस्तक ज्ञान को महत्त्व न देकर ईश्वर – प्रेम को महत्त्व देते हैं।

व्याख्या -: कबीर जी कहते हैं कि इस संसार में मोटी – मोटी पुस्तकें (किताबें) पढ़ कर कई मनुष्य मर गए परन्तु कोई भी मनुष्य पंडित (ज्ञानी) नहीं बन सका। यदि किसी व्यक्ति ने ईश्वर

प्रेम का एक भी अक्षर पढ़ लिया होता तो वह पंडित बन जाता अर्थात ईश्वर प्रेम ही एक सच है इसे जानने वाला ही वास्तविक ज्ञानी है।

काव्यांश

हम घर जाल्या आपणाँ , लिया मुराडा हाथि।

अब घर जालौं तास का, जे चलै हमारे साथि।।

प्रसंग :- प्रस्तुत दोहा हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श' के कबीर की साखियाँ से ली गई है। यह दोहा कबीर जी द्वारा लिखा गया है। इसमें कबीर मोह – माया रूपी घर को जला कर अर्थात त्याग कर ज्ञान को प्राप्त करने की बात करते हैं।

व्याख्या :- कबीर जी कहते हैं कि उन्होंने अपने हाथों से अपना घर जला दिया है अर्थात उन्होंने मोह -माया रूपी घर को जला कर ज्ञान प्राप्त कर लिया है। अब उनके हाथों में जलती हुई मशाल (लकड़ी) है यानि ज्ञान है। अब वे उसका घर जलाएंगे जो उनके साथ चलना चाहता है अर्थात उसे भी मोह – माया से मुक्त होना होगा जो ज्ञान प्राप्त करना चाहता है।

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये

- मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है ?

उत्तर:- कबीरदास जी के अनुसार जब आप दूसरों के साथ मीठी भाषा का उपयोग करोगे तो उन्हें आपसे कोई शिकायत नहीं रहेगी। वे सुख का अनुभव करेंगे और जब आपका मन शुद्ध और साफ़ होगा परिणामस्वरूप आपका तन भी शीतल रहेगा।

- दीपक दिखाई देने पर अँधियारा कैसे मिट जाता है ? साखी के सन्दर्भ में स्पष्ट किजिए।

उत्तर:- तीसरी साखी में कबीर का दीपक से तात्पर्य ईश्वर दर्शन से है तथा अँधियारा से तात्पर्य अज्ञान से है। ईश्वर को सर्वोच्च ज्ञान कहा गया है अर्थात जब किसी को सर्वोच्च ज्ञान के दर्शन हो जाये तो उसका सारा अज्ञान दूर होना सम्भव है।

- ईश्वर कण – कण में व्याप्त है , पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते ?

उत्तर:- कबीरदास जी दूसरी साखी में स्पष्ट करते हैं कि ईश्वर कण कण में व्याप्त है ,पर हम अपने अज्ञान के कारण उसे नहीं देख पाते क्योंकि हम ईश्वर को अपने मन में खोजने के बजाये मंदिरों और तीर्थों में खोजते हैं।

- संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन ? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतिक हैं ? इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- कबीरदास के अनुसार संसार के वे सभी व्यक्ति जो बिना किसी चिंता के जी रहे हैं वे सुखी हैं तथा जो ईश्वर वियोग में जी रहे हैं वे दुखी हैं। यहाँ 'सोना ' 'अज्ञान ' का और 'जागना ' ईश्वर – प्रेम ' का प्रतिक है। इसका प्रयोग यहाँ इसलिए हुआ है क्योंकि कुछ लोग अपने अज्ञान के कारण बिना चिंता के सो रहे हैं और कुछ लोग ईश्वर को पाने की आशा में सोते हुए भी जग रहे हैं।

- अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है ?

उत्तर:- अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने निंदा करने वाले व्यक्तियों को अपने आस पास रखने का उपाय सुझाया है। उनके अनुसार निंदा करने वाला व्यक्ति जब आपकी गलतियां निकालेगा तो आप उस गलती को सुधार कर अपना स्वभाव निर्मल बना सकते हैं।

- 'ऐकै अषिर पीव का, पढै सु पंडित होइ ' – इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है ?

उत्तर:- 'ऐकै अषिर पीव का , पढै सु पंडित होइ ' – इस पंक्ति में कवि ईश्वर प्रेम को महत्त्व देते हुए कहना चाहता है कि ईश्वर प्रेम का एक अक्षर ही किसी व्यक्ति को पंडित बनाने के लिए काफी है।

- कबीर की उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता प्रकट कीजिए।

उत्तर:- कबीर की साखियों में अनेक भाषाओं का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता यह है कि इसमें भावना की अनुभूति , रहस्यवादिता तथा जीवन का संवेदनशील संस्पर्श तथा सहजता को प्रमुख स्थान दिया गया है।

भाव स्पष्ट कीजिये

- ' बिरह भुवंगम तन बसै , मंत्र न लागै कोइ। '

उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि जब किसी मनुष्य के मन में अपनों से बिछड़ने का गम रूपी साँप जगह बना लेता है तो कोई दवा ,कोई मंत्र काम नहीं आते।

- कस्तूरी कुंडलि बसै ,मृग ढूँढै बन माँहि। '

उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि अज्ञान के कारण कस्तूरी हिरण पूरे वन में कस्तूरी की खुसबू के स्रोत को ढूँढता रहता है जबकि वह तो उसी के पास नाभि में विद्यमान होती है।

- ' जब मैं था तब हरि नहीं ,अब हरि हैं मैं नहीं। '

उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि अहंकार और ईश्वर एक दूसरे के विपरीत हैं जहाँ अहंकार है वहाँ ईश्वर नहीं ,जहाँ ईश्वर है वहाँ अहंकार का वास नहीं होता।

- 'पोथी पढि – पढि जग मुवा , पंडित भया न कोइ। '

उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि किताबी ज्ञान किसी को पंडित नहीं बना सकता , पंडित बनने के लिए ईश्वर – प्रेम का एक अक्षर ही काफी है।

- कबीर जी अपनी साखी के द्वारा भ्रमित लोगों के बारे में क्या कहते हैं ?

उत्तर:- कबीर जी अपनी साखी के द्वारा भ्रमित लोगों के बारे में कहते हैं कि लोगों के मन में यह भ्रम है कि ईश्वर देवालयों और तीर्थों में वास करते हैं जिस कारण लोग ईश्वर को देवालयों और तीर्थों में ढूँढते हैं। परन्तु ईश्वर संसार के कण – कण में विद्यमान है और मनुष्य इस बात से बेखबर ईश्वर को देवालयों और तीर्थों में ढूँढता है। कबीर जी कहते हैं कि अगर ईश्वर को ढूँढना ही है तो अपने मन में ढूँढो।

- कबीर दास जी के भाव सौंदर्य की दो विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:- कबीर दास भारत के सबसे बड़े कवियों में से एक है। उनकी कविता भारत में सबसे प्रसिद्ध कविताएं हैं। कबीर दास के भाव सौंदर्य की कई विशेषताएं थीं।

(क) ईश्वर के समक्ष सबकी समानता – अपने दोहों के द्वारा कबीर दास जी सभी प्राणियों को सीख देना चाहते हैं कि जब ईश्वर किसी के साथ भेदभाव नहीं करते तो उनका भी कोई अधिकार नहीं है कि वह किसी भी प्राणी को निचा दिखाए।

(ख) जाति – प्रथा का विरोध – जाति – प्रथा समाज की एक ऐसी बुराई है जो सदियों से हमारे समाज को खोखला करती आ रही है। कबीर दास जी ने अपने दोहों में जाति प्रथा के विरुद्ध जागरूकता फैलाने की पूर्ण कोशिश की।

- कबीर दास ने साखी के अनुसार साधु से कौन सी बातें पूछने से इंकार किया है ?

उत्तर:- कबीर दास ने साखी के अनुसार साधु से उसकी जाति पूछने से इंकार किया है क्योंकि साधु से उसकी जाति नहीं पूछनी चाहिए बल्कि उनसे ज्ञान की बातें करनी चाहिए , उनसे ज्ञान लेना चाहिए। क्योंकि जब आप तलवार लेने जाते हैं तो मोल तलवार का होता है न की उसकी म्यान का , उसी तरह साधु की जाति का मोल नहीं होता उसके ज्ञान का होता है।

Individual Tuition Concept

पाठ - 2

पद

कवि परिचय

कवि – मीराबाई

जन्म – 1503 (जोधपुर , चोकड़ी गांव)

मृत्यु – 1546

मीरा के पद पाठ सार

इन पदों में मीराबाई श्री कृष्ण का भक्तों के प्रति प्रेम और अपना श्री कृष्ण के प्रति भक्ति – भाव का वर्णन करती है। पहले पद में मीरा श्री कृष्ण से कहती हैं कि जिस प्रकार आपने द्रोपदी , प्रह्लाद और ऐरावत के दुखों को दूर किया था उसी तरह मेरे भी सारे दुखों का नाश कर दो।

दूसरे पद में मीरा श्री कृष्ण के दर्शन का एक भी मौका हाथ से जाने नहीं देना चाहती , वह श्री कृष्ण की दासी बनाने को तैयार है , बाग – बगीचे लगाने को भी तैयार है , गली गली में श्री कृष्ण की लीलाओं का बखान भी करना चाहती है , ऊँचे ऊँचे महल भी बनाना चाहती है , ताकि दर्शन का एक भी मौका न चुके। श्री कृष्ण के मन मोहक रूप का वर्णन भी किया है और मीरा कृष्ण के दर्शन के लिए इतनी व्याकुल है की आधी रात को ही कृष्ण को दर्शन देने के लिए बुला रही है।

लोक कथाओं के अनुसार अपने जीवन में आए कठिन दुखों से मुक्ति पाने के लिए मीरा घर – परिवार छोड़ कर वृन्दावन में जा बसी थी और कृष्ण प्रेम में लीन हो गई थी। इनकी रचनाओं में इनके आराध्य (कृष्ण) कहीं निर्गुण निराकार ब्रह्मा अर्थात् जिसका कोई रूप आकर न हो ऐसे प्रभु , कहीं सगुण साकार गोपीवल्लभ श्रीकृष्ण और कहीं निर्मोही परदेसी जोगी अर्थात् जिसे किसी की परवाह नहीं ऐसे संत के रूप में दिखाई देते हैं।

प्रस्तुत पाठ में संकलित दोंनो पद मीरा के इन्ही आराध्य अर्थात श्रीकृष्ण को समर्पित हैं। मीरा अपने प्रभु की झूठी प्रशंसा भी करती है ,प्यार भी करती हैं और अवसर आने पर डांटने से भी नहीं डरती। श्रीकृष्ण की शक्तियों व सामर्थ्य का गुणगान भी करती हैं और उनको उनके कर्तव्य भी याद दिलाती हैं।

शब्दार्थ

हरि : श्री कृष्ण

जन : भक्त

भीर : दुख- दर्द

लाज : इज्जत

चीर : साड़ी , कपडा

नरहरि : नरसिंह अवतार

सरीर : शरीर

गजराज : हाथियों का राजा ऐरावत

कुञ्जर : हाथी

काटी : मारना

लाल गिरधर : श्री कृष्ण

म्हारी : हमारी

स्याम : श्री कृष्ण

चाकर : नौकर

रहस्यूँ : रह कर

नित	: हमेशा
दरसण	: दर्शन
जागीरी	: जागीर , साम्राज्य
कुंज	: संकरी
पीताम्बर	: पीले वस्त्र
धेनु	: गाय
बारी	: बगीचा
पहर	: पहन कर
तीरा	: किनारा
अधीरा	: व्याकुल होना
मीरा के पद पाठ की व्याख्या	

काव्यांश

Individual Tuition Concept

हरि आप हरो जन री भीरा।

द्रोपदी री लाज राखी , आप बढायो चीर।

भगत कारण रूप नरहरि , धरयो आप सरीर।

बूढतो गजराज राख्यो , काटी कुञ्जर पीर।

दासी मीराँ लाल गिरधर , हरो म्हारी भीर।।

प्रसंग :- प्रस्तुत पाठ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श' से लिया गया है। यह पद मीरा जी द्वारा लिखी गई है। इसमें कवयित्री भगवान श्री कृष्ण के भक्त – प्रेम को दर्शा रही हैं और स्वयं की रक्षा की गुहार लगा रही हैं।

व्याख्या:- इस पद में कवयित्री मीरा भगवान श्री कृष्ण के भक्त – प्रेम का वर्णन करते हुए कहती हैं कि आप अपने भक्तों के सभी प्रकार के दुखों को हरने वाले हैं अर्थात् दुखों का नाश करने वाले हैं। मीरा उदाहरण देते हुए कहती हैं कि जिस तरह आपने द्रोपदी की इज्जत को बचाया और साडी के कपडे को बढ़ाते चले गए ,जिस तरह आपने अपने भक्त प्रह्लाद को बचाने के लिए नरसिंह का शरीर धारण कर लिया और जिस तरह आपने हाथियों के राजा भगवान इंद्र के वाहन ऐरावत हाथी को मगरमच्छ के चंगुल से बचाया था ,हे ! श्री कृष्ण उसी तरह अपनी इस दासी अर्थात् भक्त के भी सारे दुःख हर लो अर्थात् सभी दुखों का नाश कर दो।

काव्यांश

स्याम म्हाने चाकर राखो जी,

गिरधारी लाला म्हॉने चाकर राखोजी।

चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ।

बिन्दरावन री कुंज गली में , गोविन्द लीला गास्यूँ।

चाकरी में दरसन पास्यूँ, सुमरन पास्यूँ खरची।

भाव भगती जागीरी पास्यूँ , तीनूं बातों सरसी।

मोर मुगट पीताम्बर सौहे , गल वैजन्ती माला।

बिन्दरावन में धेनु चरावे , मोहन मुरली वाला।

ऊँचा ऊँचा महल बनावँ बिच बिच राखूँ बारी।

साँवरिया रा दरसण पास्यूँ ,पहर कुसुम्बी साडी।

आधी रात प्रभु दरसण ,दीज्यो जमनाजी रे तीरा।

मीराँ रा प्रभु गिरधर नागर , हिवडो घणो अधीरा।

प्रसंग:- प्रस्तुत पद हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श' से लिया गया है। यह पद मीरा जी द्वारा लिखी गई है। इस पद में कवयित्री मीरा श्री कृष्ण के प्रति अपने प्रेम का वर्णन कर रही है और श्री कृष्ण के दर्शन के लिए वह कितनी व्याकुल है यह दर्शा रही है।

व्याख्या :- इस पद में कवयित्री मीरा श्री कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति भावना को उजागर करते हुए कहती हैं कि हे !श्री कृष्ण मुझे अपना नौकर बना कर रखो अर्थात् मीरा किसी भी तरह श्री कृष्ण के नजदीक रहना चाहती है फिर चाहे नौकर बन कर ही क्यों न रहना पड़े। मीरा कहती हैं कि नौकर बनकर मैं बागीचा लगाऊंगी ताकि सुबह उठ कर रोज आपके दर्शन पा सकूँ। मीरा कहती हैं कि वृन्दावन की संकरी गलियों में मैं अपने स्वामी की लीलाओं का बखान करूँगी। मीरा का मानना है कि नौकर बनकर उन्हें तीन फायदे होंगे पहला – उन्हें हमेशा कृष्ण के दर्शन प्राप्त होंगे , दूसरा- उन्हें अपने प्रिय की याद नहीं सताएगी और तीसरा- उनकी भाव भक्ति का साम्राज्य बढ़ता ही जायेगा।

मीरा श्री कृष्ण के रूप का बखान करते हुए कहती हैं कि उन्होंने पीले वस्त्र धारण किये हुए हैं ,सर पर मोर के पंखों का मुकुट विराजमान है और गले में वैजन्ती फूल की माला को धारण किया हुआ है।

वृन्दावन में गाय चराते हुए जब वह मोहन मुरली बजाता है तो सबका मन मोह लेता है।

मीरा कहती है कि मैं बगीचों के बिच ही ऊँचे ऊँचे महल बनाऊंगी और कुसुम्बी साड़ी पहन कर अपने प्रिय के दर्शन करूँगी अर्थात् श्री कृष्ण के दर्शन के लिए साज श्रृंगार करूँगी। मीरा कहती हैं कि हे !मेरे प्रभु गिरधर स्वामी मेरा मन आपके दर्शन के लिए इतना बेचैन है कि वह सुबह का इन्तजार नहीं कर सकता। मीरा चाहती है की श्री कृष्ण आधी रात को ही जमुना नदी के किनारे उसे दर्शन दे दें।

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

- पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती किस प्रकार की है ?

उत्तर:- पहले पद में मीरा कहती हैं कि जिस प्रकार हे ! प्रभु आप अपने सभी भक्तों के दुखों को हरते हो ,जैसे – द्रोपदी की लाज बचाने के लिए साड़ी का कपड़ा बढ़ाते चले गए ,प्रह्लाद को बचाने के लिए नरसिंह का रूप धारण कर लिया और ऐरावत हाथी को बचाने के लिए

मगरमच्छ को मार दिया उसी प्रकार मेरे भी सारे दुखों को हर लो अर्थात सभी दुखों को समाप्त कर दो।

- दूसरे पद में मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:-दूसरे पद में मीरा श्री कृष्ण की नौकर बनने की विनती इसलिए करती है क्योंकि वह श्री कृष्ण के दर्शन का एक भी मौका खोना नहीं चाहती है। वह कहती है कि मैं बगीचा लगाऊंगी ताकि रोज सुबह उठते ही मुझे श्री कृष्ण के दर्शन हो सकें।

- मीरा ने श्री कृष्ण के रूप सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है ?

उत्तर:- मीरा श्री कृष्ण के रूप सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहती हैं कि उन्होंने सर पर मोर पंख का मुकुट धारण किया हुआ है , पीले वस्त्र पहने हुए हैं और गले में वैजंत फूलों की माला को धारण किया हुआ है। मीरा कहती हैं कि जब श्री कृष्ण वृन्दावन में गाय चराते हुए बांसुरी बजाते हैं तो सब का मन मोह लेते हैं।

- मीरा की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर:- मीरा को हिंदी और गुजराती दोनों की कवयित्री माना जाता है। इनकी कुल सात -आठ कृतियाँ ही उपलब्ध हैं। मीरा की भाषा सरल ,सहज और आम बोलचाल की भाषा है, इसमें राजस्थानी ,ब्रज, गुजराती ,पंजाबी और खड़ी बोली का मिश्रण है।पदों में भक्तिरस है तथा अनुप्रास ,पुनरुक्ति ,रूपक आदि अलंकारों का भी प्रयोग किया गया है।

- वे श्री कृष्ण को पाने के लिया क्या – क्या कार्य करने को तैयार हैं ?

उत्तर:- मीरा श्री कृष्ण को पाने के लिए अनेक कार्य करने के लिए तैयार हैं – वे कृष्ण की सेविका बन कर रहने को तैयार हैं ,वे उनके विचरण अर्थात घूमने के लिए बाग़ बगीचे लगाने के लिए तैयार हैं ,ऊँचे ऊँचे महलों में खिड़कियां बनाना चाहती हैं ताकि श्री कृष्ण के दर्शन कर सके और यहाँ तक की आधी रात को जमुना नदी के किनारे कुसुम्बी रंग की साड़ी पहन कर दर्शन करने के लिए तैयार हैं।

निम्नलिखित पंक्तिओं का काव्य – सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए

- हरि आप हरो जन री भीरा।
द्रोपदी री लाज राखी , आप बढ़ायो चीरा।
भगत कारण रूप नरहरि , धरयो आप सरीरा।

उत्तर:- इन पंक्तिओं में मीरा श्री कृष्ण के भक्ति-भाव को प्रकट कर रही है। इन पंक्तिओं में शांत रस प्रधान है। मीरा कहती है कि हे !श्री कृष्ण आप अपने भक्तों के कष्टों को हरने वाले हो। आपने द्रोपदी की लाज बचाई और साड़ी के कपडे को बढ़ाते चले गए। आपने अपने भक्त प्रह्लाद को बचाने के लिए नरसिंह का रूप भी धारण किया।

- बूढतो गजराज राख्यो, काटी कुञ्जर पीरा।
दासी मीराँ लाल गिरधर , हरो म्हारी भीरा।।

उत्तर:- इन पंक्तिओं में मीरा श्री कृष्ण से उनके दुःख दूर करने की विनती करती हैं। इन पंक्तिओं में तत्सम और तद्भव शब्दों का सुन्दर मिश्रण है। मीरा कहती हैं कि जिस तरह हे !श्री कृष्ण आपने हाथियों के राजा ऐरावत को मगरमच्छ के चंगुल से बचाया था मुझे भी हर दुःख से बचाओ।

- चाकरी में दरसन पास्युँ , सुमरन पास्युँ खरची।
भाव भगती जागीरी पास्युँ , तिन्नू बातों सरसी।।

उत्तर:- इन पंक्तिओं में मीरा श्री कृष्ण के प्रति अपनी भाव भक्ति दर्शा रही है। यहाँ शांत रस प्रधान है। यहाँ मीरा श्री कृष्ण के पास रहने के तीन फायदे बताती है। पहला -उसे हमेशा दर्शन प्राप्त होंगे ,दूसरा -उसे श्री कृष्ण को याद करने की जरूरत नहीं होगी और तीसरा -उसकी भाव भक्ति का साम्राज्य बढ़ता ही जायेगा।

- मीरा के जिस पद में " हिवड़ो " शब्द प्रयुक्त हुआ है , उस पद को लिखिए तथा यह भी स्पष्ट कीजिए कि " हिवड़ो " का अर्थ क्या है।

उत्तर:- आधी रात प्रभु दरसन , दीज्यो जमनाजी रे तीरा।

मीराँ रा प्रभु गिरधर नागर , हिवड़ो घणो अधीरा।

अर्थात् मीरा कहती हैं कि हे ! मेरे प्रभु गिरधर स्वामी मेरा मन आपके दर्शन के लिए इतना बेचैन है कि वह सुबह का इन्तजार नहीं कर सकता। मीरा चाहती है की श्री कृष्ण आधी रात को ही जमुना नदी के किनारे उसे दर्शन दे दें।

इस पद में " हिवड़ो " का अर्थ " हृदय यानि मन " से लिया गया है। "हिवड़ो घणो अधीरा " अर्थात् हृदय या मन बहुत बैचेन हो रहा है।

- लोग मीरा को बावरी कहते थे। स्पष्ट कीजिए क्यों ?

उत्तर:- मीरा कृष्ण – भक्ति में अपनी सुध – बुध खो चुकी थी। उन्हें किसी परंपरा या मर्यादा का भी ध्यान नहीं रहता था। वह कृष्ण प्रेम में पागल होकर उनकी मूर्ति के सम्मुख नाचती रहती है। वह कृष्ण को अपना पति मानती थी। मीरा संतों की संगति में रहती थी। कृष्ण – भक्ति के लिए उन्होंने राज – परिवार छोड़ दिया , लोकनिंदा सही तथा मंदिरों में भजन गाए , नृत्य किया। उसके इन्हीं कार्यों के कारण लोगों ने उसकी भरपूर निंदा की परंतु मीरा तो सब सांसारिकता को त्याग कर कृष्ण की अनन्य भक्ति में रम चुकी थी। मीरा की अनन्य कृष्ण – भक्ति की इसी पराकष्टा को बावलेपन की संज्ञा दी गई है। इसी कारण लोग उन्हें बावरी कहते थे।

- मीरा जी के पदों की कौन सी भाषा है ?

उत्तर:- मीरा जी के पदों में राजस्थानी और बृज भाषा का मिलाजुला प्रयोग मिलता है।

Individual Tuition Concept

- दूसरे पद में मीरा जी श्री कृष्ण से क्या प्रार्थना करती हैं ?

उत्तर:- दूसरे पद में कवयित्री मीरा जी श्री कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति भावना को उजागर करते हुए कहती हैं कि हे ! श्री कृष्ण मुझे अपना नौकर बना कर रखो अर्थात् मीरा किसी भी तरह श्री कृष्ण के नजदीक रहना चाहती है फिर चाहे नौकर बन कर ही क्यों न रहना पड़े। दूसरे पद में मीरा श्री कृष्ण की नौकर बनने की विनती इसलिए करती है क्योंकि वह श्री कृष्ण के दर्शन का एक भी मौका खोना नहीं चाहती है। वह कहती है कि वे बगीचा लगाएँगी ताकि रोज सुबह उठते ही उन्हें श्री कृष्ण के दर्शन हो सकें।

पाठ - 3

मनुष्यता

कवि परिचय

कवि – मैथिलीशरण गुप्त

जन्म – 1886(चिरगाँव)

मृत्यु – 1964

मनुष्यता पाठ का सारांश

इस कविता में कवि मनुष्यता का सही अर्थ समझाने का प्रयास कर रहा है। पहले भाग में कवि कहता है कि मृत्यु से नहीं डरना चाहिए क्योंकि मृत्यु तो निश्चित है पर हमें ऐसा कुछ करना चाहिए कि लोग हमें मृत्यु के बाद भी याद रखें। असली मनुष्य वही है जो दूसरों के लिए जीना व मरना सीख ले। दूसरे भाग में कवि कहता है कि हमें उदार बनना चाहिए क्योंकि उदार मनुष्यों का हर जगह गुण गान होता है। मनुष्य वही कहलाता है जो दूसरों की चिंता करे। तीसरे भाग में कवि कहता है कि पुराणों में उन लोगों के बहुत उदाहरण हैं जिन्हें उनकी त्याग भाव के लिए आज भी याद किया जाता है। सच्चा मनुष्य वही है जो त्याग भाव जान ले। चौथे भाग में कवि कहता है कि मनुष्यों के मन में दया और करुणा का भाव होना चाहिए, मनुष्य वही कहलाता है जो दूसरों के लिए मरता और जीता है। पांचवें भाग में कवि कहना चाहता है कि यहाँ कोई अनाथ नहीं है क्योंकि हम सब उस एक ईश्वर की संतान हैं। हमें भेदभाव से ऊपर उठ कर सोचना चाहिए। छठे भाग में कवि कहना चाहता है कि हमें दयालु बनना चाहिए क्योंकि दयालु और परोपकारी मनुष्यों का देवता भी स्वागत करते हैं। अतः हमें दूसरों का परोपकार व कल्याण करना चाहिए। सातवें भाग में कवि कहता है कि मनुष्यों के बाहरी कर्म अलग अलग हो परन्तु हमारे वेद साक्षी है की सभी की आत्मा एक है ,हम सब एक ही ईश्वर की संतान है अतः सभी मनुष्य भाई -बंधु हैं और मनुष्य वही है जो दुःख में दूसरे मनुष्यों के काम आये। अंतिम भाग में कवि कहना चाहता है कि विपत्ति और विघ्न को हटाते हुए मनुष्य को अपने चुने हुए रास्तों पर चलना चाहिए , आपसी समझ को बनाये रखना चाहिए और भेदभाव को नहीं बढ़ाना चाहिए ऐसी सोच वाला मनुष्य ही अपना और दूसरों का कल्याण और उद्धार कर सकता है।

शब्दार्थ

मर्त्य	: मृत्यु
यों	: ऐसे
वृथा	: बेकार
प्रवृत्ति	: प्रवृत्ति
उदार	: महान ,श्रेष्ठ
बखानती	: गुण गान करना
धरा	: धरती
कृतघ्न	: ऋणी , आभारी
सजीव	: जीवित
कूजती	: करना
अखण्ड	: जिसके टुकड़े न किए जा सकें
असीम	: पूरा
क्षुधार्त	: भूख से परेशान
करस्थ	: हाथ की
परार्थ	: पूरा
अस्थिजाल	: हड्डियों का समूह
उशीनर क्षितीश	: उशीनर देश के राजा शिबि
सहर्ष	: खुशी से

शरीर चर्म	: शरीर का कवच
सहानुभूति	: दया, करुणा
महाविभूति	: सब से बड़ी सम्पत्ति
वशीकृता	: वश में करने वाला
मही	: ईश्वर
विरुद्धवाद	: खिलाफ होना
मदांघ	: घमण्ड
तुच्छ	: बेकार
सनाथ	: जिसके पास अपनों का साथ हो
अनाथ	: जिसका कोई न हो
चित्त	: मन में
त्रिलोकनाथ	: ईश्वर
दीनबंधु	: ईश्वर
अधीर	: उतावलापन
अनंत	: जिसका कोई अंत न हो
अंतरिक्ष	: आकाश
समक्ष	: सामने
परस्परावलंब	: एक दूसरे का सहारा
अमर्त्य -अंक	: देवता की गोद

INTERVAL

Individual Tuition Concept

अपंक	: कलंक रहित
बन्धु	: भाई बंधु
विवेक	: समझ
स्वयंभू	: परमात्मा, स्वयं उत्पन्न होने वाला
अंतरैक्य	: आत्मा की एकत, अंतःकरण की एकता
प्रमाणभूत	: साक्षी
व्यथा	: दुःख, कष्ट
अभीष्ट	: इच्छित
मार्ग	: रास्ता
सहर्ष	: अपनी खुशी से
विपत्ति, विघ्न	: संकट, बाधाएँ
अतर्क	: तर्क से परे
सतर्क	: सावधान

मनुष्यता की पाठ व्याख्या

काव्यांश - 1

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,

मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।

हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,

मारा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।

वही पशु- प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। यह कविता मैथिलीशरण गुप्त जी द्वारा लिखा गया है। इन पंक्तियों में कवि बताना चाहता है कि मनुष्यों को कैसा जीवन जीना चाहिए।

व्याख्या -: कवि कहता है कि हमें यह जान लेना चाहिए कि मृत्यु का होना निश्चित है, हमें मृत्यु से नहीं डरना चाहिए। कवि कहता है कि हमें कुछ ऐसा करना चाहिए कि लोग हमें मरने के बाद भी याद रखे। जो मनुष्य दूसरों के लिए कुछ भी ना कर सकें, उनका जीना और मरना दोनों बेकार है। मर कर भी वह मनुष्य कभी नहीं मरता जो अपने लिए नहीं दूसरों के लिए जीता है, क्योंकि अपने लिए तो जानवर भी जीते हैं। कवि के अनुसार मनुष्य वही है जो दूसरे मनुष्यों के लिए मरे अर्थात् जो मनुष्य दूसरों की चिंता करे वही असली मनुष्य कहलाता है।

काव्यांश - 2

Individual Tuition Concept

उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,

उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।

उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती;

तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।

अखंड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे,

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। यह कविता मैथिलीशरण गुप्त जी द्वारा लिखा गया है। इन पंक्तिओं में कवि बताना चाहता है कि जो मनुष्य दूसरों के लिए जीते हैं उनका गुणगान युगों – युगों तक किया जाता है।

व्याख्या -: कवि कहता है कि जो मनुष्य अपने पूरे जीवन में दूसरों की चिंता करता है उस महान व्यक्ति की कथा का गुण गान सरस्वती अर्थात् पुस्तकों में किया जाता है। पूरी धरती उस महान व्यक्ति की आभारी रहती है। उस व्यक्ति की बातचीत हमेशा जीवित व्यक्ति की तरह की जाती है और पूरी सृष्टि उसकी पूजा करती है। कवि कहता है कि जो व्यक्ति पुरे संसार को अखण्ड भाव और भाईचारे की भावना में बाँधता है वह व्यक्ति सही मायने में मनुष्य कहलाने योग्य होता है।

काव्यांश - 3

क्षुधार्त रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,

तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।

उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया,

सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर-चर्म भी दिया।

अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे?

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। यह कविता मैथिलीशरण गुप्त जी द्वारा लिखा गया है। इन पंक्तिओं में कवि ने महान पुरुषों के उदाहरण दिए हैं जिनकी महानता के कारण उन्हें याद किया जाता है

व्याख्या -: कवि कहता है कि पौराणिक कथाएं ऐसे व्यक्तियों के उदाहरणों से भरी पड़ी हैं जिन्होंने अपना पूरा जीवन दूसरों के लिए त्याग दिया जिस कारण उन्हें आज तक याद किया जाता है। भूख से परेशान रतिदेव ने अपने हाथ की आखरी थाली भी दान कर दी थी और महर्षि दधीचि ने तो अपने पूरे शरीर की हड्डियाँ वज्र बनाने के लिए दान कर दी थी। उशीनर देश के

राजा शिवि ने कबूतर की जान बचाने के लिए अपना पूरा मांस दान कर दिया था। वीर कर्ण ने अपनी खुशी से अपने शरीर का कवच दान कर दिया था। कवि कहना चाहता है कि मनुष्य इस नश्वर शरीर के लिए क्यों डरता है क्योंकि मनुष्य वही कहलाता है जो दूसरों के लिए अपने आप को त्याग देता है।

काव्यांश - 4

सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही;

वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।

विरुद्धभाव बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,

विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा ?

अहा ! वही उदार है परोपकार जो करे,

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग :- प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। यह कविता मैथिलीशरण गुप्त जी द्वारा लिखा गया है। इन पंक्तिओं में कवि ने महात्मा बुद्ध का उदाहरण देते हुए दया , करुणा को सबसे बड़ा धन बताया है।

व्याख्या :- कवि कहता है कि मनुष्यों के मन में दया व करुणा का भाव होना चाहिए , यही सबसे बड़ा धन है। स्वयं ईश्वर भी ऐसे लोगों के साथ रहते हैं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण महात्मा बुद्ध हैं जिनसे लोगों का दुःख नहीं देखा गया तो वे लोक कल्याण के लिए दुनिया के नियमों के विरुद्ध चले गए। इसके लिए क्या पूरा संसार उनके सामने नहीं झुकता अर्थात उनके दया भाव व परोपकार के कारण आज भी उनको याद किया जाता है और उनकी पूजा की जाती है। महान उस को कहा जाता है जो परोपकार करता है वही मनुष्य , मनुष्य कहलाता है जो मनुष्यों के लिए जीता है और मरता है।

काव्यांश - 5

रहो न भूल के कभी मदांघ तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अनाथ कौन है यहाँ ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीन बन्धु के बड़े विशाल हाथ हैं।
अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। यह कविता मैथिलीशरण गुप्त जी द्वारा लिखा गया है। इन पंक्तियों में कवि कहता है कि सम्पत्ति पर कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए और किसी को अनाथ नहीं समझना चाहिए क्योंकि ईश्वर सबके साथ हैं।

व्याख्या -: कवि कहता है कि भूल कर भी कभी संपत्ति या यश पर घमण्ड नहीं करना चाहिए। इस बात पर कभी गर्व नहीं करना चाहिए कि हमारे साथ हमारे अपनों का साथ है क्योंकि कवि कहता है कि यहाँ कौन सा व्यक्ति अनाथ है ,उस ईश्वर का साथ सब के साथ है। वह बहुत दयावान है उसका हाथ सबके ऊपर रहता है। कवि कहता है कि वह व्यक्ति भाग्यहीन है जो इस प्रकार का उतावलापन रखता है क्योंकि मनुष्य वही व्यक्ति कहलाता है जो इन सब चीजों से ऊपर उठ कर सोचता है।

काव्यांश - 6

अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,
समक्ष ही स्वबाहु जो बढा रहे बड़े-बड़े।
परस्परावलंब से उठो तथा बढो सभी,
अभी अमर्त्य-अंक में अपंक हो चढो सभी।

रहो न यां कि एक से न काम और का सरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। यह कविता मैथिलीशरण गुप्त जी द्वारा लिखा गया है। इन पंक्तियों में कवि कहता है कि कलंक रहित रहने व दूसरों का सहारा बनने वाले मनुष्यों का देवता भी स्वागत करते हैं।

व्याख्या -: कवि कहता है कि उस कभी न समाप्त होने वाले आकाश में असंख्य देवता खड़े हैं, जो परोपकारी व दयालु मनुष्यों का सामने से खड़े होकर अपनी भुजाओं को फैलाकर स्वागत करते हैं। इसलिए दूसरों का सहारा बनो और सभी को साथ में लेकर आगे बढ़ो। कवि कहता है कि सभी कलंक रहित हो कर देवताओं की गोद में बैठो अर्थात् यदि कोई बुरा काम नहीं करोगे तो देवता तुम्हे अपनी गोद में ले लेंगे। अपने मतलब के लिए नहीं जीना चाहिए अपना और दूसरों का कल्याण व उद्धार करना चाहिए क्योंकि इस मरणशील संसार में मनुष्य वही है जो मनुष्यों का कल्याण करे व परोपकार करे।

काव्यांश - 7

'मनुष्य मात्रा बन्धु हैं' यही बड़ा विवेक है, Tuition Concept

पुराणपुरुष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है।

फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं,

परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं।

अनर्थ है कि बन्धु ही न बन्धु की व्यथा हरे,

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। यह कविता मैथिलीशरण गुप्त जी द्वारा लिखा गया है। इन पंक्तियों में कवि कहता है कि हम सब एक ईश्वर की संतान हैं। अतः हम सभी मनुष्य एक – दूसरे के भाई – बन्धु हैं।

व्याख्या -: कवि कहता है कि प्रत्येक मनुष्य एक दूसरे के भाई – बन्धु हैं। यह सबसे बड़ी समझ है। पुराणों में जिसे स्वयं उत्पन्न पुरुष मना गया है, वह परमात्मा या ईश्वर हम सभी का पिता है, अर्थात् सभी मनुष्य उस एक ईश्वर की संतान हैं। बाहरी कारणों के फल अनुसार प्रत्येक मनुष्य के कर्म भले ही अलग अलग हों परन्तु हमारे वेद इस बात के साक्षी है कि सभी की आत्मा एक है। कवि कहता है कि यदि भाई ही भाई के दुःख व कष्टों का नाश नहीं करेगा तो उसका जीना व्यर्थ है क्योंकि मनुष्य वही कहलाता है जो बुरे समय में दूसरे मनुष्यों के काम आता है।

काव्यांश - 8

चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,

विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।

घटे न हेलमेल हों, बड़े न भिन्नता कभी,

अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।

तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। यह कविता मैथिलीशरण गुप्त जी द्वारा लिखा गया है। इन पंक्तियों में कवि कहता है कि यदि हम खुशी से, सारे कष्टों को हटते हुए, भेदभाव रहित रहेंगे तभी संभव है की समाज की उन्नति होगी।

व्याख्या -: कवि कहता है कि मनुष्यों को अपनी इच्छा से चुने हुए मार्ग में खुशी खुशी चलना चाहिए, रास्ते में कोई भी संकट या बाधाएं आये, उन्हें हटाते चले जाना चाहिए। मनुष्यों को यह ध्यान रखना चाहिए कि आपसी समझ न बिगड़े और भेद भाव न बड़े। बिना किसी तर्क वितर्क के सभी को एक साथ ले कर आगे बढ़ना चाहिए तभी यह संभव होगा कि मनुष्य दूसरों की उन्नति और कल्याण के साथ अपनी समृद्धि भी कायम करे

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये –

- कवि ने कैसी मृत्यु को समृत्यु कहा है?

उत्तर-: कवि ने ऐसी मृत्यु को समृत्यु कहा है जिसमें मनुष्य अपने से पहले दूसरे की चिंता करता है और परोपकार की राह को चुनता है जिससे उसे मरने के बाद भी याद किया जाता है।

- उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है?

उत्तर-: उदार व्यक्ति परोपकारी होता है, वह अपने से पहले दूसरों की चिंता करता है और लोक कल्याण के लिए अपना जीवन त्याग देता है।

- कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों के उदाहरण दे कर 'मनुष्यता' के लिए क्या उदाहरण दिया है?

उत्तर-: कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों के उदाहरण दे कर 'मनुष्यता' के लिए यह सन्देश दिया है कि परोपकार करने वाला ही असली मनुष्य कहलाने योग्य होता है। मानवता की रक्षा के लिए दधीचि ने अपने शरीर की सारी अस्थियां दान कर दी थी, कर्ण ने अपनी जान की परवाह किये बिना अपना कवच दे दिया था जिस कारण उन्हें आज तक याद किया जाता है। कवि इन उदाहरणों के द्वारा यह समझाना चाहता है कि परोपकार ही सच्ची मनुष्यता है।

- कवि ने किन पंक्तियों में यह व्यक्त किया है कि हमें गर्व – रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए?

उत्तर-: कवि ने निम्नलिखित पंक्तियों में गर्व रहित जीवन व्यतीत करने की बात कही है-:

रहो न भूल के कभी मगांध तुच्छ वित्त में,

सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।

अर्थात् सम्पत्ति के घमंड में कभी नहीं रहना चाहिए और न ही इस बात पर गर्व करना चाहिए कि आपके पास आपके अपनों का साथ है क्योंकि इस दुनिया में कोई भी अनाथ नहीं है सब उस परम पिता परमेश्वर की संतान हैं।

- 'मनुष्य मात्र बन्धु है ' से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- मनुष्य मात्र बन्धु है ' अर्थात् हम सब मनुष्य एक ईश्वर की संतान हैं अतः हम सब भाई – बन्धु हैं। भाई -बन्धु होने के नाते हमें भाईचारे के साथ रहना चाहिए और एक दूसरे का बुरे समय में साथ देना चाहिए।

- कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है ?

उत्तर:- कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा इसलिए दी है ताकि आपसी समझ न बिगड़े और न ही भेदभाव बड़े। सब एक साथ एक होकर चलेंगे तो सारी बाधाएं मिट जाएंगी और सबका कल्याण और समृद्धि होगी।

- व्यक्ति को किस तरह का जीवन व्यतीत करना चाहिए ? इस कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर:- मनुष्य को परोपकार का जीवन जीना चाहिए ,अपने से पहले दूसरों के दुखों की चिंता करनी चाहिए। केवल अपने बारे में तो जानवर भी सोचते हैं, कवि के अनुसार मनुष्य वही कहलाता है जो अपने से पहले दूसरों की चिंता करे।

- 'मनुष्यता 'कविता के द्वारा कवि क्या सन्देश देना चाहता है?

उत्तर:- 'मनुष्यता ' कविता के माध्यम से कवि यह सन्देश देना चाहता है कि परोपकार ही सच्ची मनुष्यता है। परोपकार ही एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से हम युगों तक लोगो के दिल में अपनी जगह बना सकते है और परोपकार के द्वारा ही समाज का कल्याण व समृद्धि संभव है। अतः हमें परोपकारी बनना चाहिए ताकि हम सही मायने में मनुष्य कहलाये।

- 'मनुष्यता' कविता में कवि ने क्यों कहा है कि हमें मृत्यु से नहीं डरना चाहिए?

उत्तर:- 'मनुष्यता' कविता में कवि ने कहा है कि मृत्यु से नहीं डरना चाहिए क्योंकि मृत्यु तो निश्चित है इसे कोई भी टाल नहीं सकता। जिसने इस धरती पर जन्म लिया है उसे एक न एक दिन मरना ही है।

- कैसे मनुष्यों का जीना और मरना दोनों बेकार है और क्यों?

उत्तर-: जो मनुष्य दूसरों के लिए कुछ भी ना कर सकें, उनका जीना और मरना दोनों बेकार है। वह मनुष्य मर कर भी कभी नहीं मरता जो अपने लिए नहीं दूसरों के लिए जीता है, क्योंकि अपने लिए तो जानवर भी जीते हैं। कवि के अनुसार मनुष्य वही है जो दूसरे मनुष्यों के लिए मरे अर्थात जो मनुष्य दूसरों की चिंता करे वही असली मनुष्य कहलाता है।

- 'मनुष्यता' कविता के आधार पर असली या सच्चा मनुष्य कौन है?

उत्तर-: 'मनुष्यता' कविता के आधार पर असली मनुष्य वही है जो दूसरों के लिए जीना व मरना सीख ले। मनुष्य वही कहलाता है जो दूसरों की चिंता करे। सच्चा मनुष्य वही है जो त्याग का भाव जान ले। अतः हमें दूसरों का परोपकार व कल्याण करना चाहिए। सभी मनुष्य भाई – बंधु हैं और मनुष्य वही है जो दुःख में दूसरे मनुष्यों के काम आये।

जो मनुष्य आपसी समझ को बनाये रखता है और भेदभाव को बढ़ावा नहीं देता, ऐसी सोच वाला मनुष्य ही अपना और दूसरों का कल्याण और उद्धार कर सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि जो अपने स्वार्थ के लिए नहीं बल्कि सभी के कल्याण के लिए सोचता है वही मनुष्य सच्चा मनुष्य कहलाता है।

- मनुष्य को उदार क्यों बनना चाहिए?

उत्तर-: मनुष्य को सदा उदार बनना चाहिए क्योंकि उदार मनुष्यों का हर जगह गुण गान होता है। उदार व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है। पूरी धरती उस महान व्यक्ति की आभारी रहती है। उस व्यक्ति की बातचीत उसके मरने के बाद भी हमेशा जीवित व्यक्ति की तरह की जाती है और पूरी सृष्टि उसकी पूजा करती है।

- पुराणों में किन लोगों के उदाहरण हैं?

उत्तर-: पुराणों में उन लोगों के बहुत उदाहरण हैं। जिन्होंने अपना पूरा जीवन दूसरों के लिए त्याग दिया जिस कारण उन्हें आज तक याद किया जाता है। भूख से परेशान रतिदेव ने अपने हाथ की आखरी थाली भी दान कर दी थी और महर्षि दधीचि ने तो अपने पूरे शरीर की हड्डियाँ वज्र बनाने के लिए दान कर दी थी। उशीनर देश के राजा शिबि ने कबूतर की जान बचाने के लिए अपना पूरा मांस दान कर दिया था। वीर कर्ण ने अपनी खुशी से अपने शरीर का कवच दान कर दिया था।

- मनुष्यों के मन में कैसे भाव होने चाहिए?

उत्तर-: मनुष्यों के मन में दया व करुणा का भाव होना चाहिए ,यही सबसे बड़ा धन है। स्वयं ईश्वर भी ऐसे लोगों के साथ रहते हैं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण महात्मा बुद्ध हैं जिनसे लोगों का दुःख नहीं देखा गया तो वे लोक कल्याण के लिए दुनिया के नियमों के विरुद्ध चले गए। इसके लिए क्या पूरा संसार उनके सामने नहीं झुकता अर्थात उनके दया भाव व परोपकार के कारण आज भी उनको याद किया जाता है और उनकी पूजा की जाती है।

- कवि के अनुसार कभी संपत्ति या यश पर घमंड क्यों नहीं करना चाहिए?

उत्तर-: कवि के अनुसार भूल कर भी कभी संपत्ति या यश पर घमंड नहीं करना चाहिए। इस बात पर कभी गर्व नहीं करना चाहिए कि हमारे साथ हमारे अपनों का साथ है क्योंकि कवि कहता है कि इस धरती और कोई भी व्यक्ति अनाथ नहीं है ,उस ईश्वर का साथ सब के साथ है। वह बहुत दयावान है और उसका हाथ सबके ऊपर रहता है।

कवि के अनुसार वह व्यक्ति भाग्यहीन है जो इस प्रकार का उतावलापन रखता है क्योंकि मनुष्य वही व्यक्ति कहलाता है जो इन सब चीजों से ऊपर उठ कर सोचता है। क्योंकि हम सब उस एक ईश्वर की संतान हैं। हमें भेदभाव से ऊपर उठ कर सोचना चाहिए।

- 'मनुष्यता' कविता के आधार पर समझाइए कि देवता कैसे मनुष्यों का स्वागत करते हैं?

उत्तर-: 'मनुष्यता' कविता के आधार पर उस कभी न समाप्त होने वाले आकाश में असंख्य देवता खड़े हैं, जो परोपकारी व दयालु मनुष्यों का सामने से खड़े होकर अपनी भुजाओं को फैलाकर स्वागत करते हैं। इसलिए कविता में बताया गया है कि दूसरों का सहारा बनो और सभी को साथ में लेकर आगे बढ़ो।

कवि कहता है कि सभी कलंक रहित हो कर देवताओं की गोद में बैठो अर्थात यदि कोई बुरा काम नहीं करोगे तो देवता तुम्हें अपनी गोद में ले लेंगे। अपने मतलब के लिए नहीं जीना चाहिए अपना और दूसरों का कल्याण व उद्धार करना चाहिए क्योंकि इस मरणशील संसार में मनुष्य वही है जो मनुष्यों का कल्याण करे व परोपकार करे।

- सुमृत्यु किसे कहते हैं?

उत्तर-: मानव जीवन तभी सार्थक होता है जब वह दूसरों के काम आये और ऐसे इंसान की मृत्यु को भी सुमृत्यु माना जाता है जो मानवता की राह में परोपकार करते हुए आती है। ऐसे मनुष्य को भी लोग उसकी मृत्यु के पश्चात श्रद्धा से याद करते हैं।

- इस कविता में महापुरुषों जैसे कर्ण, दधीचि, सीबी ने मनुष्यता को क्या सन्देश दिया है?

उत्तर:- दधीचि, कर्ण, सीबी आदि महान व्यक्तियों ने 'मनुष्यता' के लिए यह सन्देश दिया है कि परोपकार करने वाला ही असली मनुष्य कहलाने योग्य होता है। मानवता की रक्षा के लिए दधीचि ने अपने शरीर की सारी अस्थियां दान कर दी थी, कर्ण ने अपनी जान की परवाह किये बिना अपना कवच दे दिया था जिस कारण उन्हें आज तक याद किया जाता है। कवि इन उदाहरणों के द्वारा यह समझाना चाहता है कि परोपकार ही सच्ची मनुष्यता है।

- यह कविता व्यक्ति को किस प्रकार जीवन जीने की प्रेरणा देता है?

उत्तर:- हमें दूसरों के लिए कुछ ऐसे काम करने चाहिए कि मरने के बाद भी लोग हमें याद रखें। इंसान को आपसी भाईचारे से काम करना चाहिए। मानव जीवन तभी सार्थक होता है जब वह दूसरों के काम आए।

- इस कविता का क्या सन्देश है?

उत्तर:- इस कविता के माध्यम से कवि हमें मानवता, सद्भावना, भाईचारा, उदारता, करुणा और एकता का सन्देश देते हैं। कवि कहना चाहते हैं कि हर मनुष्य पूरे संसार में अपनेपन की अनुभूति करें। वह जरूरतमंदों के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने में भी पीछे न हटे। उनके लिए करुणा का भाव जगाये। वह अभिमान, अधीरता और लालच का त्याग करें। एक दूसरे का साथ देकर देवत्व को प्राप्त करें।

वह सुख का जीवन जिए और मेलजोल बढ़ाने का प्रयास करें। कवि ने प्रेरणा लेने के लिए रतिदेव, दधीचि, सीबी, कर्ण और कई महानुभावों के उदाहरण दे कर उनके अतुल्य त्याग के बारे में बताया है। और हमें भी त्याग और परोपकार के लिए प्रेरित किया है।

- “हमें गर्वरहित जीवन जीना चाहिए” मनुष्यता कविता के आधार पर कवि द्वारा दिए गए तर्कों से स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- मनुष्यता कविता में कवि ने गर्वरहित जीवन जीने की बात कही है और इसके लिए कवि ने कई तर्क दिए हैं। कवि के अनुसार पहला तर्क अत्यधिक धनवान होने पर भी मनुष्य को कभी घमंड नहीं करना चाहिए। दूसरा तर्क यह दिया है कि मनुष्य को कभी अपने सनाथ होने पर गर्व नहीं करना चाहिए। क्योंकि इस धरती पर कोई भी अनाथ और दरिद्र नहीं है। वह ईश्वर सम्पूर्ण

सृष्टि के नाथ तथा संरक्षक हैं। वे अपने अपार साधनों से सबकी रक्षा और पालन करने में समर्थ हैं।

- दधीचि, रतिदेव और राजा शिबि द्वारा किए गए मानव कल्याण कार्यों का उल्लेख कीजिए?

उत्तर-: पौराणिक कथाएं ऐसे व्यक्तियों के उदाहरणों से भरी पड़ी हैं जिन्होंने अपना पूरा जीवन दूसरों के सुख और मानव कल्याण लिए त्याग दिया , जिस कारण उन्हें आज तक याद किया जाता है। स्वयं भूख से परेशान ही होने पर भी रतिदेव ने अपने हाथ की आखरी थाली भी भूखे भिक्षुक को दान कर दी थी और महर्षि दधीचि ने तो अपने पूरे शरीर की हड्डियाँ देवताओं को वज्र बनाने के लिए दान कर दी थी , ताकि वे असुरों पर विजय प्राप्त कर सकें। इसी प्रकार उशीनर देश के राजा शिबि ने भी कबूतर की जान बचाने के लिए अपना पूरा मांस चील को दान कर दिया था , ताकि उसकी भूख शांत हो सके और वह कबूतर को न मारे।

- मनुष्यता कविता के आधार पर मानव जाति के लिए सबसे बड़ा अनर्थ क्या है और क्यों?

उत्तर-: 'मनुष्यता' कविता के अनुसार मानव जाति के लिए सबसे बड़ा अनर्थ एक भाई का दूसरे भाई को कष्ट में देखते हुए भी उसकी मदद न करना है। क्योंकि सभी मनुष्य आपस में भाई – भाई हैं। इस सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि सबको जन्म देने वाला ईश्वर एक है। पुराणों में भी इस बात के प्रमाण हैं कि सृष्टि का रचनाकार वही एक है। इतना जानने के बाद भी कोई मनुष्य दूसरे मनुष्य की अर्थात् अपने भाई की मदद न करे और उसकी दुःख – वेदना को दूर न करे तो वह सबसे बड़ा अनर्थ है। ऐसा करके मनुष्य अपनी मनुष्यता को कलंकित करता है।

- कवि द्वारा कविता में राजा रतिदेव, उशीनर राजा शिबि आदि महानुभावों के उल्लेख से क्या तात्पर्य है और इनके द्वारा किए गए कार्यों से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर-: कवि ने हमें प्रेरणा देने के लिए रतिदेव, उशीनर राजा शिबि , कर्ण और कई महानुभावों के उदाहरण दे कर उनके अतुल्य त्याग के बारे में बताया है। इस कविता के माध्यम से कवि हमें मानवता , सद्भावना , भाईचारा , उदारता , करुणा और एकता का सन्देश दे रहे हैं। इस कविता से हमें प्रेरणा मिलती है कि हर मनुष्य को पूरे संसार में अपनेपन की अनुभूति करनी चाहिए। हमें जरूरतमंदों के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने में भी पीछे नहीं हटना चाहिए। हमें अभिमान , अधीरता और लालच का त्याग करना चाहिए। हमें सुख का जीवन जीना चाहिए और मेलजोल बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए।

- मनुष्यता कविता में कवि ने अभिष्ट मार्ग किसे कहा है और क्यों?

उत्तर:- मनुष्यता कविता में कवि ने अभिष्ट मार्ग एक दूसरे की बाधाओं को दूर करके आगे बढ़ने को कहा है। मनुष्यों को अपनी इच्छा से चुने हुए मार्ग में खुशी खुशी चलना चाहिए, रास्ते में कोई भी संकट या बाधाएं आये, उन्हें हटाते चले जाना चाहिए। मनुष्यों को यह ध्यान रखना चाहिए कि आपसी समझ न बिगड़े और भेद भाव न बढ़े। बिना किसी तर्क – वितर्क के सभी को एक साथ ले कर आगे बढ़ना चाहिए तभी यह संभव होगा कि मनुष्य दूसरों की उन्नति और कल्याण के साथ अपनी समृद्धि भी कायम करे क्योंकि मनुष्य वही कहलाता है जो अपने से पहले दूसरों के कष्टों की चिंता करता है।

- मनुष्यता कविता में दी गई सिख को आप आधुनिक समय में कितना महत्वपूर्ण मानते हैं?

उत्तर:- मनुष्यता कविता हमें सच्चा मनुष्य बनने की राह दिखाती है। मनुष्य को इस कविता द्वारा सभी मनुष्यों के अपना भाई मानने, उनकी भलाई करने और एकता बनाकर रखने की सीख दी गई है। कविता के अनुसार सच्चा मनुष्य वही है जो सभी को अपना समझते हुए दूसरों की भलाई के लिए ही जीता और मरता है। वह दूसरों के साथ उदारता से रहता है और मानवीय एकता को दृढ़ करने के लिए प्रयासरत रहता है। वह खुद उन्नति के पथ पर चलकर दूसरों को भी आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। आधुनिक समय में इस कविता की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है क्योंकि आज दुनिया में स्वार्थवृत्ति, अहंकार, लोभ, ईर्ष्या, छल-कपट आदि बढ़ रहा है जिससे मनुष्य – मनुष्य में दूरी बढ़ रही है।

निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिये-

- सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही;
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।
विरुद्धभाव बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा ?

उत्तर:- कवि इन पंक्तियों में कहना चाहता है कि मनुष्यों के मन में दया व करुणा का भाव होना चाहिए, यही सबसे बड़ा धन है। स्वयं ईश्वर भी ऐसे लोगों के साथ रहते हैं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण महात्मा बुद्ध हैं जिनसे लोगों का दुःख नहीं देखा गया तो वे लोक कल्याण के लिए दुनिया के नियमों के विरुद्ध चले गए। इसके लिए क्या पूरा संसार उनके सामने नहीं झुकता

अर्थात् उनके दया भाव व परोपकार के कारण आज भी उनको याद किया जाता है और उनकी पूजा की जाती है।

- *रहो न भूल के कभी मदांघ तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अनाथ कौन है यहाँ ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीन बन्धु के बड़े विशाल हाथ हैं।*

उत्तर:- कवि इन पंक्तियों में कवि कहना चाहता है कि भूल कर भी कभी संपत्ति या यश पर घमंड नहीं करना चाहिए। इस बात पर कभी गर्व नहीं करना चाहिए कि हमारे साथ हमारे अपनों का साथ है क्योंकि कवि कहता है कि यहाँ कौन सा व्यक्ति अनाथ है ,उस ईश्वर का साथ सब के साथ है। वह बहुत दयावान है उसका हाथ सबके ऊपर रहता है।

- *चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हाँ, बढे न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।*

उत्तर:- कवि इन पंक्तियों में कहना चाहता है कि मनुष्यों को अपनी इच्छा से चुने हुए मार्ग में खुशी खुशी चलना चाहिए, रास्ते में कोई भी संकट या बाधाएं आये उन्हें हटाते चले जाना चाहिए। मनुष्यों को यह ध्यान रखना चाहिए कि आपसी समझ न बिगड़े और भेद भाव न बड़े। बिना किसी तर्क वितर्क के सभी को एक साथ ले कर आगे बढ़ना चाहिए तभी यह संभव होगा कि मनुष्य दूसरों की उन्नति और कल्याण के साथ अपनी समृद्धि भी कायम करे।

पाठ - 4

पर्वत प्रदेश में पावस

कवि परिचय

कवि - सुमित्रानंदन पंत

जन्म - 20 मई 1900 (उत्तराखंड – कौसानी अलमोड़ा)

मृत्यु - 28 दिसम्बर 1977

पर्वत प्रदेश में पावस पाठ का सारांश

कवि ने इस कविता में प्रकृति का ऐसा वर्णन किया है कि लग रहा है कि प्रकृति सजीव हो उठी है। कवि कहता है कि वर्षा ऋतु में प्रकृति का रूप हर पल बदल रहा है कभी वर्षा होती है तो कभी धूप निकल आती है। पर्वतों पर उगे हजारों फूल ऐसे लग रहे हैं जैसे पर्वतों की आँखें हो और वो इन आँखों के सहारे अपने आपको अपने चरणों ने फैले दर्पण रूपी तालाब में देख रहे हों। पर्वतों से गिरते हुए झरने कल कल की मधुर आवाज कर रहे हैं जो नस नस को प्रसन्नता से भर रहे हैं। पर्वतों पर उगे हुए पेड़ शांत आकाश को ऐसे देख रहे हैं जैसे वो उसे छूना चाह रहे हों। बारिश के बाद मौसम ऐसा हो गया है कि घनी धुंध के कारण लग रहा है मानो पेड़ कहीं उड़ गए हों अर्थात् गायब हो गए हों, चारों ओर धुँआ होने के कारण लग रहा है कि तालाब में आग लग गई है। ऐसा लग रहा है कि ऐसे मौसम में इंद्र भी अपना बादल रूपी विमान ले कर इधर उधर जादू का खेल दिखता हुआ घूम रहा है।

भला ऐसा भी कोई इंसान हो सकता है जो पहाड़ों पर ना जाना चाहता हो। जिन लोगों को दूर हिमालय पर जाने का मौका नहीं मिल पाता वो लोग अपने आसपास के पहाड़ी इलाकों में जाने का कोई मौका नहीं छोड़ते। जब आप पहाड़ों को याद कर रहे हों और ऐसे में किसी कवि की कविता अगर कक्षा में बैठे बैठे ही आपको ऐसा एहसास करवा दे की आप अभी अभी पहाड़ों से घूम कर आ रहे हों तो बात ही अलग होती है।

प्रस्तुत कविता भी इसी तरह के रोमांच और प्रकृति के सुन्दर वर्णन से भरी है जिससे आपकी आँखों और मन दोनों को आनंद आएगा। यही नहीं सुमित्रानंदन पंत की बहुत सारी कविताओं

को पढ़ते हुए ऐसा लगता है जैसे आपके चारों ओर की दीवारे कहीं गायब हो गई हों और आप किसी सुन्दर पर्वतीय जगह पर पहुँच गए हों। जहाँ दूर दूर तक पहाड़ ही पहाड़ हों और झरने बह रहे हों और आप बस वहीं रहना चाह रहे हों।

महाप्राण निराला जी ने भी पंत जी के बारे में कहा था कि उनकी सबसे बड़ी प्रतिभा यह है कि वे अपनी कृतियों को अधिक से अधिक सुन्दर बना देते हैं जिसे पढ़ कर या सुन कर बहुत आनंद आता है।

शब्दार्थ

पावस ऋतु : वर्षा ऋतु

परिवर्तित : बदलना

प्रकृति -वेश : प्रकृति का रूप

मेखलाकार : करघनी के आकर की पहाड़ की ढाल

सहस्र : हज़ार

दृग -सुमन : पुष्प रूपी आँखे

अवलोक : देखना

महाकार : विशाल आकार

ताल : तालाब

दर्पण : आईना

गिरि : पहाड़

मद : मस्ती

झग : फेन

उर : हृदय

उच्चाकाक्षा	: उँच्चा उठने की कामना
तरुवर	: पेड़
नीरव नभ शांत	: शांत आकाश
अनिमेष	: एक टक
भूधर	: पहाड़
रव -शेष	: केवल आवाज का रह जाना
सभय	: भय के साथ
शाल	: एक वृक्ष का नाम
जलद -यान	: बादल रूपी विमान
विचर	: घूमना
इंद्रजाल	: जादूगरी

Individual Tuition Concept

पाठ की व्याख्या

काव्यांश- 1

पावस ऋतु थी , पर्वत प्रवेश ,

पल पल परिवर्तित प्रकृति -वेश।

प्रसंग -: प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श – भाग 2' से लिया गया है। यह कविता 'सुमित्रानंदन पंत जी द्वारा लिखा गया है। इसमें कवि ने वर्षा ऋतु का सुंदर वर्णन किया है।

व्याख्या -: कवि कहता है कि पर्वतीय क्षेत्र में वर्षा ऋतु का प्रवेश हो गया है। जिसकी वजह से प्रकृति के रूप में बार बार बदलाव आ रहा है अर्थात कभी बारिश होती है तो कभी धूप निकल आती है।

काव्यांश - 2

मेखलाकार पर्वत अपार

अपने सहस्र दृग- सुमन फाड़,

अवलोक रहा है बार बार ,

नीचे जल ने निज महाकार ,

-जिसके चरणों में पला ताल

दर्पण सा फैला है विशाल !

प्रसंग -: प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श – भाग 2' से लिया गया है। यह कविता 'सुमित्रानंदन पंत जी द्वारा लिखा गया है। इसमें कवि ने पर्वतों का सजीव चित्रण किया है।

व्याख्या -: इस पद्यांश में कवि ने पहाड़ों के आकार की तुलना करघनी अर्थात कमर में बांधने वाले आभूषण से की है। कवि कहता है कि करघनी के आकर वाले पहाड़ अपनी हजार पुष्प रूपी आंखें फाड़ कर नीचे जल में अपने विशाल आकार को देख रहे हैं। ऐसा लग रहा है कि पहाड़ ने जिस तालाब को अपने चरणों में पाला है वह तालाब पहाड़ के लिए विशाल आइने का काम कर रहा है।

काव्यांश -3

गिरि का गौरव गाकर झर- झर

मद में नस -नस उत्तेजित कर

मोती की लड़ियों- से सुन्दर

झरते हैं झाग भरे निर्झर !

गिरिवर के उर से उठ-उठ कर

उच्चाकांक्षाओं से तरुवर

है झाँक रहे नीरव नभ पर

अनिमेष, अटल कुछ चिंतापर।

प्रसंग -: प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श - भाग 2' से लिया गया है। यह कविता 'सुमित्रानंदन पंत जी द्वारा लिखा गया है। इसमें कवि ने झरनों की सुंदरता का वर्णन किया है।

व्याख्या -: इस पद्यांश में कवि कहता है कि मोतियों की लड़ियों के समान सुंदर झरने झर झर की आवाज करते हुए बह रहे हैं, ऐसा लग रहा है की वे पहाड़ों का गुणगान कर रहे हों। उनकी करतल ध्वनि नस नस में उत्साह अथवा प्रसन्नता भर देती है।

पहाड़ों के हृदय से उठ-उठ कर अनेकों पेड़ ऊँचा उठने की इच्छा लिए एक टक दृष्टि से स्थिर हो कर शांत आकाश को इस तरह देख रहे हैं, मनो वो किसी चिंता में डूबे हुए हों। अर्थात् वे हमें निरन्तर ऊँचा उठने की प्रेरणा दे रहे हैं।

काव्यांश - 4

Individual Tuition Concept

उड़ गया, अचानक लो, भूधर

फड़का अपार पारद * के पर!

रव -शेष रह गए हैं निर्जर!

है टूट पड़ा भू पर अम्बर!

धँस गए धारा में सभय शाल!

उठ रहा धुआँ, जल गया ताल!

यों जलद -यान में विचर -विचर

था इंद्र खेलता इंद्रजाल।

प्रसंग :- प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श – भाग 2' से लिया गया है। यह कविता 'सुमित्रानंदन पंत जी द्वारा लिखा गया है। इसमें कवि ने बारिश के कारण प्रकृति का बिल्कुल बदला हुआ रूप दर्शाया है।

व्याख्या :- इस पद्यांश में कवि कहता है कि तेज बारिश के बाद मौसम ऐसा हो गया है कि घनी धुंध के कारण लग रहा है मानो पेड़ कहीं उड़ गए हों अर्थात् गायब हो गए हों। ऐसा लग रहा है कि पूरा आकाश ही धरती पर आ गया हो केवल झरने की आवाज़ ही सुनाई दे रही है। प्रकृति का ऐसा भयानक रूप देख कर शाल के पेड़ डर कर धरती के अंदर धंस गए हैं। चारों ओर धुँआ होने के कारण लग रहा है कि तालाब में आग लग गई है। ऐसा लग रहा है कि ऐसे मौसम में इंद्र भी अपना बादल रूपी विमान ले कर इधर उधर जादू का खेल दिखता हुआ घूम रहा है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

- पावस ऋतु में प्रकृति में कौन-कौन से परिवर्तन आते हैं? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- वर्षा ऋतु में मौसम हर पल बदलता रहता है। कभी तेज बारिश आती है तो कभी मौसम साफ हो जाता है। पर्वत अपनी पुष्प रूपी आँखों से अपने चरणों में स्थित तालाब में अपने आप को देखता हुआ प्रतीत होता है। बादलों के धरती पर आ जाने के कारण ऐसा लग रहा है कि जैसे आसमान धरती पर आ गया हो और कोहरा धुएं की तरह लग रहा है जिसके कारण लग रहा है कि तालाब में आग लग गई हो।

- 'मेखलाकार' शब्द का क्या अर्थ है? कवि ने इस शब्द का प्रयोग यहाँ क्यों किया है?

उत्तर:- 'मेखलाकार' शब्द का अर्थ है – करघनी अर्थात् कमर का आभूषण। कवि ने यहाँ इस शब्द का प्रयोग इसलिए किया है क्योंकि वर्षा ऋतु में पर्वतों की श्रृंखला करघनी की तरह टेडी मेडी लग रही है। अतः कवि ने पर्वतों की श्रृंखला की तुलना करघनी से की है।

- 'सहस्र दृग – सुमन' से क्या तात्पर्य है? कवि ने इस पद का प्रयोग किसके लिए किया होगा ?

उत्तर:- 'सहस्र दृग – सुमन' से कवि का तात्पर्य पहाड़ों पर खिले हजारों फूलों से है। कवि को ये फूल पहाड़ ही आँखों के समान लग रहे हैं अतः कवि ने इस पद का प्रयोग किया है।

- कवि ने तालाब की समानता किसके साथ दिखाई है और क्यों ?

उत्तर:- कवि ने तालाब की समानता आईने के साथ दिखाई है क्योंकि तालाब पर्वत के लिए आईने का काम कर रहा है वह स्वच्छ और निर्मल दिखाई दे रहा है।

- पर्वत के हृदय से उठ कर ऊँचे ऊँचे वृक्ष आकाश की ओर क्यों देख रहे थे और वे किस बात को प्रतिबिंबित करते हैं ?

उत्तर:- पर्वत पर उगे ऊँचे ऊँचे वृक्ष चिंता में डूबे हुए लग रहे हैं जैसे वे शांत आकाश को छूना चाहते हों। ये वृक्ष मनुष्यों की सदा ऊपर उठने और आगे बढ़ने की ओर संकेत कर रहे हैं।

- शाल के वृक्ष भयभीत हो कर धरती में क्यों धस गए हैं ?

उत्तर:- घनी धुंध के कारण लग रहा है मानो पेड़ कहीं उड़ गए हों अर्थात् गायब हो गए हों। ऐसा लग रहा है कि पूरा आकाश ही धरती पर आ गया हो केवल झरने की आवाज़ ही सुनाई दे रही है। प्रकृति का ऐसा भयानक रूप देख कर शाल के पेड़ डर कर धरती के अंदर धंस गए हैं।

- झरने किसके गौरव का गान कर रहे हैं ? बहते हुए झरने की तुलना किस से की गई है ?

उत्तर:- झरने पर्वतों के गौरव का गान कर रहे हैं और बहते हुए झरनों की तुलना चमकदार मोतियों से की गई है।

- इस कविता में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किस प्रकार किया गया है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- इस कविता में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग जगह जगह किया गया है जिसके कारण प्राकृति सजीव प्रतीत हो रही है। जैसे – पहाड़ अपनी हजार पुष्प रूपी आंखें फाड़ कर नीचे जल में अपने विशाल आकार को देख रहे हैं। और पहाड़ों के हृदय से उठ-उठ कर अनेकों पेड़ ऊँचा उठने की इच्छा लिए एक टक दृष्टि से स्थिर हो कर शांत आकाश को इस तरह देख रहे हैं मनो वो किसी चिंता में डूबे हुए हों।

- आपकी दृष्टि में इस कविता का सौन्दर्य इसमें से किस पर निर्भर करता है ?

(क) अनेक शब्दों की आवृत्ति पर

(ख) शब्दों की चित्रमयी भाषा पर

(ग) कविता की संगीतात्मकता पर

उत्तर-: (ख) शब्दों की चित्रमयी भाषा पर

क्योंकि इस कविता में चित्रात्मक शैली का प्रयोग करते हुए प्रकृति का सुंदर और सजीव वर्णन किया गया है।

- कवि ने “पर्वत प्रदेश में पावस” कविता में पहाड़ और तालाब की तुलना किससे की है?

उत्तर-: कवि ने “पर्वत प्रदेश में पावस” कविता में पहाड़ों के आकार की तुलना करघनी अर्थात् कमर में बांधने वाले आभूषण से की है। कवि कहता है कि करघनी के आकर वाले पहाड़ अपनी हजार पुष्प रूपी आंखें फाड़ कर नीचे जल में अपने विशाल आकार को देख रहे हैं। ऐसा लग रहा है कि पहाड़ ने जिस तालाब को अपने चरणों में पाला है वह तालाब पहाड़ के लिए विशाल आईने का काम कर रहा है।

- कवि ने “पर्वत प्रदेश में पावस” कविता में झरनों का वर्णन किस प्रकार किया है?

उत्तर-: “पर्वत प्रदेश में पावस” कविता में झरनों का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि मोतियों की लड़ियों के समान सुंदर झरने झर झर की आवाज करते हुए बह रहे हैं, ऐसा लग रहा है की वे पहाड़ों का गुणगान कर रहे हों। उनकी करतल ध्वनि नस नस में उत्साह अथवा प्रसन्नता भर देती है।

- “पर्वत प्रदेश में पावस” कविता में पेड़ हमें क्या प्रेरणा दे रहे हैं?

उत्तर-: “पर्वत प्रदेश में पावस” कविता में पहाड़ों के हृदय से उठ-उठ कर अनेकों पेड़ ऊँचा उठने की इच्छा लिए एक टक दृष्टि से स्थिर हो कर शांत आकाश को इस तरह देख रहे हैं, मनो वो किसी चिंता में डूबे हुए हों। अर्थात् वे हमें निरन्तर ऊँचा उठने की प्रेरणा दे रहे हैं।

- कवि ने तालाब की समानता किसके साथ दिखाई है और क्यों?

उत्तर-: तालाब में या किसी भी अन्य जल युक्त चीज में आस पास की चीजों का प्रतिबिंब दिखाई देता है, जैसे किसी दर्पण में दिखाई पड़ता है, इसलिए कवि ने तालाब की तुलना किसी विशाल दर्पण से की है क्योंकि तालाब में भी विशाल पर्वत का प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ रहा है।

- 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में पहाड़ को कौन-सा मानवीय कार्य करते हुए दर्शाया गया है?

उत्तर-: 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में पहाड़ अत्यंत ऊँचा और विशालकाय है। पहाड़ पर हज़ारों फूल खिले हुए हैं। करघनी के आकर वाला पहाड़ अपनी हजार पुष्प रूपी आंखें फाड़ कर नीचे जल से भरे तालाब में अपने विशाल आकार को देख रहा है। उसका यह कार्य किसी मनुष्य के कार्य के समान है।

- पर्वत से गिरने वाले झरनों की विशेषता लिखिए।

उत्तर-: पर्वतीय प्रदेश में वर्षा ऋतु में पर्वत के सीने पर झर-झर करते हुए झरने गिर रहे हैं। इन झरनों की ध्वनि सुनकर ऐसा लगता है, जैसे ये पर्वतों का गौरवगान कर रहे हों। इनकी करतल ध्वनि नस नस में उत्साह अथवा प्रसन्नता भर देती है। ये पर्वतीय झरने ज्ञागयुक्त हैं जिन्हें देखकर लगता है कि ये सफ़ेद मोतियों की लड़ियाँ पहने हुए हैं।

- पर्वतों पर उगे पेड़ कवि को किस तरह दिख रहे हैं?

उत्तर-: पर्वतों पर उगे पेड़ देखकर लगता है कि ये पेड़ पहाड़ के सीने पर उग आए हैं जो मनुष्य की ऊँची-ऊँची इच्छाओं की तरह हैं। ये पेड़ अत्यंत ध्यान से अपलक और अटल रहकर शांत आकाश की ओर निहार रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि शायद ये भी अपनी उच्चाकांक्षा को पूरा करने का उपाय खोजने के लिए चिंतनशील हैं और स्थिर हो कर उपाय खोज रहे हैं।

- तेज बारिश के बाद मौसम में क्या-क्या बदलाव आया है?

उत्तर-: तेज बारिश के बाद मौसम ऐसा हो गया है कि घनी धुंध के कारण लग रहा है मानो पेड़ कहीं उड़ गए हों अर्थात् गायब हो गए हों। ऐसा लग रहा है कि पूरा आकाश ही धरती पर आ गया हो केवल झरने की आवाज़ ही सुनाई दे रही है। प्रकृति का ऐसा भयानक रूप देख कर शाल के पेड़ डर कर धरती के अंदर धंस गए हैं। चारों ओर धुँआ होने के कारण लग रहा है कि तालाब में आग लग गई है। ऐसा लग रहा है कि ऐसे मौसम में इंद्र भी अपना बादल रूपी विमान ले कर इधर उधर जादू का खेल दिखाता हुआ घूम रहा है।

- “पर्वत प्रदेश में पावस” कविता में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किस प्रकार किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- “पर्वत प्रदेश में पावस” कविता में कवि ने प्रकृति को मानव के सभी अंगों से परिपूर्ण माना है। कवि ने इस कविता में प्रकृति का ऐसा वर्णन किया है कि लग रहा है कि प्रकृति सजीव हो उठी है। उन्होंने पर्वत, बादल, झरने, तालाब, पेड़ आदि को मानवीय चेतना से पूर्ण माना है तथा उनकी तुलना मानव के गुणों से की है।

पर्वतों पर उगे हजारों फूल ऐसे लग रहे हैं जैसे पर्वतों की आँखें हो और वो इन आँखों के सहारे अपने आपको अपने चरणों ने फैले दर्पण रूपी तालाब में देख रहे हों। पर्वतों से गिरते हुए झरने कल कल की मधुर आवाज कर रहे हैं जो नस नस को प्रसन्नता से भर रहे हैं। पर्वतों पर उगे हुए पेड़ शांत आकाश को ऐसे देख रहे हैं जैसे वो उसे छूना चाह रहे हों। इस प्रकार कवि ने मानवीकरण अलंकार का प्रयोग सुन्दरता के साथ किया है।

- पर्वतीय प्रदेश में उड़ते बादलों को देखकर कवि ने क्या कल्पना की है?

उत्तर:- पर्वतीय प्रदेश में उड़ते बादलों के कारण लग रहा है मानो पेड़ कहीं उड़ गए हों अर्थात् गायब हो गए हों। ऐसा लग रहा है कि पूरा आकाश ही धरती पर आ गया हो केवल झरने की आवाज़ ही सुनाई दे रही है। प्रकृति का ऐसा भयानक रूप देख कर शाल के पेड़ डर कर धरती के अंदर धंस गए हैं। चारों ओर बादल होने के कारण लग रहा है कि तालाब में आग लग गई है। ऐसा लग रहा है कि ऐसे मौसम में इंद्र भी अपना बादल रूपी विमान ले कर इधर उधर जादू का खेल दिखाता हुआ घूम रहा है। कवि की यह कल्पना अत्यधिक मनोरम है।

- पर्वतीय प्रदेश में कुछ पेड़ पहाड़ पर उगे हैं तो कुछ शाल के पेड़ पहाड़ के पास। इन दोनों स्थान के पेड़ों के सौंदर्य में अंतर कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए

उत्तर:- पर्वतों पर उगे पेड़ देखकर लगता है कि ये पेड़ पहाड़ के सीने पर उग आए हैं जो मनुष्य की ऊँची-ऊँची इच्छाओं की तरह हैं। ये पेड़ अत्यंत ध्यान से अपलक और अटल रहकर शांत आकाश की ओर निहार रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि शायद ये भी अपनी उच्चाकांक्षा को पूरा करने का उपाय खोजने के लिए चिंतनशील हैं और स्थिर हो कर उपाय खोज रहे हैं।

दूसरी ओर पर्वतीय प्रदेश में उड़ते बादलों के कारण लग रहा है मानो पेड़ कहीं उड़ गए हों अर्थात् गायब हो गए हों। ऐसा लग रहा है कि पूरा आकाश ही धरती पर आ गया हो केवल झरने की आवाज़ ही सुनाई दे रही है। ऐसा लगता है कि अचानक होने वाली मूसलाधार वर्षा और धुंध से भयभीत होकर शाल के ये पेड़ धरती में धंस गए हों।

- “पर्वत प्रदेश में पावस” कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर-: “पर्वत प्रदेश में पावस” कविता पर्वतीय सौंदर्य को व्यक्त करने वाली कविता है। प्रकृति का यह सौंदर्य वर्षा में और भी बढ़ जाता है। कवि ने इस कविता में प्रकृति का ऐसा वर्णन किया है कि लग रहा है कि प्रकृति सजीव हो उठी है। कवि वर्णन करता है कि वर्षा ऋतु में प्रकृति का रूप हर पल बदल रहा है कभी वर्षा होती है तो कभी धूप निकल आती है।

पर्वतों पर उगे हजारों फूल ऐसे लग रहे हैं जैसे पर्वतों की आँखें हो और वो इन आँखों के सहारे अपने आपको अपने चरणों ने फैले दर्पण रूपी तालाब में देख रहे हों। पर्वतों से गिरते हुए झरने कल कल की मधुर आवाज कर रहे हैं जो नस नस को प्रसन्नता से भर रहे हैं। पर्वतों पर उगे हुए पेड़ शांत आकाश को ऐसे देख रहे हैं जैसे वो उसे छूना चाह रहे हों। बारिश के बाद मौसम ऐसा हो गया है कि घनी धुंध के कारण लग रहा है मानो पेड़ कहीं उड़ गए हों अर्थात् गायब हो गए हों, चारों ओर धुँआ होने के कारण लग रहा है कि तालाब में आग लग गई है। ऐसा लग रहा है कि ऐसे मौसम में इंद्र भी अपना बादल रूपी विमान ले कर इधर उधर जादू का खेल दिखता हुआ घूम रहा है।

- पर्वत प्रदेश में पावस कविता में कवि ने उच्चाकांक्षा पर किस प्रकार व्यंग्य किया है ?

उत्तर-: कवि ने उच्चाकांक्षा पर रखने वालों पर यह व्यंग्य किया है कि जो व्यक्ति अपने जीवन में ऊँचा उठने की इच्छा रखते हैं वे उसी तरह हमेशा चिंतित, मौन तथा अपने आप में खोये हुए से रहते हैं जैसे पर्वतीय क्षेत्र में पहाड़ों के हृदय से उठ-उठ कर अनेकों पेड़ ऊँचा उठने की इच्छा लिए एक टक दृष्टि से स्थिर हो कर शांत आकाश को देखते हुए से प्रतीत होते हैं।

- “ पर्वत प्रदेश में पावस” कविता में कवि ने झरनों के सौंदर्य को किस प्रकार दर्शाया है ?

उत्तर-: “ पर्वत प्रदेश में पावस ” कविता में कवि झरनों के सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जब पहाड़ों पर झरने बहते हैं तो उनके झागदार पानी को देखकर ऐसा लगता है मनो उन्होंने मोतियों की लड़ियाँ पहन रखी हों , उनकी कल – कल की ध्वनि को सुन कर ऐसा लगता है जैसे वे पहाड़ों का गुणगान कर रहे हों। उनकी करतल ध्वनि नस – नस में उत्साह अथवा प्रसन्नता भर देती है।

- “ पर्वत प्रदेश में पावस” कविता में धुँआँ कहाँ नजर आ रहा है?

उत्तर-: " पर्वत प्रदेश में पावस " कविता में कवि तेज बारिश के बाद मौसम में घनी धुंध के कारण धुँआ होने से लग रहा है कि तालाब में आग लग गई है और वह धुंध तालाब से उठते धुएँ के समान लग रही है।

- " पर्वत प्रदेश में पावस" कविता द्वारा किस अनुभव की प्राप्ति होती है?

उत्तर-: " पर्वत प्रदेश में पावस " कविता द्वारा प्राकृतिक सौंदर्य के अनुभव की प्राप्ति होती है।

- " पर्वत प्रदेश में पावस" कविता में पर्वत की महानता का गुणगान कौन कर रहे है?

उत्तर-: " पर्वत प्रदेश में पावस " कविता में झरनों की करतल ध्वनि मन को प्रसन्नता देने वाली कही गई हैं और उस करतल ध्वनि को सुन कर ऐसा लगता है जैसे वे पर्वत की महानता का गुणगान कर रहे हों।

- " झर झर, नस नस, उठ उठ" में कौन सा अलंकार है?

उत्तर-: " झर झर , नस नस , उठ उठ " में ' पुनरुक्ति ' अलंकार है क्योंकि जहाँ एक ही शब्द की उत्पत्ति एक से अधिक बार हुई हो वहाँ ' पुनरुक्ति ' अलंकार होता है।

- " दर्पण सा फैला है विशाल" पंक्ति में कौन सा अलंकार है?

उत्तर-: " दर्पण सा फैला है विशाल " पंक्ति में ' उपमा ' अलंकार है क्योंकि जहाँ उपमेय की उपमान से तुलना की गयी हो तथा जहाँ सा , से , सी , जैसे , इत्यादि शब्दों का प्रयोग हो वहाँ ' उपमा ' अलंकार होता है।

- जादू का खेल कौन खेल रहा है ?

उत्तर-: बारिश के मौसम के बाद चारों ओर फैली घनी धुंध के कारण ऐसा लग रहा है जैसे इस मौसम में इंद्र भी अपना बादल रूपी विमान ले कर इधर – उधर जादू का खेल दिखता हुआ घूम रहा है।

- ऊँचे वृक्ष किस प्रकार आसमान की ओर देख रहे हैं ?

उत्तर-: पहाड़ों के हृदय से उठ-उठ कर अनेकों पेड़ ऊँचा उठने की इच्छा लिए एक टक दृष्टि से स्थिर हो कर शांत आकाश को इस तरह देख रहे हैं, मनो वो किसी चिंता में डूबे हुए हों।

निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए :-

- है टूट पड़ा भू पर अम्बर!

भाव-: घनी धुंध के कारण लग रहा है मानो पूरा आकाश ही धरती पर आ गया हो केवल झरने की आवाज़ ही सुनाई दे रही है।

- यों जलद -यान में विचर -विचर

था इंद्र खेलता इंद्रजाल।

भाव-: चारों ओर धुँआ होने के कारण लग रहा है कि इंद्र भी अपना बादल रूपी विमान ले कर इधर उधर जादू का खेल दिखता हुआ घूम रहा है।

गिरिवर के उर से उठ -उठ कर

उच्चाकांक्षाओं से तरुवर

है झाँक रहे नीरव नभ पर

अनिमेष ,अटल कुछ चिंतापर।

भाव-: पहाड़ों के हृदय से उठ-उठ कर अनेकों पेड़ ऊँचा उठने की इच्छा लिए एक टक दृष्टि से स्थिर हो कर शांत आकाश को इस तरह देख रहे हैं मनो वो किसी चिंता में डूबे हुए हों। अर्थात् वे हमें निरन्तर ऊँचा उठने की प्रेरणा दे रहे हैं। ये वृक्ष मनुष्यों की सदा ऊपर उठने और आगे बढ़ने की और संकेत कर रहे हैं।

पाठ -5

तोप

कवि परिचय

कवि – वीरेन डंगवाल

जन्म – 5 अगस्त 1947 (उत्तराखण्ड)

तोप पाठ का सारांश

प्रस्तुत पाठ हमें याद दिलाता है कि कभी ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में व्यापार करने के इरादे से आई थी। भारत में उसका स्वागत किया गया था परन्तु धीरे – धीरे वो हमारी शासक बन गई। अगर उन्होंने कुछ बाग़ – बगीचे बनाये तो उन्होंने तोपें भी तैयार की। कवि कहते हैं कि यह जो 1857 की तोप आज कंपनी बाग़ के प्रवेश द्वार पर रखी गई है इसकी बहुत देखभाल की जाती है। जिस तरह यह कंपनी बाग़ हमें विरासत में अंग्रेजों से मिला है उसी तरह यह तोप भी हमें अंग्रेजों से ही विरासत में मिली है। सुबह और शाम को बहुत सारे व्यक्ति कंपनी के बाग़ में घूमने के लिए आते हैं। तब यह तोप उन्हें अपने बारे में बताती है कि मैं अपने ज़माने में बहुत ताकतवर थी। अब तोप की स्थिति बहुत बुरी है- छोटे बच्चे इस पर बैठ कर घुड़सवारी का खेल खेलते हैं। चिड़ियाँ इस पर बैठ कर आपस में बातचीत करने लग जाती हैं। कभी – कभी शरारती चिड़ियाँ खासकर गौरैयाँ तोप के अंदर घुस जाती हैं। वह हमें बताना चाहती है कि ताकत पर कभी घमंड नहीं करना चाहिए क्योंकि ताकत हमेशा नहीं रहती।

प्रतीक' अर्थात् निशानी और 'धरोहर' अर्थात् विरासत दो तरह की होती हैं। एक वे जिन्हें देखकर या जिनके बारे में जानकर हम अपने देश और समाज की प्राचीन उपलब्धियों के बारे में जान सकते हैं और दूसरी वे जो हमें बताती हैं कि हमारे पूर्वजों से कब क्या गलती हुई थी जिसके कारण देश की कई पीढ़ियों को गहरे दुःख और कष्टों को झेलना पड़ा

प्रस्तुत पाठ में ऐसी ही दो निशानियों का वर्णन किया गया है। पाठ हमें याद दिलाता है कि कभी ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में व्यापार करने के इरादे से आई थी। भारत में उसका स्वागत किया गया था परन्तु धीरे – धीरे वो हमारी शासक बन गई।

अगर उन्होंने कुछ बाग़ – बगीचे बनाये तो उन्होंने तोपें भी तैयार की। देश को फिर से आज़ाद करने का सपना देखने वाले जाबाजों को इन तोपों ने मौत के घाट उतार दिया। पर एक दिन

ऐसा भी आया जब हमारे पूर्वजों ने उस सत्ता को उखाड़ फेंका। तोप को बेकार कर दिया। फिर भी हमें इन निशानियों के माध्यम से याद रखना होगा कि भविष्य में कोई और इस तरह हम पर हुकम ना जमा पाए जिसके इरादे अच्छे ना हो और यहाँ फिर से वही परिस्थितियाँ बने जिनके घाव आज तक हमारे दिलों में हरे हैं। भले ही अंत में उनकी तोप भी उसी काम क्यों ना आये जिस काम इस पाठ की तोप आ रही है।

शब्दार्थ

मुहाने : प्रवेश द्वार पर

धर रखी : रखी गई

सम्हाल : देखभाल

विरासत : पूर्व पीढ़ियों से प्राप्त वस्तुएँ

सैलानी : दर्शनीय स्थलों पर आने वाले यात्री

जबर : ताकतवर

सूरमाओं : वीर

धज्जें : चिथड़े करना

बहरहाल : बुरी स्थिति

फारिग : मुक्त, खाली

तोप पाठ की व्याख्या

काव्यांश 1

कंपनी बाग़ के मुहाने पर

धर रखी गई है यह 1857 की तोप

इसकी होती है बड़ी सम्हाल, विरासत में मिले

कंपनी बाग़ की तरह

साल में चमकाई जाती है दो बार।

प्रसंग -: प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई हैं। यह कविता वीरेन डंगवाल द्वारा लिखा गया है। इन पंक्तियों में कवि ने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में इस्तेमाल की गई तोप का वर्णन किया है।

व्याख्या -: कवि कहते हैं कि यह जो 1857 की तोप आज कंपनी बाग़ के प्रवेश द्वार पर रखी गई है इसकी बहुत देखभाल की जाती है। जिस तरह यह कंपनी बाग़ हमें विरासत में अंग्रेजों से मिला है, उसी तरह यह तोप भी हमें अंग्रेजों से ही विरासत में मिली है। जिस तरह कंपनी बाग़ की साल में दो बार अच्छे से देखरेख की जाती है उसी तरह इस तोप को भी साल में दो बार चमकाया जाता है।

काव्यांश -2

सुबह शाम आते हैं कंपनी बाग़ में बहुत से सैलानी

उन्हें बताती है यह तोप

कि मैं बड़ी जबर

उड़ा दिए थे मैंने

अच्छे – अच्छे सूरमाओं के धज्जें

अपने ज़माने में

प्रसंग -: प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई हैं। यह कविता वीरेन डंगवाल द्वारा लिखा गया है। इन पंक्तियों में कवि बताना चाहता है कि तोप का प्रयोग कहाँ हुआ था !

व्याख्या -: कवि कहते हैं कि सुबह और शाम को बहुत सारे व्यक्ति कंपनी के बाग़ में घूमने के लिए आते हैं। तब यह तोप उन्हें अपने बारे में बताती है कि मैं अपने ज़माने में बहुत ताकतवर थी। मैंने अच्छे अच्छे वीरों के चिथड़े उड़ा दिए थे। अर्थात् उस समय तोप का डर हर इंसान को था।

काव्यांश - 3

अब तो बहरहाल

छोटे बच्चों की सवारी से अगर यह फारिग हो

तो उसके ऊपर बैठकर

चिड़ियाँ ही अकसर करती है गपशप

कभी -कभी शैतानी में वे इसके भीतर भी घुस जाती हैं

खासकर गौरैयें

वे बताती हैं कि दरअसल कितनी भी बड़ी हो तोप

एक दिन तो होना ही है उसका मुँह बंद।

प्रसंग -: प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई हैं। यह कविता वीरेन डंगवाल द्वारा लिखा गया है। इन पंक्तियों में कवि कहना चाहता है कि किसी भी बुराई को हिम्मत और होंसलों के सहारे खत्म किया जा सकता है।

व्याख्या -: कवि कहते हैं कि अब तोप की स्थिति बहुत बुरी है। छोटे बच्चे इस पर बैठ कर घुड़सवारी का खेल खेलते हैं। जब बच्चे इस पर नहीं खेल रहे होते तब चिड़ियाँ इस पर बैठ कर आपस में बातचीत करने लग जाती हैं। कभी - कभी शरारती चिड़ियाँ खासकर गौरैयें तोप के अंदर घुस जाती हैं। वो छोटी सी चिड़िया ऐसा करके हमें बताना चाहती हैं कि कोई कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो एक ना एक दिन उसका भी अंत निश्चित होता है।

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

- विरासत में मिली चीजों की बड़ी संभाल क्यों होती है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -: विरासत में मिली चीजों की बड़ी संभाल इसलिए होती है क्योंकि ये हमें अपने पूर्वजों, परम्पराओं और इतिहास की जानकारी देते हैं और इसी के साथ हमें सीख भी देते हैं। इसलिए इन्हें अमूल्य माना जाता है।

- इस कविता से आपको तोप के बारे में क्या जानकारी मिलती है ?

उत्तर :- इस कविता में हमें तोप के विषय के बारे में यह जानकारी मिलती है कि यह तोप 1857 में एक शक्तिशाली हथियार था जिसकी सहायता से कई वीरों के प्राण लिए गए थे परन्तु आज यह तोप केवल देखने की वस्तु मात्र रह गई है अब बच्चे इस पर घुड़सवारी करते हैं और चिड़ियाँ इस पर गपशप करती है।

- कंपनी बाग़ में राखी तोप क्या सीख देती है ?

उत्तर :- कंपनी बाग़ में रखी तोप हमें अंग्रेजों के अत्याचारों और हमारे शहीदों की याद दिलाती है और सावधान रहने की सलाह देती है ताकि कोई दोबारा हम पर राज ना करे। इसी के साथ तोप यह सीख भी देती है कि चाहे कोई कितना भी अधिक शक्तिशाली क्यों न हो एक ना एक दिन उसका अंत हो ही जाता है।

- कविता में तोप को दो बार चमकाने की बात कही गई है। ये दो अवसर कौन से होंगे ?

उत्तर :- भारत की स्वतंत्रता के प्रतिक दो दिन 15 अगस्त और 26 जनवरी हैं। इन्हीं दो उपलक्ष्यों पर कंपनी बाग़ को सजाया जाता है और तोप को चमकाया जाता है।

- तोप कविता किस कवी द्वारा लिखी गई है ?

उत्तर :- तोप कविता के कवि श्री वीरेन डंगवाल जी हैं।

- तोप को साल में दो बार चमकाया जाता है। वे दो अवसर कौन – कौन से हैं ?

उत्तर :- कविता में जिन दो अवसरों पर तोप को चमकाने की बात कही गई है, वे दो अवसर हमारे राष्ट्रीय पर्व हैं अर्थात् 15 अगस्त को मनाया जाने वाला पर्व स्वतंत्रता दिवस और 26 जनवरी को मनाया जाने वाला पर्व गणतंत्र दिवस। ये दोनों तिथियाँ हमारे देश के लिए ऐतिहासिक दिवस की प्रतीक हैं। इन्हें हम राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाते हैं। इन दिनों पर पूरा राष्ट्र देश की आजादी को याद करता है। इन्हीं दोनों तिथियों पर इस तोप को भी चमकाया जाता है क्योंकि यह तोप हमारे विजेता और आजादी की प्रतीक होने के कारण एक राष्ट्रीय महत्त्व की वस्तु बन चुकी है। इसलिए राष्ट्रीय महत्त्व को ध्यान में रखते हुए इस तोप को चमकाया जाता है ताकि लोगों के मन में राष्ट्रियता की भावना को बढ़ावा मिले और लोगों को स्वतंत्रता दिलाने वाले वीरों की याद दिलाई जा सके।

- कविता में तोप की कौन – कौन सी विशेषताएँ बताई गई हैं ?

उत्तर :- 1857 की क्रांति में इस्तेमाल की गई थी। उस ज़माने में बहुत ताकतवर थी। वह अच्छे – अच्छे वीरों के चिथड़े उड़ा देती थी। उस समय तोप का डर हर इंसान को था। तोप ईस्ट इंडिया कंपनी की थी। राष्ट्रीय पर्वों के अवसर पर तोप का विशेष रख – रखाव किया जाता था।

- तोप को कहाँ रखा गया है ?

उत्तर :- तोप को कंपनी बाग़ के प्रवेश द्वार पर रखा गया है।

- तोप कविता क्या सन्देश देती है ?

उत्तर :- इस कविता से हमें यह संदेश मिलता है कि कोई भी चीज कितनी भी बड़ी क्यों न हो , कितनी भी ताकतवर क्यों न हो , उसकी दशा एक समान नहीं रहती। उसका मुंह एक दिन बंद होना ही है। जैसे तोप ने भी बड़े – बड़े सूरमाओं की धज्जियां उड़ाई थी परन्तु समय गुजरने के साथ ही सब नष्ट हो गया। इसके अलावा यह हमें अंग्रेज़ों के शोषण और अत्याचारों की याद दिलाती है और बतलाती है कि सुरक्षा और हितों के प्रति सचेत रहें। यह हमारे उन तमाम शहीद स्वतंत्रता सेनानियों को याद करने तथा उनके बताए मार्ग पर चलने की प्रेरणा भी देती है। तोप – गोले बम – बारूद कितने भी विनाशकारी हों , वे मानव के सामने टिक नहीं सकते।
आखिरकार मनुष्यता की शक्ति ही विजयी होती है।

निम्नलिखित के भाव स्पष्ट कीजिए :-

अब तो बहरहाल

छोटे बच्चों की सवारी से अगर यह फारिग हो

तो उसके ऊपर बैठकर

चिड़ियाँ ही अकसर करती है गपशप

उत्तर -: इन पंक्तियों में कवि ने तोप की वर्तमान स्थिति का वर्णन किया है ,एक समय में जहाँ तोप ने सबको डरा कर रखा था वही आज बच्चे उस पर घुड़सवारी कर रहे हैं और चिड़ियाँ उस पर बैठ कर गपशप कर रही हैं।

वे बताती हैं कि दरअसल कितनी भी बड़ी हो तोप

एक दिन तो होना ही है उसका मुँह बंद।

उत्तर -: आज कम्पनी बाग़ में रखी तोप किसी का कुछ नई बिगाड़ सकती । छोटी छोटी चिड़ियों भी उस पर खेलती फुदकती रहती हैं । यह ये बात दर्शाता है कि कोई कितना भी शक्तिशाली और क्रूर क्यों ना, हो एक दिन उसे शांत होना ही पड़ता है।

उड़ा दिए थे मैंने

अच्छे – अच्छे सूरमाओं के धज्जें

उत्तर -: इन पंक्तियों में तोप अपनी प्रशंसा कर रही है की 1857 में उससे ज्यादा शक्तिशाली कोई नहीं था उसने कई वीरों को मारा था।

Individual Tuition Concept

पाठ - 6

कर चले हम फ़िदा

कवि परिचय

कवि – कैफ़ी आज़मी

जन्म – 1919 (उत्तर प्रदेश)

मृत्यु – 2002

कर चले हम फ़िदा पाठ का सारांश

प्रस्तुत कविता में देश के सैनिकों की भावनाओं का वर्णन है। सैनिक कभी भी देश के मानसम्मान को बचाने से पीछे नहीं हटेगा। फिर चाहे उसे अपनी जान से ही हाथ क्यों ना गवाना पड़े। भारत – चीन युद्ध के दौरान सैनिकों को गोलियाँ लगने के कारण उनकी साँसें रुकने वाली थी, ठण्ड के कारण उनकी नाड़ियों में खून जम रहा था परन्तु उन्होंने किसी चीज़ की परवाह न करते हुए दुश्मनों का बहदुरी से मुकाबला किया और दुश्मनों को आगे नहीं बढ़ने दिया। सैनिक गर्व से कहते हैं कि हमें अपने सर भी कटवाने पड़े तो हम खुशी खुशी कटवा देंगे पर हमारे गौरव के प्रतिक हिमालय को नहीं झुकने देंगे अर्थात् हिमालय पर दुश्मनों के कदम नहीं पड़ने देंगे। लेकिन देश के लिए प्राण न्योछावर करने की खुशी कभी कभी किसी किसी को ही मिल पाती है अर्थात् सैनिक देश पर मर मिटने का एक भी मौका नई खोना चाहते। जिस तरह से दुल्हन को लाल जोड़े में सजाया जाता है उसी तरह सैनिकों ने भी अपने प्राणों का बलिदान दे कर धरती को खून से लाल कर दिया है सैनिक कहते हैं कि हम तो देश के लिए बलिदान दे रहे हैं परन्तु हमारे बाद भी ये सिलसिला चलते रहना चाहिए। जब भी जरूरत हो तो इसी तरह देश की रक्षा के लिए एकजुट होकर आगे आना चाहिए। सैनिक अपने देश की धरती को सीता के आँचल की तरह मानते हैं और कहते हैं कि अगर कोई हाथ आँचल को छूने के लिए आगे बढ़े तो उसे तोड़ दो। अपने वतन की रक्षा के लिए तुम ही राम हो और तुम ही लक्ष्मण हो अब इस देश की रक्षा का दायित्व तुम पर है।

जिंदगी सभी प्राणियों को प्रिय होती है। इसे कोई ऐसे ही बेमतलब गवाना नहीं चाहेगा। ऐसा रोगी जो ठीक नहीं हो सकता वो भी जीवन जीने की इच्छा करता है। जीवन की रक्षा करना अपनी सुरक्षा करना और उस जीवन को बनाये रखने के लिए प्रकृति ने सिर्फ साधन ही उपलब्ध नहीं करवाए हैं बल्कि सभी जीव जंतुओं को उसे बनाने और बचाये रखने की भावना भी दी है। इसीलिए तो शांति प्रिय जीव भी अपनी जान बचाने के लिए हमला करने के लिए तैयार रहते हैं।

किन सैनिक का जीवन बिलकुल इसके विपरीत होता है। क्योंकि सैनिक उस समय सीना तान कर खड़ा हो जाता है जब उसके जीवन पर नहीं बल्कि दूसरों के जीवन और आज़ादी पर संकट आता है। जबकि ऐसी स्थिति में उसे पता होता है कि दूसरों की आज़ादी और जिंदगी भले ही बची रह सकती है परन्तु उसकी जान जाने की सम्भावना सबसे अधिक होती है

प्रस्तुत पाठ जो युद्ध की पृष्ठभूमि पर बनी फिल्म 'हकीकत' के लिए लिखा गया था, ऐसे ही सैनिकों के दिल की बात बयान करता है जिन्हें अपने किये पर नाज है। इसी के साथ उन्हें देशवासियों से कुछ आशाएँ भी हैं। जिनसे उन्हें आशाएँ हैं वो देशवासी हम और आप हैं तो इसलिए इस पाठ के जरिये हम जानेगे की हम किस हद तक उनकी आशयों पर खरे उतरे हैं।

शब्दार्थ

फ़िदा : न्योँछावर

हवाले : सौंपना

बाँकपन : वीरता का भाव

रुत : मौसम

हुस्र : सुन्दरता

रुस्वा : बदनाम

खूँ : खून

कुर्बानियाँ : बलिदान

वीरान : सुनसान

काफ़िलें : यात्रियों के समूह

फतह : जीत

जश्र : खुशी

जमीं : जमीन

लक़ीर : रेखा

कर चले हम फ़िदा पाठ की व्याख्या

काव्यांश 1

कर चले हम फ़िदा जानो-तन साथियो

अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई

फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया

कट गए सर हमारे तो कुछ गम नहीं

सर हिमालय का हमने न झुकने दिया

मरते-मरते रहा बाँकपन साथियो

अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

प्रसंग -: प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई हैं। यह कविता कैफ़ी आज़मी द्वारा लिखा गया है। इन पंक्तियों में कवि एक वीर सैनिक का अपने देशवासियों को दिए आखिरी सन्देश का वर्णन कर रहा है।

व्याख्या – कवि कहते हैं कि सैनिक अपने आखिरी सन्देश में कह रहे हैं कि वो अपने प्राणों को देश हित के लिए न्योछावर कर रहे हैं, अब यह देश हम जाते जाते आप देशवासियों को सौंप रहे हैं। सैनिक उस दृश्य का वर्णन कर रहे हैं जब दुश्मनों ने देश पर हमला किया था। सैनिक कहते हैं कि जब हमारी साँसे हमारा साथ नहीं दे रही थी और हमारी नाड़ियों में खून जमता जा रहा

,फिर भी हमने अपने बढ़ते कदमों को जारी रखा अर्थात दुश्मनों को पीछे धकेलते गए। सैनिक गर्व से कहते हैं कि हमें अपने सर भी कटवाने पड़े तो हम खुशी खुशी कटवा देंगे पर हमारे गौरव के प्रतिक हिमालय को नहीं झुकने देंगे अर्थात हिमालय पर दुश्मनों के कदम नहीं पड़ने देंगे। हम मरते दम तक वीरता के साथ दुश्मनों का मुकाबला करते रहे अब इस देश की रक्षा का भार आप देशवासियों को सौंप रहे हैं।

काव्यांश 1

जिंदा रहने के मौसम बहुत हैं मगर
जान देने की रत रोज आती नहीं
हुस्न और इश्क दोनों को रुस्वा करे
वो जवानी जो खूँ में नहाती नहीं
आज धरती बनी है दुलहन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई हैं। यह कविता कैफ़ी आज़मी द्वारा लिखा गया है। इन पंक्तियों में कवि सैनिक के बलिदान का भावनात्मक रूप से वर्णन कर रहा।

Individual Tuition Concept

व्याख्या – सैनिक कहते हैं कि हमारे पूरे जीवन में हमें जिन्दा रहने के कई अवसर मिलते हैं लेकिन देश के लिए प्राण न्योछावर करने की खुशी कभी कभी किसी किसी को ही मिल पाती है अर्थात सैनिक देश पर मर मिटने का एक भी मौका नई खोना चाहते। सैनिक देश के नौजवानों को प्रेरित करते हुए कहते हैं कि सुंदरता और प्रेम का त्याग करना सीखो क्योंकि वो सुंदरता और प्रेम ही क्या, जवानी ही क्या जो देश के लिए अपना खून न बहा सके। सैनिक देश की धरती को दुल्हन की तरह मानते हैं और कहते हैं कि जिस तरह दुल्हन को स्वयंवर में हासिल करने के लिए राजा किसी भी मुश्किल को पार कर जाते थे उसी तरह तुम भी अपनी इस दुल्हन को दुश्मनों से बचा कर रखना। क्योंकि अब हम देश की रक्षा का दायित्व आप देशवासियों पर छोड़ कर जा रहे हैं।

काव्यांश 3

राह कुर्बानियों की न वीरान हो
तुम सजाते ही रहना नए काफ़िले
फतह का जश्न इस जश्न के बाद है
जिंदगी मौत से मिल रही है गले
बाँध लो अपने सर से कफन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक ‘स्पर्श भाग -2’ से ली गई यह कविता कैफ़ी आजमी द्वारा लिखा गया है। इन पंक्तियों में सैनिक देशवासियों को देश के लिए बलिदान करने के लिए तैयार रहने को कहते हैं।

व्याख्या – सैनिक कहते हैं कि हम तो देश के लिए बलिदान दे रहे हैं परन्तु हमारे बाद भी ये सिलसिला चलते रहना चाहिए। जब भी जरूरत हो तो इसी तरह देश की रक्षा के लिए एकजुट होकर आगे आना चाहिए। जीत की खुशी तो देश पर प्राण न्योछावर करने की खुशी के बाद दोगुनी हो जाती है। उस स्थिति में ऐसा लगता है मनो जिंदगी मौत से गले मिल रही हो। अब ये देश आप देशवासियों को सौंप रहे हैं अब आप अपने सर पर मौत की चुनरी बांध लो अर्थात् अब आप देश की रक्षा के लिए तैयार हो जाओ।

काव्यांश 4

खींच दो अपने खूँ से जमीं पर लकीर
इस तरफ आने पाए न रावन कोई
तोड़ दो हाथ अगर हाथ उठने लगे
छू न पाए सीता का दामन कोई
राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई हैं। यह कविता कैफ़ी आज़मी द्वारा लिखा गया है। इन पंक्तियों में सैनिक देशवासियों को प्रेरित कर रहे हैं।

व्याख्या – सैनिक कहते हैं कि अपने खून से लक्ष्मण रेखा के समान एक रेखा तुम भी खींच लो और ये तय कर लो कि उस रेखा को पार करके कोई रावण रूपी दुश्मन इस पार ना आ पाय। सैनिक अपने देश की धरती को सीता के आँचल की तरह मानते हैं और कहते हैं कि अगर कोई हाथ आँचल को छूने के लिए आगे बड़े तो उसे तोड़ दो। अपने वतन की रक्षा के लिए तुम ही राम हो और तुम ही लक्ष्मण हो। अब इस देश की रक्षा का दायित्व तुम पर है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

- क्या इस गीत की कोई ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है ?

उत्तर -: यह गीत सन 1962 के भारत – चीन युद्ध की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। चीन ने तिब्बत की ओर से युद्ध किया और भारतीय वीरों ने इसका बहुदुरी से सामना किया।

- 'सर हिमालय का हमने न झुकने दिया', इस पंक्ति में हिमालय किस बात का प्रतिक है

उत्तर -: हिमालय भारत के मानसम्मान का प्रतिक है। देश के वीर जवानों ने अपने प्राणों का बलिदान दे कर भी देश के मान सम्मान की रक्षा की।

- इस गीत में धरती को दुल्हन क्यों कहा गया है ?

उत्तर -: जिस तरह से दुल्हन को लाल जोड़े में सजाया जाता है उसी तरह सैनिकों ने भी अपने प्राणों का बलिदान देकर धरती को खून से लाल कर दिया है इसीलिए धरती को दुल्हन कहा गया है।

- गीत में ऐसे क्या खास बात होती है कि वे जीवन भर याद रह रह जाते हैं ?

उत्तर -: गीत में भावनात्मकता, संगीतात्मकता, लयबद्धता, सच्चाई आदि गुण होते हैं जिसके कारण वे जीवन भर याद रह जाते हैं। 'कर चले हम फ़िदा' गीत में देशभक्ति और बलिदान की भावना स्पष्ट दिखाई देती है जिससे ये गीत हर हिंदुस्तानी के दिमाग में छप गया है।

- कवि ने 'साथियों' सम्बोधन का प्रयोग किसके लिए किया गया है ?

उत्तर -: कवि ने 'साथियों' शब्द का प्रयोग सैनिक, साथियों और देशवासियों के लिए प्रयोग किया है।

- कवि ने इस कविता में किस काफ़िले को आगे बढ़ाते रहने की बात कही है ?

उत्तर -: इस कविता में काफ़िले शब्द सैनिकों के समूह के लिए प्रयोग किया गया है, सैनिक कहते हैं की यदि वे शहीद हो जाएँ तो सैनिकों के अनेक समूह तैयार होने चाहिए ताकि दुश्मन देश में ना घुस सके।

- इस गीत में ' सर पर कफ़न बाँधना ' किस ओर संकेत करता है?

उत्तर -: ' सर पर कफ़न बाँधना ' का अर्थ है ' मौत के लिए तैयार होना। सैनिक अपने अंतिम पलों में देशवासियों को सर पर कफ़न बाँधने के लिए कहता है क्योंकि उसने देश की रक्षा में अपने प्राण त्याग दिए है और अब देश की रक्षा का भार देशवासियों पर है।

- इस कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर -: प्रस्तुत कविता में देश के सैनिकों की भावनाओं का वर्णन है। सैनिक कभी भी देश के मानसम्मान को बचाने से पीछे नहीं हटेगा। फिर चाहे उसे अपनी जान से ही हाथ क्यों ना गवाना पड़े। सैनिक चाहता है की उसके बलिदान के बाद देश की रक्षा के लिए सैनिकों की कमी नहीं होनी चाहिए। दुश्मन कभी भी उसके द्वारा खींची गई खून की लक्ष्मण रेखा पार ना कर पाए इस उम्मीद से वो देश की रक्षा का भार देशवासियों पर छोड़ कर जा रहा है। सैनिक कहता है कि देश पर जान न्योछावर करने के मौके बहुत कम आते हैं। ये क्रम टूटना नहीं चाहिए।

निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए –

साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई

फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया

उत्तर -: इन पंक्तियों में कवि ने भारतीय जवानों के साहस का वर्णन किया है। कवि कहता है कि भारत – चीन युद्ध के दौरान सैनिकों को गोलियाँ लगने के कारण उनकी साँसें रुकने वाली थी, ठण्ड के कारण उनकी नाड़ियों में खून जम रहा था परन्तु उन्होंने किसी चीज़ की परवाह न करते हुए दुश्मनों का बहदुरी से मुकाबला किया और दुश्मनों को आगे नहीं बढ़ने दिया।

खींच दो अपने खूँ से जमीं पर लकीर

इस तरफ आने पाए न रावन कोई

उत्तर -: इन पंक्तियों में सैनिक भारत की धरती को सीता की तरह मानता है और अपने साथियों से कहता है की अपने खून से लक्ष्मण रेखा खींच लो ताकि कोई दुश्मन रूपी रावण भारत के आँचल को छू भी न सके।

छू न पाए सीता का दामन कोई

राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो

उत्तर -: इन पंक्तियों में सैनिक देशवासियों से कहता है कि वो तो अपना कर्तव्य निभाता हुआ देश के लिए शहीद हो रहा है परन्तु उसके बाद सीता अर्थात भारत की भूमि की रक्षा करने वाले राम और लक्ष्मण दोनों हम ही हैं।

INTERVAL

Individual Tuition Concept

पाठ -7

आत्मत्राण

कवि परिचय

कवि - रवीन्द्रनाथ ठाकुर

जन्म - 6 मई 1861 (बंगाल)

मृत्यु - 1941

आत्मत्राण पाठ का सारांश

इस कविता के कवि 'कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर' हैं। इस कविता का बंगला से हिंदी रूपांतरण आचार्य हरी प्रसाद द्विवेदी जी ने किया है। इस कविता में कविगुरु ईश्वर से अपने दुःख दर्द कम न करने को कह रहे हैं। वे उनसे दुःख दर्दों को झेलने की शक्ति मांग रहे हैं। कविगुरु ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि किसी भी परिस्थिति में मेरे मन में आपके प्रति संदेह न हो। कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि हे प्रभु ! दुःख और कष्टों से मुझे बचा कर रखो में तुमसे ऐसी कोई भी प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ। बल्कि मैं तो सिर्फ तुमसे ये चाहता हूँ कि तुम मुझे उन दुःख तकलीफों को झेलने की शक्ति दो। उन कष्टों के समय में मैं कभी ना डरूँ और उनका सामना करूँ। मुझमें इतना आत्मविश्वास भर दो कि मैं हर कष्ट पर जीत हासिल कर सकूँ। मेरे कष्टों के भार को भले ही कम ना करो और न ही मुझे तसल्ली दो। आपसे केवल इतनी प्रार्थना है की मेरे अंदर निर्भयता भरपूर डाल दें ताकि मैं सारी परेशानियों का डट कर सामना कर सकूँ। सुख के दिनों में भी मैं आपको एक क्षण के लिए भी ना भूलूँ अर्थात हर क्षण आपको याद करता रहूँ। दुःख से भरी रात में भी अगर कोई मेरी मदद न करे तो भी मेरे प्रभु मेरे मन में आपके प्रति कोई संदेह न हो इतनी मुझे शक्ति देना।

प्रस्तुत पाठ में कविगुरु मानते हैं कि प्रभु में सबकुछ संभव करने की ताकत है फिर भी वह बिलकुल नहीं चाहते की वही सब कुछ करे। कवि कामना करते हैं कि किसी भी आपदा या

विपदा में ,किसी भी परेशानी का हल निकालने का संघर्ष वो स्वयं करे ,प्रभु को कुछ भी न करना पड़े। फिर आखिर वो अपने प्रभु से चाहते क्या हैं।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की प्रस्तुत कविता का बंगला से हिंदी अनुवाद श्रद्धेय आचार्य हरी प्रसाद द्विवेदी ने किया है। द्विवेदी जी का हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने में बहुत बड़ा योगदान है। यह अनुवाद बताता है कि अनुवाद कैसे मूल रचना की 'आत्मा ' को ज्यों का त्यों बनाये रखने में सक्षम है।

शब्दार्थ

विपदा : विपत्ति ,मुसीबत

करुणामय : दूसरों पर दया करने वाला

दुःख-ताप : कष्ट की पीड़ा

व्यथित : दुःखी

चित्त : मन

सांत्वना : दिलासा

सहायक : मददगार

पौरुष : पराक्रम

वंचना : वंचित

क्षय : नाश

त्राण : भय निवारण ,बचाव

अनुदिन : प्रतिदिन

तरने : पार करना

अनामय : रोग रहित

लघु	: कम
सांत्वना	: हौसला ,तसली देना
अनुनय	: विनय
वहन	: सामना करना
निर्भय	: बिना डर के
नत शिर	: सिर झुका कर
दुःख-रात्रि	: दुःख से भरी रात
निखिल	: सम्पूर्ण
संशय	: संदेह

INTERVAL

आत्मत्राण की पाठ व्याख्या

Individual Tuition Concept

काव्यांश 1

विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं
 केवल इतना हो (करुणामय)
 कभी न विपदा में पाऊँ भय।
 दुःख-ताप से व्यथित चित्त को न दो सांत्वना नहीं सही
 पर इतना होवे (करुणामय)
 दुख को मैं कर सकूँ सदा जय।
 कोई कहीं सहायक न मिले
 तो अपना बल पौरुष न हिले;

*हानि उठानी पड़े जगत् में लाभ अगर वंचना रही
तो भी मन में ना मानूँ क्षया।*

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई हैं। यह कविता कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर जी द्वारा लिखा गया है। इन पंक्तियों का बंगला से हिंदी रूपांतरण आचार्य हरी प्रसाद द्विवेदी जी ने किया है। इन पंक्तियों में कविगुरु ईश्वर से अपने दुःख दर्द कम न करने को कह रहे हैं वे उन दुःख दर्दों को झेलने की शक्ति मांग रहे हैं।

व्याख्या – इन पंक्तियों में कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि हे प्रभु ! दुःख और कष्टों से मुझे बचा कर रखो, मैं तुमसे ऐसी कोई भी प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ। बल्कि मैं तो सिर्फ तुमसे ये चाहता हूँ कि तुम मुझे उन दुःख तकलीफों को झेलने की शक्ति दो। कष्टों के समय में मैं कभी ना डरूँ और उनका सामना करूँ। दुःख की पीड़ा से दुःखी मेरे मन को आप हौंसला मत दो परन्तु हे प्रभु ! मुझमें इतना आत्मविश्वास भर दो कि मैं हर कष्ट पर जीत हासिल कर सकूँ। कष्टों में कहीं कोई सहायता करने वाला भी ना मिले तो कोई बात नहीं परन्तु वैसी स्थिति में मेरा पराक्रम कम नहीं होना चाहिए। मुझे अगर इस संसार में हानि भी उठानी पड़े और लाभ से हमेशा वंचित ही रहना पड़े तो भी कोई बात नहीं पर मेरे मन की शक्ति का कभी नाश नहीं होना चाहिए अर्थात् मेरा मन हर परिस्थिति में आत्मविश्वास से भरा रहना चाहिए।

Individual Tuition Concept

काव्यांश- 2

*मेरा त्राण करो अनुदिन तुम यह मेरी प्रार्थना नहीं
बस इतना होवे (करुणायम)
तरने की हो शक्ति अनामया।
मेरा भार अगर लघु करके न दो सांत्वना नहीं सही।
केवल इतना रखना अनुनय-
वहन कर सकूँ इसको निर्भया।
नत शिर होकर सुख के दिन में
तव मुख पहचानूँ छिन-छिन में।*

दुःख-रात्रि में करे वंचना मेरी जिस दिन निखिल मही

उस दिन ऐसा हो करुणामय,

तुम पर करूँ नहीं कुछ संशय।।

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई हैं। यह कविता कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर जी द्वारा लिखा गया है। इन पंक्तियों का बंगला से हिंदी रूपांतरण आचार्य हरी प्रसाद द्विवेदी जी ने किया है। इन पंक्तियों में कविगुरु ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि किसी भी परिस्थिति में मेरे मन में आपके प्रति संदेह न हो।

व्याख्या – इन पंक्तियों में कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि हे प्रभु ! मेरी आपसे यह प्रार्थना नहीं है कि आप प्रतिदिन मुझे भय से दूर रखें। आप केवल मुझे निरोग अर्थात् स्वस्थ रखें ताकि मैं अपनी शक्ति के सहारे इस संसार रूपी सागर को पार कर सकूँ। मेरे कष्टों के भार को भले ही कम ना करो और न ही मुझे तसली दो। आपसे केवल इतनी प्रार्थना है की मेरे अंदर निर्भयता भरपूर डाल दें ताकि मैं सारी परेशानियों का डट कर सामना कर सकूँ। सुख के दिनों में भी मैं आपको एक क्षण के लिए भी ना भूलूँ अर्थात् हर क्षण आपको याद करता रहूँ। दुःख से भरी रात में भी अगर कोई मेरी मदद न करे तो भी मेरे प्रभु मेरे मन में आपके प्रति कोई संदेह न हो इतनी मुझे शक्ति देना।

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

- कवि किससे और क्या प्रार्थना कर रहा है ?

उत्तर :- कवि करुणामय ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है की उसे भले ही दुःख दर्द और कष्ट दे परन्तु उन सबसे लड़ने की शक्ति भी दे। चाहे दुःख हो या खुशी वो ईश्वर को कभी न भूले। उसके मन में कभी ईश्वर के प्रति संदेह न हो इतनी शक्ति की माँग कवि कर रहा है।

- 'विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं'- कवि इस पंक्ति के द्वारा क्या कहना चाहता है?

उत्तर :- कवि इस पंक्ति में ईश्वर से प्रार्थना करता है कि मैं ये नहीं कहता की मुझ पर कोई विपदा न आये और कोई दुःख न आये। बस मैं ये चाहता हूँ कि मुझे उन विपदाओं और कष्टों को झेलने की शक्ति या ताकत देना।

- कवि सहायक के न मिलने पर क्या प्रार्थना करता है ?

उत्तर :- कवि सहायक के न मिलने पर प्रार्थना करता है कि उसके पुरुषार्थ में कोई कमी न आये ,यदि संसार में उसे कोई हानि हो और कोई लाभ भी ना हो तो भी उसके मन की शक्ति का नाश नहीं होना चाहिए।

- अंत में कवि क्या अनुनय करता है ?

उत्तर :- अंत में कवि अनुनय करता है कि चाहे सब लोग उसे धोखा दें , उसके बुरे समय में कोई उसका साथ ना दे और सब दुःख दर्द उसे घेर लें फिर भी उसका विश्वास ईश्वर पर कभी कम नहीं होगा। ईश्वर के प्रति उसकी आस्था कभी कम नहीं होगी।

- 'आत्मत्राण ' शीर्षक की सार्थकता कविता के सन्दर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- 'आत्मत्राण' का अर्थ है आत्मा का त्राण अर्थात् आत्मा या मन के भय का निवारण या भय की मुक्ति। कवि ईश्वर से यह प्रार्थना नहीं कर रहा है कि उसे दुःख ना मिले बल्कि वह मिले हुए दुःखों को सहने और झेलने की शक्ति ईश्वर से मांग रहा है। अतः यह शीर्षक पूर्णतया सार्थक है।

- अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना के अतिरिक्त आप और क्या – क्या प्रयास करते हैं ? लिखिए।

उत्तर :- अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना के अतिरिक्त परिश्रम ,संघर्ष ,सहनशीलता और कठिनाई से परेशानियों का सामना करना जैसे प्रयास आवश्यक हैं। धैर्य पूर्वक हम इन प्रयासों के जरिये अपनी इच्छाओं को पूरा करने का प्रयास करते हैं।

- क्या कवि की यह प्रार्थना आपको अन्य प्रार्थना गीतों से अलग लगती है। यदि हाँ, तो कैसे ?

उत्तर :- यह प्रार्थना गीत अन्य प्रार्थना गीतों से भिन्न है क्योंकि अन्य गीतों में ईश्वर से दुःख दर्द ,कष्टों को दूर करने और सुख शांति की कामना की जाती है। परन्तु इस गीत में ईश्वर से दुःख दर्द और कष्टों को दूर करने के लिए नहीं बल्कि उन दुःख दर्द और कष्टों को सहने की और झेलने की शक्ति देने के लिए कहा है।

निम्नलिखित अंशों के भाव स्पष्ट कीजिए –

- *नत शिर होकर सुख के दिन में
तव मुख पहचानूँ छिन-छिन में।*

उत्तर :- इन पंक्तियों में कवि कह रहे हैं कि सुख के दिनों में भी ईश्वर को एक क्षण के लिए भी ना भूलूँ अर्थात् हर क्षण ईश्वर को याद करता रहूँ। मेरे प्रभु मेरे मन में आपके प्रति कोई संदेह न हो इतनी मुझे शक्ति देना।

- *हानि उठानी पड़े जगत् में लाभ अगर वंचना रही*

उत्तर :- इन पंक्तियों में कवि कह रहे हैं कि उन्हें अगर इस संसार में हानि भी उठानी पड़े और लाभ से हमेशा वंचित ही रहना पड़े तो भी कोई बात नहीं पर उनके मन की शक्ति का कभी नाश नहीं होना चाहिए अर्थात् उनका मन हर परिस्थिति में आत्मविश्वास से भरा रहना चाहिए।

- *तरने की हो शक्ति अनामय।*

मेरा भार अगर लघु करके न दो सांत्वना नहीं सही।

उत्तर :- इन पंक्तियों में कवि कह रहे हैं कि हे प्रभु ! आप केवल मुझे निरोग अर्थात् स्वस्थ रखें ताकि मैं अपनी शक्ति के सहारे इस संसार रूपी सागर को पार कर सकूँ। मेरे कष्टों के भार को भले ही कम ना करो और न ही मुझे तसल्ली दो। आपसे केवल इतनी प्रार्थना है की मेरे अंदर निर्भयता भरपूर डाल दें ताकि मैं सारी परेशानियों का डट कर सामना कर सकूँ।

पाठ -8

बड़े भाई साहब

लेखक परिचय

लेखक – प्रेमचंद

जन्म – 13 जुलाई 1880 (बनारस – लमही गांव)

मृत्यु – 8 अक्टूबर 1936

बड़े भाई साहब पाठ का सारांश

प्रस्तुत पाठ में एक बड़े भाई साहब हैं जो हैं तो छोटे ही परन्तु उनसे छोटा भी एक भाई है। वे उससे कुछ ही साल बड़े हैं परन्तु उनसे बड़ी – बड़ी आशाएं की जाती हैं। बड़े होने के कारण वे खुद भी यही चाहते हैं कि वे जो भी करें छोटे भाई के लिए प्रेरणा दायक हो। भाई साहब उससे पाँच साल बड़े हैं, परन्तु तीन ही कक्षा आगे पढ़ते हैं। वे अपनी शिक्षा की नींव मज़बूती से डालना चाहते थे ताकि वे आगे चल कर अच्छा मुकाम हासिल कर सकें। वे हर कक्षा में एक साल की जगह दो साल लगाते थे और कभी- कभी तो तीन साल भी लगा देते थे। वे हर वक्त किताब खोल कर बैठे रहते थे।

लेखक का मन पढ़ाई में बिलकुल भी नहीं लगता था। अगर एक घंटे भी किताब ले कर बैठना पड़ता तो यह उसके लिए किसी पहाड़ को चढ़ने जितना ही मुश्किल काम था। जैसे ही उसे ज़रा सा मौका मिलता वह खेलने के लिए मैदान में पहुँच जाता था। लेकिन जैसे ही खेल खत्म कर कमरे में आता तो भाई साहब का वो गुस्से वाला रूप देखा कर उसे बहुत डर लगता था। बड़े भाई साहब छोटे भाई को डाँटते हुए कहते हैं कि वह इतना सुस्त है कि बड़े भाई को देख कर कुछ नहीं सीखता। अगर लेखक अपनी उम्र इसी तरह गवाना चाहता है तो उसे घर चले जाना चाहिए और वहां मजे से गुल्ली – डंडा खेलना चाहिए। कम से कम दादा की मेहनत की कमाई तो ख़राब नहीं होगी।

भाई साहब उपदेश बहुत अच्छा देते थे। ऐसी-ऐसी बातें करते थे जो सीधे दिल में लगती थीं लेकिन भाई साहब की डाँट – फटकार का असर एक दो घंटे तक ही रहता था और वह इरादा कर लेता था कि आगे से खूब मन लगाकर पढ़ाई करेगा। यही सोच कर जल्दी जल्दी एक समय

सारणी बना देता।परन्तु समय सारणी बनाना अलग बात होती है और उसका पालन करना अलग बात होती है।

वार्षिक परीक्षा हुई। भाई साहब फेल हो गए और लेखक पास हो गया और लेखक अपनी कक्षा में प्रथम आया। अब लेखक और भाई साहब के बीच केवल दो साल का ही अंतर रह गया था। इस बात से उसे अपने ऊपर घमण्ड हो गया था और उसके अंदर आत्मसम्मान भी बड़ गया था। बड़े भाई साहब लेखक को कहते हैं कि वे ये मत सोचो कि वे फेल हो गए हैं, जब वह उनकी कक्षा में आएगा, तब उसे पता चलेगा कि कितनी मेहनत करनी पड़ती है। जब अलजेबरा और जामेट्री करते हुए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा और इंग्लिस्तान का इतिहास याद करना पड़ेगा तब उसे पता चलेगा। बादशाहों के नाम याद रखने में ही कितनी परेशानी होती है। परीक्षा में कहा जाता है कि -‘समय की पाबंदी’ पर निबंध लिखो, जो चार पन्नों से कम नहीं होना चाहिए।

अब आप अपनी कॉपी सामने रख कर अपनी कलम हाथ में लेकर सोच-सोच कर पागल होते रहो। लेखक सोच रहा था कि अगर पास होने पर इतनी बेज्जती हो रही है तो अगर वह फेल हो गया होता तो पता नहीं भाई साहब क्या करते, शायद उसके प्राण ही ले लेते। लेकिन इतनी बेज्जती होने के बाद भी पुस्तकों के प्रति उसकी कोई रूचि नहीं हुई। खेल-कूद का जो भी अवसर मिलता वह हाथ से नहीं जाने देता। पढ़ता भी था, लेकिन बहुत कम। बस इतना पढ़ता था की कक्षा में बेज्जती न हो।

Individual Tuition Concept

फिर से सालाना परीक्षा हुई और कुछ ऐसा इतिफाक हुआ कि लेखक फिर से पास हो गया और भाई साहब इस बार फिर फेल हो गए।जब परीक्षा का परिणाम सुनाया गया तो भाई साहब रोने लगे और लेखक भी रोने लगा। अब भाई साहब का स्वभाव कुछ नरम हो गया था। कई बार लेखक को डाँटने का अवसर होने पर भी वे लेखक को नहीं डाँटते थे ,शायद उन्हें खुद ही लग रहा था कि अब उनके पास लेखक को डाँटने का अधिकार नहीं है और अगर है भी तो बहुत कम। अब लेखक की स्वतंत्रता और भी बड़ गई थी। वह भाई साहब की सहनशीलता का गलत उपयोग कर रहा था। उसके अंदर एक ऐसी धारणा ने जन्म ले लिया था कि वह चाहे पढ़े या न पढ़े, वह तो पास हो ही जायेगा । उसकी किस्मत बहुत अच्छी है इसीलिए भाई साहब के डर से जो थोड़ा बहुत पढ़ लिया करता था, वह भी बंद हो गया। अब लेखक को पतंगबाज़ी का नया शौक हो गया था और अब उसका सारा समय पतंगबाज़ी में ही गुजरता था। फिर भी, वह भाई

साहब की इज्जत करता था और उनकी नजरों से छिप कर ही पतंग उड़ाता था। एक दिन शाम के समय ,हॉस्टल से दूर लेखक एक पतंग को पकड़ने के लिए बिना किसी की परवाह किए दौड़ा जा रहा था।

अचानक भाई साहब से उसका आमना -सामना हुआ, वे शायद बाजार से घर लौट रहे थे। उन्होंने बाजार में ही उसका हाथ पकड़ लिया और बड़े क्रोधित भाव से बोले 'इन बेकार के लड़कों के साथ तुम्हें बेकार के पतंग को पकड़ने के लिए दौड़ते हुए शर्म नहीं आती ? तुम्हें इसका भी कोई फर्क नहीं पड़ता कि अब तुम छोटी कक्षा में नहीं हो ,बल्कि अब तुम आठवीं कक्षा में हो गए हो और मुझसे सिर्फ एक कक्षा पीछे पड़ते हो। आखिर आदमी को थोड़ा तो अपनी पदवी के बारे में सोचना चाहिए। समझ किताबें पढ़ लेने से नहीं आती, बल्कि दुनिया देखने से आती है। बड़े भाई साहब लेखक को कहते हैं कि यह घमंड जो अपने दिल में पाल रखा है कि बिना पढ़े भी पास हो सकते हो और उन्हें लेखक को डाँटने और समझने का कोई अधिकार नहीं रहा, इसे निकाल डालो। बड़े भाई साहब के रहते लेखक कभी गलत रस्ते पर नहीं जा सकता। बड़े भाई साहब लेखक से कहते हैं कि अगर लेखक नहीं मानेगा तो भाई साहब थप्पड़ का प्रयोग भी कर सकते हैं और उसको उनकी बात अच्छी नहीं लग रही होगी।

लेखक भाई साहब की इस समझाने की नई योजना के कारण उनके सामने सर झुका कर खड़ा था। आज लेखक को सचमुच अपने छोटे होने का एहसास हो रहा था न केवल उम्र से बल्कि मन से भी और भाई साहब के लिए उसके मन में इज्जत और भी बढ़ गई। लेखक ने उनके प्रश्नो का उत्तर नम आँखों से दिया कि भाई साहब जो कुछ कह रहे हैं वो बिलकुल सही है और उनको ये सब कहने का अधिकार भी है।

भाई साहब ने लेखक को गले लगा दिया और कहा कि वे लेखक को पतंग उड़ाने से मना नहीं करते हैं। उनका भी मन करता है कि वे भी पतंग उड़ाएँ। लेकिन अगर वे ही सही रास्ते से भटक जायेंगे तो लेखक की रक्षा कैसे करेंगे ? बड़ा भाई होने के नाते यह भी तो उनका ही कर्तव्य है।

इतिफाक से उस समय एक कटी हुई पतंग लेखक के ऊपर से गुज़री। उसकी डोर कटी हुई थी और लटक रही थी। लड़कों का एक झुण्ड उसके पीछे-पीछे दौड़ रहा था। भाई साहब लम्बे तो थे ही, उन्होंने उछाल कर डोर पकड़ ली और बिना सोचे समझे हॉस्टल की ओर दौड़े और लेखक भी उनके पीछे -पीछे दौड़ रहा था।

प्रस्तुत पाठ में भी एक बड़े भाई साहब हैं जो हैं तो छोटे ही परन्तु उनसे छोटा भी एक भाई है। वे उससे कुछ ही साल बड़े हैं परन्तु उनसे बड़ी बड़ी आशाएं की जाती हैं। बड़े होने के कारण वे खुद भी यही चाहते हैं कि वे जो भी करें छोटे भाई के लिए प्रेरणा दायक हो। इस आदर्श स्थिति को बनाये रखने के कारण बड़े भाई साहब का बचपन अदृश्य अर्थात् नष्ट हो गया।

शब्दार्थ

दर्जा	: कक्षा
तालीम	: शिक्षा
बुनियाद	: नींव
आलीशान	: बहुत सुन्दर
पुख्ता	: सही
पायेदार	: ऐसी वस्तु जिसके पैर हो , मज़बूत
तम्बीह	: डाँट -डपट
निगरानी	: देखरेख
जन्मसिद्ध	: जन्म से ही प्राप्त
शालीनता	: समझदारी
हुक्म	: आज्ञा, आदेश
अध्ययनशील	: पढाई को महत्त्व देने वाला
हाशियों	: किनारों
सामंजस्य	: ताल मेल
मसलन	: उदाहरणतः

इबारत	: लेख
चेष्टा	: कोशिश
जमात	: कक्षा
कंकरियाँ	: पत्थर के छोटे टुकड़े
रूद्र रूप	: भयानक या घुसे वाला रूप
प्राण सूख जाना	: बुरी तरह डर जाना
मौन	: चुप
स्नेह	: प्रेम
रोष	: गुस्सा
सत्कार	: स्वागत
अपराध	: गलती
हर्फ़	: अक्षर
खून जलाना	: कड़ी मेहनत करना
घोंघा	: आलसी जीव
सबक	: सीखना
कसूर	: गलती
लताड़	: डाँट फटकार
निपूर्ण	: बहुत अच्छे
सूक्ति-बाण	: व्यंग्यात्मक कथन, चुभती बातें

INTERVAL

Individual Tuition Concept

जिगर	: हृदय, दिल
निराशा	: दुःख
बूते	: बस
मंज़ूर	: स्वीकार
टाइम टेबल	: समय सारणी
स्कीम	: योजना
प्रातः काल	: सुबह का समय
टहलना	: घूमना
अमल करना	: पालन करना
अवहेलना	: तिरस्कार
अज्ञात	: जिसे जानते न हो
अनिवार्य	: जरूरी
जानलेवा	: जान के लिए खतरा
नसीहत	: सलाह
फ़ज़ीहत	: अपमान
चेष्टा	: कोशिश
दबे पाँव	: बिना आवाज़ के
विपत्ति	: मुसीबत
फटकार	: डाँट

घुड़कियाँ : गुस्से से भरी बातें सुनना

तिरस्कार : अपमान

सालाना : वार्षिक

इम्तिहान : परीक्षा

अव्वल : प्रथम

लज्जास्पद : शर्मनाक

अभिमान : घमण्ड

रौब : डर

शरीक : शामिल

हेकडी : घमण्ड

ज़ाहिर : स्पष्ट

आंतक : भय

भाँप लिया : जान लिया

सहज बुद्धि : सामान्य बुद्धि

हस्ती : अस्तित्व

चरित्र : व्यवहार

महज़ : सिर्फ

भूमण्डल : पूरी धरती

आधिपत्य : गुलामी

Individual Tuition Concept

स्वाधीन	: स्वतंत्र
महीप	: राजा
कुकर्म	: बुरा काम
अभिमान	: घमण्ड
सफ़ाचट	: बिलकुल साफ़
सिफ़र	: शून्य
पनाह	: शरण
निर्दयी	: जिसमें दया न हो
मुमतहिनों	: परीक्षक
हिमाकत	: बेवकूफी
किफ़ायत	: बचत से
दुरूपयोग	: अनुचित उपयोग
तमीज़	: अच्छे -बुरे की पहचान
पापड बेलना	: कठिन काम
आटे -दाल का भाव	: सारी बाते पता चलना
निःस्वाद	: बिना स्वाद का
ताज्जुब	: आश्चर्य
ज्यों की त्यों	: जैसे की तैसी
जलील	: बेशर्म

लुप्त	: गायब
अचरज	: हैरानी
प्राणांतक	: बहुत अधिक कठिन परिश्रम
कांतिहीन	: बिना किसी चमक के
विधि	: किस्मत
स्वच्छंदता	: स्वतंत्रता
सहिष्णुता	: सहनशीलता
अनुचित	: गलत
कनकौए	: पतंग
अदब	: इज्जत
मुठभेड़	: आमना -सामना
उग्र	: क्रोध
लिहाज	: शर्म
जमात	: कक्षा
पोज़िशन	: पदवी
महज़	: सिर्फ
समकक्ष	: एक ही कक्षा में
तजुरबा	: अनुभव
हाथ -पाँव फूल जाना	: परेशान हो जाना

Individual Tuition Concept

बदहवास	: बोखलाना
मरज़	: बीमारी
मुहताज	: दूसरों पर आश्रित
कुटुम्ब	: परिवार
युक्ति	: योजना
सजल	: नमी वाली
बेतहाशा	: बिना सोचे समझे

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

- छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम – टेबल बनाते समय क्या क्या सोचा और फिर उसका पालन क्यों नहीं कर पाया ?

उत्तर :- छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम – टेबल बनाते समय सोचा कि वह मन लगाकर पढ़ाई करेगा और बड़े भाई को कभी शिकायत का मौका नहीं देगा। सुबह छः से रात ग्यारह बजे तक सभी विषयों को पढ़ने का कार्यक्रम रखा गया। परन्तु पढ़ाई करते समय खेल के मैदान, वॉलीबॉल की तेजी, कबड्डी और गुल्ली -डंडे का खेल उसे अपनी ओर खींचते थे इसीलिए वह टाइम टेबल का पालन नहीं कर पाया।

- एक दिन जब गुल्ली -डंडा खेलने के बाद छोटा भाई बड़े भाई साहब के सामने पहुंचा तो उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई ?

उत्तर :- एक दिन जब गुल्ली -डंडा खेलने के बाद छोटा भाई बड़े भाई साहब के सामने पहुंचा तो उनकी प्रतिक्रिया बहुत भयानक थी। वह बहुत गुस्से में थे। उन्होंने छोटे भाई को डांटते हुए कहा कि प्रथम दर्जे में पास होने का उसे घमण्ड हो गया है और घमण्ड के कारण रावण जैसे भूमण्डल के स्वामी का भी नाश हो गया था तो हम तो फिर भी साधारण इंसान हैं। बड़े भाई साहब ने छोटे भाई को गुल्ली – डंडा खेलने के बजाये पढ़ाई में ध्यान देने की नसीहत दी।

- बड़े भाई साहब को अपने मन की बात क्यों दबानी पड़ती थी ?

उत्तर-: बड़े भाई साहब और छोटे भाई की उम्र में पांच साल का अंतर था। वे माता पिता से दूर हॉस्टल में रहते थे। बड़े भाई साहब का भी मन खेलने ,पतंग उड़ाने और तमाशे देखने का करता था परन्तु वे सोचते थे की अगर वो बड़े होकर मनमानी करेंगे तो छोटे भाई को गलत रास्ते पर जाने से कैसे रोकेंगे। बड़े भाई साहब छोटे भाई का ध्यान रखना अपना कर्तव्य मानते थे इसीलिए उन्हें अपनी इच्छाएँ दबानी पड़ती थी।

- बड़े भाई साहब छोटे भाई को क्या सलाह देते थे और क्यों ?

उत्तर -: बड़े भाई साहब चाहते थे कि छोटा भाई खेल – कूद में ज्यादा ध्यान न देकर पढ़ाई में ध्यान दे। वे छोटे भाई को हमेशा सलाह देते थे कि अंग्रेजी में ज्यादा ध्यान दो ,अंग्रेजी पढ़ना हर किसी के बस की बात नहीं है। अगर पढ़ाई में ध्यान नहीं दोगे तो उसी कक्षा में रह जाओगे। इसलिए बड़े भाई साहब छोटे को खेलकूद से ध्यान हटाने की सलाह देते थे।

- छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार का क्या फायदा उठाया ?

उत्तर -: छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार का अनुचित लाभ उठाया। उसपर बड़े भाई का डर कम हो गया। भाई के डर से जो थोड़ी बहुत पढ़ाई करता था वह भी बंद कर दी थी क्योंकि छोटे भाई को लगता था कि वह पढ़े या ना पढ़े पास हो ही जायेगा। वह अपना सारा समय मौज मस्ती और खेल के मैदान में बिताने लगा था।

- बड़े भाई की डाँट फटकार अगर ना मिलती, तो क्या छोटा भाई कक्षा में अब्बल आता ?अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर -: बड़े भाई साहब को अपनी जिम्मेदारियों का आभास था वे जानते थे कि अगर वह अनुशासन हीनता करेंगे तो छोटे भाई को गलत रास्ते पर जाने से नहीं रोक पाएंगे। छोटा भाई जब भी खेल कूद में ज्यादा समय लगाता तो बड़े भाई साहब उसे डाँट लगाते और पढ़ाई में ध्यान लगाने को कहते। यह बड़े भाई का ही डर था कि छोटा भाई थोड़ा बहुत पढ़ लेता था। अगर बड़े भाई साहब छोटे भाई को डाँट फटकार नहीं लगते तो छोटा भाई कभी कक्षा में अब्बल नहीं आता।

- बड़े भाई साहब पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के किन तौर तरीकों पर व्यंग्य किया है? क्या आप उनके विचारों से सहमत हैं ?

उत्तर-: बड़े भाई साहब पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के तौर तरीकों पर व्यंग्य करते हुए कहा है कि ये शिक्षा अंग्रेजी बोलने ,पढ़ने पर जोर देती है चाहे किसी को अंग्रेजी पढ़ने में रुचि है या नहीं। अपने देश के इतिहास के साथ साथ दूसरे देशों के इतिहास को भी पढ़ना पढ़ता है जो बिलकुल भी जरूरी नहीं है। यहाँ पर रटने वाली प्रणाली पर जोर दिया जाता है। बच्चों को कोई विषय समझ में आये या ना आये रट कर परीक्षा में पास हो ही जाते हैं। छोटे -छोटे विषयों पर लम्बे -लम्बे निबंध लिखने होते हैं। ऐसी शिक्षा प्रणाली जो लाभदायक कम और बोझ ज्यादा लगे ठीक नहीं है।

- बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ कैसे आती है ?

उत्तर -: बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ केवल किताबी ज्ञान से नहीं आती। बल्कि जीवन के अनुभवों से आती है। इसके लिए उन्होंने अपनी अम्मा ,दादा और हेडमास्टर की माँ के उदाहरण भी दिए हैं। उनका कहना है कि हम इतने पढ़े होने के बाद भी अगर बीमार भी पड़ जाते हैं तो परेशान हो जाते हैं लेकिन हमारे माँ दादा बिना पढ़े भी हर मुसीबत का सामना बड़ी आसानी से करते हैं इसमें केवल इतना ही फर्क है कि उनके पास हमसे ज्यादा जीवन का अनुभव है। बड़े भाई के अनुसार अनुभव ही समझ दिलाता है।

- छोटे भाई के मन में बड़े भाई के प्रति श्रद्धा क्यों उत्पन्न हुई ?

उत्तर -: एक दिन शाम के समय ,हॉस्टल से दूर जब छोटा भाई एक पतंग को पकड़ने के लिए बिना किसी की परवाह किये दौड़ा जा रहा था, अचानक भाई साहब से उसका आमना -सामना हुआ। उन्होंने बाजार में ही उसका हाथ पकड़ लिया और बड़े क्रोधित भाव से बोले 'लेखक भले ही बहुत प्रतिभावान है ,इसमें कोई शक नहीं है ,लेकिन जो प्रतिभा किसी को शर्म लिहाज़ न सिखाये वो किस काम की। बड़े भाई साहब कहते हैं कि लेखक भले ही अपने मन में सोचता होगा कि वह उनसे सिर्फ एक ही कक्षा पीछे रह गया है और अब उन्हें लेखक को डाँटने या कुछ कहने का कोई हक नहीं है ,लेकिन ये सोचना लेखक की गलती है। बड़े भाई साहब उससे पांच साल बड़े हैं और हमेशा ही रहेंगे । समझ किताबें पढ़ लेने से नहीं आती ,बल्कि दुनिया देखने से आती है। बड़े भाई साहब लेखक को कहते हैं कि यह घमंड जो उसने दिल में पाल रखा है कि वह बिना

पड़े भी पास हो सकता है और भाई साहब को उसे डाँटने और समझने का कोई अधिकार नहीं रहा, इसे निकल डाले। बड़े भाई साहब के रहते लेखक कभी गलत रास्ते पर नहीं जा सकता। बड़े भाई साहब लेखक से कहते हैं कि अगर लेखक नहीं मानेगा तो भाई साहब थप्पड़ का प्रयोग भी कर सकते हैं और बड़े भाई साहब लेखक को कहते हैं कि उसको उनकी बात अच्छी नहीं लग रही होगी। छोटा भाई, भाई साहब की इस समझने की नई योजना के कारण उनके सामने सर झुका कर खड़ा था। आज उसे सचमुच अपने छोटे होने का एहसास हो रहा था न केवल उम्र से बल्कि मन से भी और भाई साहब के लिए उसके मन में इज्जत और भी बढ़ गई।

- बड़े भाई साहब की स्वभावगत विशेषताएँ बताइए।

उत्तर :- बड़े भाई साहब अध्ययनशील थे। हमेशा किताबें खोल कर बैठे रहते थे। दिन रात कठिन परिश्रम करते थे। चाहे उन्हें समझ में आये या ना आये, वे फिर भी एक-एक अक्षर को रट लिया करते थे। अपने बड़े होने का उन्हें एहसास है, इसलिए वे छोटे भाई को तरह-तरह से समझते हैं। अपने कर्तव्य के लिए वे अपनी बहुत सी इच्छाओं को दबा देते थे। छोटे भाई को किताबी ज्ञान से हट कर अनुभव के महत्त्व को समझते थे और कहते थे कि उनके रहते वह कभी गलत रास्ते पर नहीं चल पायेगा।

- बड़े भाई साहब ने जिंदगी के अनुभव और किताबी ज्ञान में से किसे और क्यों महत्पूर्ण कहा है ?

Individual Tuition Concept

उत्तर :- बड़े भाई साहब ने जिंदगी के अनुभव और किताबी ज्ञान में से जिंदगी के अनुभव को महत्पूर्ण कहा है। उन्होंने पाठ में कई उदाहरणों से ये स्पष्ट किया है। अम्मा और दादा का उदाहरण और हेडमास्टर का उदाहरण दे कर बड़े भाई साहब कहते हैं कि चाहे कितनी भी बड़ी डिग्री क्यों न हो जिंदगी के अनुभव के आगे बेकार है। जिंदगी की कठिन परिस्थितियों का सामना अनुभव के आधार पर सरलता से किया जा सकता है।

बताइये पाठ के किन अंशों से पता चलता है कि

(क) छोटा भाई बड़े भाई का आदर करता था।

उत्तर :- छोटे भाई को पतंगबाज़ी का नया शौक हो गया था और अब उसका सारा समय पतंगबाज़ी में ही गुजरता था। फिर भी वह भाई साहब की इज्जत करता था और उनकी नजरों से छिप कर ही पतंग उड़ाता था। मांझा देना, कन्ने बाँधना, पतंग टूर्नामेंट की तैयारियाँ ये सब काम भाई साहब से छुप कर किया जाता था।

(ख) भाई साहब को जिंदगी का अच्छा अनुभव है।

उत्तर -: भाई साहब का अपने कर्तव्यों के लिए अपनी इच्छाओं को दबाना ,छोटे भाई को जीवन के अनुभव पर उदाहरण देना ये सब दर्शाता है कि भाई साहब को जिंदगी का अच्छा अनुभव है।

(ग) भाई साहब के भीतर भी एक बच्चा है।

उत्तर -: जब भाई साहब ने कटी पतंग देखी तो लम्बे होने की वजह से उन्होंने उछाल कर डोर पकड़ ली और बिना सोचे समझे हॉस्टल की ओर दौड़े ,ये दर्शाता है की भाई साहब के अंदर भी एक बच्चा है।

(घ) भाई साहब छोटे भाई का भला चाहते हैं।

उत्तर -: भाई साहब हर समय छोटे भाई को पढ़ने के लिए कहते हैं ,समय व्यर्थ करने पर डाँटते है और चाहते है की वह कभी गलत रास्ते पर ना जाये।

INTERVAL

Individual Tuition Concept

पाठ -9

डायरी का एक पन्ना

लेखक परिचय

लेखक – सीताराम सेकसरिया

जन्म – 1892 (राजस्थान -नवलगढ़)

मृत्यु – 1982

डायरी का एक पन्ना पाठ का सारांश

प्रस्तुत पाठ के लेखक सीताराम सेकसरिया आज़ादी की इच्छा रखने वाले महान इंसानों में से एक थे। वह दिन -प्रतिदिन जो भी देखते थे ,सुनते थे और महसूस करते थे ,उसे अपनी एक निजी डायरी में लिखते रहते थे।इस पाठ में उनकी डायरी का 26 जनवरी 1931 का लेखाजोखा है जो उन्होंने खुद अपनी डायरी में लिखा था।

लेखक कहते हैं कि 26 जनवरी 1931 का दिन हमेशा याद रखा जाने वाला दिन है। 26 जनवरी 1930 के ही दिन पहली बार सारे हिंदुस्तान में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था और 26 जनवरी 1931 को भी फिर से वही दोहराया जाना था,जिसके लिए बहुत सी तैयारियाँ पहले से ही की जा चुकी थी। सिर्फ़ इस दिन को मानाने के प्रचार में ही दो हज़ार रूपये खर्च हुए थे। सभी मकानों पर भारत का राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था और बहुत से मकान तो इस तरह सजाए गए थे जैसे उन्हें स्वतंत्रता मिल गई हो। कलकत्ते के लगभग सभी भागों में झंडे लगाए गए थे।पुलिस अपनी पूरी ताकत के साथ पुरे शहर में पहरे लिए घूम -घूम कर प्रदर्शन कर रही थी।न जाने कितनी गाड़ियाँ शहर भर में घुमाई जा रही थी। घुडसवारों का भी प्रबंध किया गया था।

स्मारक के निचे जहाँ शाम को सभा होने वाली थी, उस जगह को तो सुबह के छः बजे से ही पुलिस ने बड़ी संख्या में आकर घेर कर रखा था, इतना सब कुछ होने के बावजूद भी कई जगह पर तो सुबह ही लोगों ने झंडे फहरा दिए थे। तारा सुंदरी पार्क में बड़ा बाजार कांग्रेस कमेटी के युद्ध मंत्री हरिश्चंद्र सिंह झंडा फहराने गए परन्तु वे पार्क के अंदर ही ना जा सके। वहां पर भी काफी मारपीट हुई और दो – चार आदमियों के सर फट गए। मारवाड़ी बालिका विद्यालय की लड़कियों ने अपने विद्यालय में झंडा फहराने का समारोह मनाया। वहाँ पर जानकी देवी, मदालसा बजाज – नारायण आदि स्वयंसेवी भी आ गए थे। उन्होंने लड़कियों को उत्सव का मतलब समझाया। दो – तीन बाजे पुलिस कई आदमियों को पकड़ कर ले गई। जिनमें मुख्य कार्यकर्ता पूर्णोदास और पुरुषोत्तम राय थे। सुभाष बाबू के जुलूस की पूरी ज़िम्मेवारी पूर्णोदास पर थी (उन्हें पुलिस ने पकड़ लिया था) परन्तु वे पहले से ही अपना काम कर चुके थे। स्त्रियाँ अपनी तैयारियों में लगी हुई थी। अलग अलग जगहों से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने और सही जगह पर पहुँचने की कोशिश में लगी हुई थी।

जब से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कानून तोड़ने का सिलसिला शुरू हुआ था तब से आज 26 जनवरी 1931 तक इतनी बड़ी सभा ऐसे खुले मैदान में कभी नहीं हुई थी और ये सभा तो कह सकते हैं की सबके लिए ओपन लड़ाई थी। एक ओर पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाल दिया था कि अमुक-अमुक धारा के अनुसार कोई भी, कहीं भी, किसी भी तरह की सभा नहीं कर सकते हैं। अगर किसी भी तरह से किसी ने सभा में भाग लिया तो वे दोषी समझे जायेंगे। इधर परिषद् की ओर से नोटिस निकाला गया था कि ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर स्मारक के निचे झंडा फहराया जायेगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सभी लोगो को उपस्थित रहने के लिए कहा गया था। ठीक चार बजकर दस मिनट पर सुभाष बाबू अपना जुलूस ले कर मैदान की ओर निकले। जब वे लोग मैदान के मोड़ पर पहुंचे तो पुलिस ने उनको रोकने के लिए लाठियां चलाना शुरू कर दिया। बहुत से लोग घायल हो गए। सुभाष बाबू पर भी लाठियाँ पड़ी। परन्तु फिर भी सुभाष बाबू बहुत जोर से वन्दे -मातरम बोलते जा रहे थे। इस तरफ इस तरह का माहौल था और दूसरी तरफ स्मारक के निचे सीढियों पर स्त्रियां झंडा फहरा रही थी और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ रही थी। स्त्रियाँ बहुत अधिक संख्या में आई हुई थी। सुभाष बाबू को भी पकड़ लिया गया और गाड़ी में बैठा कर लालबाज़ार लॉकअप में भेज दिया गया। कुछ देर बाद ही स्त्रियाँ वहाँ से जन समूह बना कर आगे बढ़ने लगी। उनके साथ बहुत बड़ी भीड़ भी इकट्ठी हो गई। पुलिस बीच-बीच में लाठियाँ चलाना शुरू कर देती थी। इस बार भीड़ ज्यादा थी तो आदमी

भी ज्यादा जखमी हुए। धर्मतल्ले के मोड़ पर आते – आते जुलूस टूट गया और लगभग 50 से 60 स्त्रियाँ वहीं मोड़ पर बैठ गईं।

उन स्त्रियों को लालबाज़ार ले जाया गया। और भी कई आदमियों को गिरफ्तार किया गया। मदालसा जो जानकीदेवी और जमना लाल बजाज की पुत्री थी, उसे भी गिरफ्तार किया गया था। उससे बाद में मालूम हुआ की उसको थाने में भी मारा गया था। सब मिलकर 105 स्त्रियों को गिरफ्तार किया गया था। बाद में रात नौ बजे सबको छोड़ दिया गया था। कलकत्ता में इस से पहले इतनी स्त्रियों को एक साथ कभी गिरफ्तार नहीं किया गया था। डॉक्टर दासगुप्ता उनकी देखरेख कर रहे थे और उनके फोटो खिंचवा रहे थे। उस समय तो 67 आदमी वहाँ थे परन्तु बाद में 103 तक पहुँच गए थे।

इतना सबकुछ पहले कभी नहीं हुआ था, लोगों का ऐसा प्रचंड रूप पहले किसी ने नहीं देखा था। बंगाल या कलकत्ता के नाम पर कलंक था की यहाँ स्वतंत्रता का कोई काम नहीं हो रहा है। आज ये कलंका काफी हद तक धूल गया और लोग ये सोचने लगे कि यहाँ पर भी स्वतंत्रता के विषय में काम किया जा सकता है।

प्रस्तुत पाठ के लेखक सीताराम सेकसरिया आज़ादी की इच्छा रखने वाले उन्ही महान इंसानों में से एक थे। वह दिन-प्रतिदिन जो भी देखते थे, सुनते थे और महसूस करते थे, उसे अपनी एक निजी डायरी में लिखते रहते थे। यह कई वर्षों तक इसी तरह चलता रहा। इस पाठ में उनकी डायरी का 26 जनवरी 1931 का लेखाजोखा है जो उन्होंने खुद अपनी डायरी में लिखा था।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस और स्वयं लेखक सहित कलकत्ता (कोलकता) के लोगों ने देश का दूसरा स्वतंत्रता दिवस किस जोश के साथ मनाया, अंग्रेज प्रशासकों ने इसे उनका विरोध मानते हुए उन पर और विशेषकर महिला कार्यकर्ताओं पर कैसे-कैसे जुल्म ढाए, इन सब बातों का वर्णन इस पाठ में किया गया है। यह पाठ हमारे क्रांतिकारियों की कुर्बानियों को तो याद दिलाता ही है साथ ही साथ यह भी सिखाता है कि यदि एक समाज या सभी लोग एक साथ सच्चे मन से कोई कार्य करने की ठान लें तो ऐसा कोई भी काम नहीं है जो वो नहीं कर सकते।

शब्दार्थ

अमर दिन : जिसे हमेशा याद रखा जायेगा

पुनरावृत्ति : फिर से आना

कार्यकर्ता	: स्वयंसेवक
सारजेंट	: सेना का एक पद
लारियाँ	: गाड़ियाँ
मोनुमेंट	: स्मारक
भोर	: सुबह
जुलूस	: जनसमूह या भीड़
टोलियाँ	: समूह
निराली	: अनोखी
चौरंगी	: कलकत्ता शहर में एक जगह का नाम

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए

- 26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गईं?

उत्तर -: 26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए काफ़ी तैयारियाँ की गयी थीं। केवल प्रचार पर ही दो हज़ार रूपए खर्च किये गए थे। कार्यकर्ताओं को उनका कार्य घर – घर जा कर समझाया गया था। कलकत्ता शहर में जगह – जगह झंडे लगाए गए थे। कई स्थानों पर जुलूस निकाले जा रहे थे और झंडा फहराया जा रहा था। टोलियाँ बना कर लोगो की भीड़ उस स्मारक के नीचे इकट्ठी होने लगी थी ,जहाँ सुभाष बाबू झंडा फहराने वाले थे और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढने वाले थे।

- 'आज जो बात थी,वह निराली थी '- किस बात से पता चल रहा था कि आज का दिन अपने आप में निराला है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -: आज का दिन निराला इसलिए था क्योंकि आज के ही दिन पहली बार सारे हिंदुस्तान में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था और इस साल भी फिर से वही दोहराया जाना था। सभी

मकानों पर हमारा राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था और बहुत से मकान तो इस तरह सजाए गए थे जैसे हमें स्वतंत्रता मिल गई हो। स्मारक के निचे जहाँ शाम को सभा होने वाली थी, उस जगह को तो सुबह के छः बजे से ही पुलिस ने बड़ी संख्या में आकर घेर कर रखा था ,इतना सब कुछ होने के बावजूद भी कई जगह पर तो सुबह ही लोगों ने झंडे फहरा दिए थे। स्त्रियाँ अपनी तैयारियों में लगी हुई थी। अलग अलग जगहों से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने और सही जगह पर पहुँचने की कोशिश में लगी हुई थी।

- पुलिस कमिश्नर के नोटिस और कौंसिल के नोटिस में क्या अंतर है ?

उत्तर :- पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाला था कि अमुक – अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती। यदि कोई सभा में जाता है तो उसे दोषी समझा जायेगा। कौंसिल की ओर से नोटिस निकला था कि स्मारक के निचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सर्वसाधारण की उपस्थिति होनी चाहिए। इस तरह दोनों नोटिस एक दूसरे के विरुद्ध थे।

- धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया ?

उत्तर :- जब सुभाष बाबू को गिरफ्तार करके पुलिस ले गई तो स्त्रियाँ जुलूस बना कर जेल की ओर चल पड़ी परन्तु पुलिस की लाठियों ने कुछ को घायल कर दिया ,कुछ को पुलिस गिरफ्तार करके ले गई और बची हुई स्त्रियाँ पहले तो वहीं धर्मतल्ले के मोड़ पर ही बैठ गईं। बाद में उन्हें पुलिस पकड़ कर ले गई। इस कारण धर्मतल्ले के मोड़ पर आ कर जुलूस टूट गया।

- डॉ. दास गुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देख रेख तो कर ही रहे थे ,उनके फोटो भी उतरवा रहे थे। उन लोगों के फोटो खिचवाने की क्या वजह हो सकती थी ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- डॉ. दास गुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देख रेख तो कर ही रहे थे ,उनके फोटो भी उतरवा रहे थे। उन लोगों के फोटो खिचवाने की दो वजह हो सकती थी। एक तो यह कि अंग्रेजों के अत्याचारों का खुलासा किया जा सकता था कि किस तरह उन्होंने औरतो तक को नहीं छोड़ा। दूसरी वजह यह हो सकती है कि बंगाल या कलकत्ता पर जो कलंक था कि वहाँ स्वतंत्रता

के लिए कोई काम नहीं हो रहा है, इस कलंक को कुछ हद तक धोया जा सकता था और साबित किया जा सकता था कि वहाँ भी बहुत काम हो रहा है।

- सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की क्या भूमिका थी ?

उत्तर :- सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका थी। स्त्रियों ने बहुत तैयारियाँ की थी। अलग अलग जगहों से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने और सही जगह पर पहुँचाने की कोशिश में लगी हुई थी। स्मारक के निचे सीढ़ियों पर स्त्रियाँ झंडा फहरा रही थी और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ रही थी। स्त्रियाँ बहुत अधिक संख्या में आई हुई थी। सुभाष बाबू की गिरफ्तारी के कुछ देर बाद ही स्त्रियाँ वहाँ से जन समूह बना कर आगे बढ़ने लगीं। धर्मतल्ले के मोड़ पर आते – आते जुलूस टूट गया और लगभग 50 से 60 स्त्रियाँ वही मोड़ पर बैठ गईं। उन स्त्रियों को लालबाज़ार ले जाया गया। मदालसा जो जानकीदेवी और जमना लाल बजाज की पुत्री थी, उसे भी गिरफ्तार किया गया था। उससे बाद में मालूम हुआ की उसको थाने में भी मारा गया था। सब मिलकर 105 स्त्रियों को गिरफ्तार किया गया था।

- जुलूस के लालबाज़ार आने पर लोगों की क्या दशा हुई ?

उत्तर :- जब सुभाष बाबू को गिरफ्तार करके पुलिस ले गई तो स्त्रियाँ जुलूस बना कर जेल की ओर चल पड़ीं। उनके साथ बहुत बड़ी भीड़ भी इकट्ठी हो गई। परन्तु पुलिस की लाठियों ने कुछ को घायल कर दिया, कुछ को पुलिस गिरफ्तार करके ले गई और बची हुई स्त्रियाँ वहाँ धर्मतल्ले के मोड़ पर बैठ गईं। भीड़ ज्यादा थी तो आदमी भी ज्यादा जखमी हुए। कुछ के सर फटे थे और खून बह रहा था।

- 'जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए कि ओपन लड़ाई थी।' यहाँ पर कौन ज़ोर किस के द्वारा लागू किये गए कानून को भंग करने की बात कही गई है? क्या कानून भंग करना उचित था ? पाठ के सन्दर्भ में अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर :- यहाँ पर अंग्रेज प्रशासन द्वारा सभा ना करने के कानून को भंग करने की बात कही है। ये कानून वास्तव में भारत वासियों की स्वतंत्रता को कुचलने वाला कानून था अतः इस कानून का उलंघन करना सही था। उस समय हर देशवासी स्वतंत्रता के लिए अपना सब कुछ त्यागने के लिए तैयार था और अंग्रेजी हुकूमत ने सभा करने, झंडा फहराने और जुलूस में शामिल होने को गैरकानूनी घोषित कर दिया था। अंग्रेजी प्रशासन नहीं चाहता था कि लोगो में आज़ादी की

भावना आये परन्तु अब हर देशवासी स्वतन्त्र होना चाहता था। उस समय कानून का उलंघन करना सही था।

- बहुत से लोग घायल हुए, बहुतों को लॉकअप में रखा गया ,बहुत सी स्त्रियाँ जेल गई ,फिर भी इस दिन को अपूर्व बताया गया है। आपके विचार से यह सब अपूर्व क्यों है ?अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर :- सुभाष बाबू के नेतृत्व में कलकत्ता में लोगों ने स्वतंत्रता दिवस मानाने की ऐसी तैयारियाँ की थी जैसी आज से पहले कभी नहीं हुई थी। पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाला था कि कोई भी सभा में नहीं जायेगा यदि कोई जाता है तो उसे दोषी समझा जाएगा। परन्तु लोगो ने इसकी कोई परवाह नहीं की और अपनी तैयारियों में लागे रहे। पुलिस की लाठियों से कई लोग घायल हुए ,कई लोगों को गिरफ्तार किया गया। स्त्रियों पर भी बहुत अत्याचार हुए ,इतिहास में कभी इतनी स्त्रियों को एक साथ गिरफ्तार नहीं किया गया था। इन्हीं बातों के कारण इस दिन को अपूर्व बताया गया।

निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए :-

- आज तो जो कुछ हुआ वह अपूर्व हुआ है। बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ काम नहीं हो रहा है। वह आज बहुत अंश में धूल गया।

उत्तर :- कलकत्ते के लगभग सभी भागों में झंडे लगाए गए थे। जिस भी रास्तों पर मनुष्यों का आना – जाना था, वहीं जोश ,खुशी और नया पन महसूस होता था। बड़े – बड़े पार्कों और मैदानों को सवेरे से ही पुलिस ने घेर रखा था क्योंकि वही पर सभाएँ और समारोह होना था। स्मारक के निचे जहाँ शाम को सभा होने वाली थी उस जगह को तो सुबह के छः बजे से ही पुलिस ने बड़ी संख्या में आकर घेर कर रखा था ,इतना सब कुछ होने के बावजूद भी कई जगह पर तो सुबह ही लोगों ने झंडे फहरा दिए थे। जब से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कानून तोड़ने का सिलसिला शुरू हुआ था तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे खुले मैदान में कभी नहीं हुई थी और ये सभा तो कह सकते हैं की सबके लिए ओपन लड़ाई थी।। पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकल दिया था कि अमुक -अमुक धारा के अनुसार कोई भी, कही भी, किसी भी तरह की सभा नहीं कर सकते हैं। लोगो की भीड़ इतनी अधिक थी कि पुलिस ने उनको रोकने के लिए लाठियां चलाना शुरू कर दिया। आदमियों के सर फट गए। पुलिस कई आदमियों को पकड़ कर ले

गई।अलग अलग जगहों से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने और सही जगह पर पहुँचाने की कोशिश में लगी हुई थी।इतना सब कुछ होने पर भी लोगो के सहस और जोश में कमी नहीं आई।

- खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी।

उत्तर -: जब से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कानून तोड़ने का सिलसिला शुरू हुआ था तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे खुले मैदान में कभी नहीं हुई थी और ये सभा तो कह सकते हैं की सबके लिए ओपन लड़ाई थी। पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकल दिया था कि अमुक -अमुक धारा के अनुसार कोई भी, कही भी, किसी भी तरह की सभा नहीं कर सकते हैं। जो लोग भी काम करने वाले थे उन सबको इंस्पेक्टरों के द्वारा नोटिस और सुचना दे दी गई थी अगर उन्होंने किसी भी तरह से सभा में भाग लिया तो वे दोषी समझे जायेंगे।इधर परिषद् की ओर से नोटिस निकल गया था कि ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर स्मारक के निचे झंडा फहराया जायेगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सभी लोगो को उपस्थित रहने के लिए कहा गया था। प्रशासन को इस तरह से खुली चुनौती दे कर कभी पहले इस तरह की कोई सभा नहीं हुई थी।

INTERVAL

Individual Tuition Concept

पाठ - 10

ततॉरा वामीरो कथा

लेखक परिचय

लेखक – लीलाधर मंडलोई

जन्म – 1954 (छिंदवाड़ा -गुडी)

ततॉरा वामीरो कथा पाठ का सारांश

प्रस्तुत पाठ 'ततॉरा वामीरो कथा' अंडमान निकोबार द्वीप समूह के एक छोटे से द्वीप पर केंद्रित है। उस द्वीप पर एक -दूसरे से शत्रुता का भाव अपनी अंतिम सीमा पर पहुँच चुका था। इस शत्रुता की भावना को जड़ से उखाड़ने के लिए एक जोड़े को आत्मबलिदान देना पड़ा था। उसी जोड़े के बलिदान का वर्णन लेखक ने प्रस्तुत पाठ में किया है।

बहुत समय पहले ,जब लिटिल अंडमान और कार -निकोबार एक साथ जुड़े हुए थे ,तब वहाँ एक बहुत सुंदर गाँव हुआ करता था। उसी गाँव के पास में ही एक सुंदर और शक्तिशाली युवक रहा करता था। जिसका नाम ततॉरा था। निकोबार के सभी व्यक्ति उससे बहुत प्यार करते थे। इसका एक कारण था कि ततॉरा एक भला और सबकी मदद करने वाला व्यक्ति था।जब भी कोई मुसीबत में होता तो हर कोई उसी को याद करता था और वह भी भागा -भागा वहाँ उनकी मदद करने के लिए पहुँच जाता था।

ततॉरा हमेशा अपनी पारम्परिक पोशाक ही पहनता था और हमेशा अपनी कमर में एक लकड़ी की तलवार को बाँधे रखता था। लोगों का मानना था कि उस तलवार में लकड़ी की होने के बावजूद भी अनोखी दैवीय शक्तियाँ हैं। ततॉरा कभी भी अपनी तलवार को अपने से अलग नहीं करता था। वह दूसरों के सामने तलवार का प्रयोग भी नहीं करता था। ततॉरा की तलवार जिज्ञासा पैदा करने वाला एक ऐसा राज था जिसको कोई नहीं जानता था।

एक शाम को ततॉरा दिन भर की कठोर मेहनत करने के बाद समुद्र के किनारे घूमने के लिए चल पड़ा।समुद्र से ठंडी ठंडी हवाएँ आ रही थी। शाम के समय पक्षियों की जो चहचहाहटें होती हैं वे भी धीरे -धीरे शांत हो रही थी। अपने ही विचारों में खोया हुआ ततॉरा समुद्री बालू पर बैठ कर

सूरज की आखरी किरणों को समुद्र के पानी पर देख रहा था जो बहुत रंग-बिरंगी लग रही थी। तभी कहीं से उसे मधुर संगीत सुनाई दिया जो उसी के आस पास कोई गा रहा था। ततार्रा बैचैन मन से उस दिशा की ओर बढ़ता गया। आखिरकार ततार्रा की नज़र एक युवती पर पड़ी उस युवती को यह पता नहीं था कि कोई युवक उसे बिना कुछ बोले बस देखता जा रहा है। उसी समय अचानक एक ऊँची लहर उठी और उसको भिगो कर चली गई। इस तरह अचानक भीगने से वह युवती हड़बड़ा गई और अपना गाना भूल गई। ततार्रा ने बहुत ही विनम्र तरीके से उस युवती से पूछा 'तुमने अचानक इतना सुरीला और अच्छा गाना अधूरा ही क्यों छोड़ दिया ?'

अपने सामने एक सुंदर युवक को देख कर वह युवती आश्चर्यचकित हो गई। उसने नकली नाराजगी दिखाते हुए उत्तर दिया।

“पहले ये बताओ कि तुम कौन हो, मुझे इस तरह क्यों देख रहे हो और इस तरह के अनुचित या बेकार के प्रश्न पूछने का क्या कारण है ?”

ततार्रा बार-बार अपना प्रश्न दोहराता रहा। ततार्रा के बार – बार एक ही प्रश्न को दोहराने के कारण युवती चिढ़ गई। युवती ने कहा -आखिर मैं गीत क्यों गाऊँ अर्थात् मैं तुम्हारी बात क्यों मानूँ ? क्या उसे गाँव का नियम नहीं मालूम कि एक गाँव का व्यक्ति दूसरे गाँव के व्यक्ति से बात नहीं कर सकता ? इतना कह कर वह युवती जाने के लिए तेज़ी से मुड़ी। उसके मुड़ते ही मानो ततार्रा को कुछ होश आया। अब उसे अपनी गलती का एहसास हो रहा था। ततार्रा उस युवती के सामने चला गया और उसका रास्ता रोक कर लाचारी के साथ प्रार्थना करने लगा कि तुम बस अपना नाम बता दो मैं तुम्हें जाने दूंगा। ततार्रा द्वारा नाम पूछे जाने पर युवती ने जवाब दिया " वामीरो " यह नाम सुनना ततार्रा को ऐसा लगा जैसे उसके कानों में किसी ने रस घोल दिया हो। ततार्रा ने वामीरो से कहा कि कल वह वही चट्टान पर उसकी प्रतीक्षा करेगा। वह वामीरो को जरूर आने के लिए कहता है।

वामीरो ने ततार्रा के बारे में बहुत सी कहानियाँ सुनी थी। उसकी सोच में ततार्रा एक बहुत ही शक्तिशाली युवक था। परन्तु वही ततार्रा जब वामीरो के सामने आया तो बिलकुल अलग ही रूप में था। वह सुंदर और शक्तिशाली तो था ही साथ ही साथ वह बहुत शांत, समझदार और सीधा साधा था। वह बिलकुल वैसा ही था जैसा वामीरो अपने जीवन साथी के बारे में सोचती थी। परन्तु दूसरे गाँव के युवक के साथ उसका सम्बन्ध रीति रिवाजों के विरुद्ध था। इसलिए वामीरो ने ततार्रा को भूल जाना ही समझदारी समझा। परन्तु यह आसान नहीं लग रहा था

क्योंकि तताँरा बार-बार उसकी आँखों के सामने आ रहा था जैसे वह बिना पलकों को झपकाए उसकी प्रतीक्षा कर रहा हो।

तताँरा दिन ढलने से बहुत पहले ही लपाती गाँव की उस समुद्री चट्टान पर पहुँच गया था जहाँ उसने वामीरो को आने के लिए कहा था। वामीरो के इन्तजार में उसे हर एक पल बहुत अधिक लम्बा लग रहा था। उसके अंदर एक शक भी पैदा हो गया था कि अगर वामीरो आई ही नहीं तो उसके पास प्रतीक्षा करने के अलावा और कोई चारा नहीं था। वामीरो तताँरा से मिलने आए गई।

तताँरा और वामीरो अब हर रोज उसी जगह मिलने लगे। लपाती के कुछ युवकों को इस प्रेम के बारे में पता चल गया और ये खबर हवा की तरह हर जगह फैल गई। वामीरो लपाती गाँव की रहने वाली थी और तताँरा पासा गाँव का। दोनों का सम्बन्ध किसी भी तरह संभव नहीं था। क्योंकि रीतिरिवाज़ के अनुसार दोनों के सम्बन्ध के लिए दोनों का एक ही गाँव का होना जरूरी था।

कुछ समय के बाद पासा गाँव में 'पशु पर्व' का आयोजन किया गया। पशु पर्व में हटे-कटे पशुओं के दिखावे के अलावा पशुओं से युवकों की शक्ति परखने की प्रतियोगितायें भी होती थी। तताँरा का मन इन में से किसी भी कार्यक्रम में नहीं लग रहा था। उसकी परेशान आँखें तो वामीरो को ढूँढने में व्यस्त थीं। जब तताँरा ने वामीरो को देखा तो उसकी आँखें नमी से भरी थीं और उसके होंठ डर कर काँप रहे थे। तताँरा को देखते ही वामीरो फुट-फुटकर रोने लगी। तताँरा इस तरह वामीरो को रोता देखकर भावुक हो गया। वामीरो के रोने की आवाज़ सुनकर वामीरो की माँ वहाँ आ गई और दोनों को एक साथ देख कर गुस्सा हो गई। उसने तताँरा को कई तरह से अपमानित करना शुरू कर दिया। गाँव वाले भी तताँरा के विरोध में बोलने लगे। लोगो की बातों को सुनना अब तताँरा के लिए सहन कर पाना मुश्किल हो रहा था। अचानक उसका हाथ उसकी तलवार पर आकर टिक गया। गुस्से से उसने तलवार निकली। उसने अपने गुस्से को शांत करने के लिए अपनी पूरी शक्ति से तलवार को धरती में गाड़ दिया और अपनी पूरी ताकत से उसे खींचने लगा। जो लकीर तताँरा ने खींची थी उस लकीर की सीध में धरती फटती जा रही थी। तताँरा द्वीप के एक ओर था और वामीरो दूसरी ओर। तताँरा को जैसे ही होश आया, उसने देखा कि द्वीप के जिस ओर वह है वो टुकड़ा समुद्र में धँसने लगा है। अब वह तड़पने लगा, वह छलांग लगा कर दूसरी ओर जाना चाहता था परन्तु उसकी पकड़ ढीली पड़ गई और वह निचे की ओर फिसलने लगा। वह उस कटे हुए द्वीप के उस आखरी भू-भाग पर बेहोश पड़ा हुआ था जो संयोगवश उस द्वीप से जुड़ा हुआ था। बहता हुआ तताँरा कहा गया, उसके बाद उसका क्या

हुआ ये कोई नहीं जान सका। इधर वामीरो तताँरा से अलग होने के कारण पागल हो गई। वह हर समय बस तताँरा को ही खोजती रहती और उसी जगह आकर घंटों बैठी रहती जहाँ वो तताँरा से मिलने आया करती थी। उसने खाना -पीना छोड़ दिया था। परिवार से वह कही अलग हो गई। लोगो ने उसे ढूँढने की बहुत कोशिश की परन्तु अब वामीरो का भी कोई सुराग नहीं मिला कि वह कहा गई।

आज ना तो तताँरा है और ना ही वामीरो है,परन्तु फिर भी आज उनकी प्रेमकथा हर घर में सुनाई जाती है। निकोबार के निवासियों का मानना है कि तताँरा की तलवार से कार -निकोबार के जो दो टुकड़े हुए, उसमे से दूसरा टुकड़ा आज लिटिल अंदमान के नाम से प्रसिद्ध है जो कार -निकोबार से 96 कि.मी. दूर स्थित है।निकोबार निवासीयों ने इस घटना के बाद अपनी परम्परा को बदला और दूसरे गाँव में भी विवाह सम्बन्ध बनने लगे। तताँरा – वामीरो की जो एक -दूसरे के लिए त्यागमयी मृत्यु थी वह शायद इसी सुखद बदलाव के लिए थी।

शब्दार्थ

अंतिम	: आखरी
पोर्ट ब्लेयर	: अंदमान निकोबार द्वीप समूह की राजधानी
शृंखला	: सीमा
आदिम	: प्राचीन
सदियों पूर्व	: बहुत समय पहले
सदैव	: हमेशा
तत्पर	: तैयार
समूचे	: सारे
स्मरण	: याद
विशेष	: मुख्य

आमंत्रित	: बुलाना
आत्मीय	: अपना
अद्भुत	: अनोखी
साहसिक कारनामों	: सहस से पूर्ण कार्य
विलक्षण	: जिज्ञासा उत्पन्न करने वाला
रहस्य	: राज, जो कोई न जानता हो
अथक	: कठोर
क्षितिज	: जहाँ धरती और आसमान मिलते हुए प्रतीत हों
बयारों	: हवाएँ
शनैः शनैः	: धीरे धीरे
गायन	: गीत
सुध बुध	: होश हवास
तन्द्रा	: नींद आने से पहले की अवस्था
चैतन्य	: होश में आना
विवश	: मजबूर
विकल	: बैचेन
बेसुध	: जिसे कोई खबर न हो
निःशब्द	: जो कुछ न बोल रहा हो
विस्मित	: आश्चर्यचकित

बेरुखी	: नाराजगी
असंगत	: अनुचित
बाध्य	: विवश
सम्मोहित	: मुग्ध किया हुआ
विनय	: प्रार्थना
झुँझला	: चिढ़ना
ढीठता	: दुःसाहस
विचलित	: अस्थिर
विवशता	: लाचारी
याचना	: प्रार्थना
अन्यमनस्कतापूर्वक	: बिना सोचे समझे

निहारना	: देखना
झल्लाहट	: बौखलाहट
सम्मुख	: सामने
बलिष्ठ	: बलवान
परम्परा	: रीति रिवाज
श्रेयस्कर	: कल्याणकर
निर्निमेष	: बिना पालक झपकाए
व्यथित	: अप्रसन्न

अँचरहित	: बिना गर्मी का
ऊबाऊ	: बेकार
अचंभित	: आश्चर्यचकित
आशंका	: शक
आस	: उम्मीद
सहसा	: अचानक
निहारना	: देखना
सचेत	: होश में आना
निश्चल	: जो अपने स्थान से हटे नहीं
शब्दहीन	: जो कुछ न बोल सके
मूर्तिवत	: मूर्ति की तरह
निर्निमेष	: एकटक
अनवरत	: जिसे रोक न जा सके
अडिग	: डटे रहना
नियमतः	: नियम के अनुसार
हृष्ट पुष्ट	: हटे कटे
प्रदर्शन	: दिखाना
व्याकुल	: परेशान
चेष्टा	: कोशिश

विह्वल	: भावुक
किंकर्तव्यविमूढ	: हका बका होना
असहनीय	: जो सहन न हो सके
निषेध	: जो न किया जा सके
क्षोभ	: बहुत अधिक गुस्सा
खीझ	: चीड़
अनायास	: अचानक
शमन	: शांत
दुर्भाग्यवंश	: बदकिस्मती
विभक्त	: अलग
छटपटाने	: तड़फने
अचेत	: बेहोश
भूखंड	: भूमि का टुकड़ा
विलग	: अलग

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए

- ततॉरा की तलवार के बारे में लोगों का क्या मत था ?

उत्तर:- ततॉरा हमेशा अपनी पारम्परिक पोशाक ही पहनता था और हमेशा अपनी कमर में एक लकड़ी की तलवार को बाँधे रखता था। लोगों का मानना था कि उस तलवार में लकड़ी की होने के बावजूद भी अनोखी दैवीय शक्तियाँ हैं। वह दूसरों के सामने तलवार का प्रयोग भी नहीं करता था। परन्तु उसके सहस से पूर्ण कार्यों के कारण लोगों का तलवार में अनोखी शक्ति होने पर विश्वास था।

- वामीरो ने ततॉरा को बेरुखी से क्या जवाब दिया ?

उत्तर:- ततॉरा ने जब विनम्र तरीके से वामीरो से पूछा कि उसने अचानक इतना सुरीला और अच्छा गाना अधूरा ही क्यों छोड़ दिया ?' तो अपने सामने एक सुंदर युवक को देख कर वामीरो आश्चर्यचकित हो गई और हड़बड़ा गई। परन्तु अपने आपको सम्भालते हुए वामीरो ने नकली नाराजगी दिखाते हुए बेरुखी से उत्तर दिया कि पहले ततॉरा यह बताए कि वह कौन है, वह वामीरो को इस तरह क्यों देख रहा है और वह वामीरो से इस तरह के अनुचित या बेकार के प्रश्न क्यों पूछ रहा है?"

- ततॉरा – वामीरो की त्यागमयी मृत्यु से निकोबार में क्या परिवर्तन आया ?

उत्तर:- निकोबार निवासीयों ने ततॉरा – वामीरो की त्यागमयी मृत्यु के बाद अपनी परम्परा को बदला और दूसरे गाँव में भी विवाह सम्बन्ध बनने लगे। ततॉरा – वामीरो की जो एक -दूसरे के लिए त्यागमयी मृत्यु थी वह शायद इसी सुखद बदलाव के लिए थी।

- निकोबार के लोग ततॉरा को क्यों पसंद करते थे ?

उत्तर:- ततॉरा एक भला और सबकी मदद करने वाला व्यक्ति था। वह हमेशा ही दूसरों की सहायता के लिए तैयार रहता था। जब भी कोई मुसीबत में होता तो हर कोई उसी को याद करता था और वह भी भागा -भागा वहाँ उनकी मदद करने के लिए पहुँच जाता था। उसका व्यक्तित्व तो आकर्षक था ही उसके साथ ही साथ लोगों का उसके करीब रहने का एक सबसे बड़ा कारण था उसका सबको अपना मानने का स्वभाव।

- निकोबार द्वीप समूह के विभक्त होने के बारे में निकोबारियों का क्या विश्वास था ?

उत्तर:- निकोबारियों का विश्वास था कि पहले अंदमान और निकोबार एक ही द्वीप थे। इनके अलग-अलग होने के पीछे ततौरा-वामीरो की एक लोककथा प्रचलित है। दोनों एक दूसरे से प्रेम करते थे। परन्तु दोनों अलग-अलग गाँव से थे और उस समय के रीतिरिवाजों के अनुसार अलग-अलग गाँव के निवासियों में विवाह सम्बन्ध संभव नहीं था। जब लोगो को ततौरा और वामीरो के प्रेम का पता चला तो वे ततौरा को बुरा कहने लगे जिस कारण ततौरा को अत्यधिक क्रोध आ गया उसने अपनी तलवार पूरी शक्ति से धरती में गाड़ दी और दूर तक खींचता हुआ चला गया। इससे धरती के दो टुकड़े हो गए और अंदमान-निकोबार नाम से दो द्वीप बन गए।

- ततौरा खूब परिश्रम करने के बाद कहाँ गया ? वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिये।

उत्तर:- ततौरा दिन भर की कठोर मेहनत करने के बाद समुद्र के किनारे घूमने के लिए चल पड़ा। समुद्र में जहाँ धरती और आसमान के मिलने का आभास हो रहा था, वहाँ सूरज डूबने वाला था। समुद्र से ठंडी ठंडी हवाएँ आ रही थी। शाम के समय पक्षियों की जो चहचहाहटें होती हैं वे भी धीरे-धीरे शांत हो रही थी। ततौरा का मन भी शांत था। अपने ही विचारों में खोया हुआ ततौरा समुद्री बालू पर बैठ कर सूरज की आखरी किरणों को समुद्र के पानी पर देख रहा था जो बहुत रंग-बिरंगी लग रही थी। बीच-बीच में लहरों का संगीत सुनाई पड़ रहा था। पूरा वातावरण बहुत ही सुन्दर और मोहक लग रहा था।

- वामीरो से मिलने के बाद ततौरा के जीवन में क्या परिवर्तन आया ?

उत्तर:- वामीरो से मिलने के बाद ततौरा के जीवन में बहुत परिवर्तन आ गया था। उसके गहरे और शांत जीवन में ऐसा पहली बार हुआ था जब वह बैचेनी से किसी का इंतज़ार करता था। वह आश्चर्यचकित तो था परन्तु साथ ही साथ उत्सुक भी था। वह दिन ढलने से बहुत पहले ही लपाती गाँव की उस समुद्री चट्टान पर पहुँच जाता था जहाँ वह वामीरो से मिला करता था। वामीरो के इन्तजार में उसे हर एक पल बहुत अधिक लम्बा लग रहा था। ततौरा बार-बार लपाती गाँव के रास्तों पर वामीरो के इंतजार में नजरे गाड़ कर खड़ा रहता था।

- प्राचीन काल में मनोरंजन और शक्ति प्रदर्शन के लिए किस प्रकार के आयोजन किये जाते थे ?

उत्तर:- प्राचीन काल में मनोरंजन और शक्ति प्रदर्शन के लिए 'पशु पर्व' का आयोजन किया जाता था। पशु पर्व में हटे-कटे पशुओं के दिखावे के अलावा पशुओं से युवकों की शक्ति परखने की प्रतियोगितायें भी होती थी। साल में एक बार मेला लगता था और सभी गाँव के लोग इसमें

भाग लेने आते थे। प्रतियोगिता के बाद नाच -गाना और फिर भोजन का प्रबंध भी किया जाता था।

- रूढ़ियाँ जब बंधन लगने लगे तब उनका टूट जाना ही अच्छा है। क्यों ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- रूढ़ियाँ और बंधन समाज को अनुशासित करने के लिए बने होते हैं , परन्तु जब इन्ही के कारण मनुष्यों की भावनाओं को ठेस पहुँचने लगे और ये सब बोझ लगने लगे तो उनका टूट जाना ही अच्छा होता है। ततार्रा – वामीरो की कहानी में हमने जाना कि रूढ़ियों के कारण इनका प्रेम -विवाह नहीं हो सकता था , जिसके कारण दोनों को जान गवानी पड़ी। जहाँ रूढ़ियाँ किसी का भला करने की जगह नुकसान करे और जहाँ रूढ़ियाँ आडंबर लगने लगे वहाँ इनका टूट जाना ही बेहतर होता है।

निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए

- जब कोई राह न सूझी तो क्रोध का शमन करने के लिए उसने शक्ति भर उसे धरती में घोंप दिया और ताकत से उसे खींचने लगा।

उत्तर:- ततार्रा -वामीरो को पता था कि रीतिरिवाजों के कारण उनका विवाह संभव नहीं है फिर भी वे मिलते रहे। जब गाँव वालों को पता चला तो वे ततार्रा को बुरा कहने लगे। क्रोध में आकर ततार्रा ने अपनी तलवार को धरती में पूरी शक्ति से गाड़ दिया और अपनी ओर खींचता हुआ द्वीप के आखरी कोने तक पहुँच गया जिसके कारण द्वीप के दो टुकड़े हो गए।

- बस आस की एक किरण थी जो समुद्र की देह पर डूबती किरणों की तरह कभी भी डूब सकती थी।

उत्तर:- ततार्रा दिन ढलने से बहुत पहले ही लपाती गाँव की उस समुद्री चट्टान पर पहुँच गया था जहाँ उसने वामीरो को आने के लिए कहा था। वामीरो के इन्तजार में उसे हर एक पल बहुत अधिक लम्बा लग रहा था। उसके अंदर एक शक भी पैदा हो गया था कि अगर वामीरो आई ही नहीं तो। उसके पास प्रतीक्षा करने के अलावा और कोई चारा नहीं था। उसे सिर्फ उम्मीद की एक किरण नजर आ रही थी और वो भी समय बीतने के साथ -साथ समुद्र के शरीर पर जैसे किरणे डूब रही थी उसी प्रकार कभी भी डूब सकती थी।

पाठ -11

तीसरी कसम के शिल्पकार

लेखक परिचय

लेखक – प्रहलाद अग्रवाल

जन्म – 1947 (मध्य प्रदेश, जबलपुर)

तीसरी कसम के शिल्पकार पाठ का सारांश

एक गीतकार के रूप में फ़िल्मी जगत से जुड़े रहने वाले कवि और गीतकार शैलेंद्र ने जब फणीश्वर नाथ रेणु की अमर कृति 'तीसरी कसम उर्फ़ मारे गए गुलफाम' को सिनेमा परदे पर उतारा तो ये फिल्म मील का पत्थर सिद्ध हुई अर्थात् इस फिल्म की जगह कोई दूसरी फिल्म नहीं ले पाई। 'तीसरी कसम' को आज इसलिए भी याद किया जाता है क्योंकि इस फिल्म को बनाने के बाद यह भी सिद्ध हो गया कि हिंदी फिल्म जगत में एक सार्थक और उद्देश्य से भरपूर फिल्म को बनाना कितना कठिन और कितना जोखिम भरा काम है।

'संगम' नाम की फिल्म की आश्चर्यजनक सफलता के बाद फिल्म के नायक राजकपूर में गहरा आत्मविश्वास आ गया जिसके कारण उन्होंने एक साथ चार फिल्मों में काम करने की सार्वजनिक बात कर दी। इन्हीं फिल्मों में सन 1966 में कवि शैलेंद्र के द्वारा बनाई गई फिल्म 'तीसरी कसम' भी शामिल है। कहा जा सकता है कि 'तीसरी कसम' फिल्म नहीं बल्कि कवि शैलेंद्र द्वारा कैमरे की रील पर लिखी गई एक कविता थी।

'तीसरी कसम' फिल्म कवि शैलेंद्र के जीवन की पहली और अंतिम फिल्म है। इस फिल्म को बहुत सारे पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। यह फिल्म कला से परिपूर्ण थी जिसके लिए इस फिल्म की बहुत तारीफ़ हुई थी। इस फिल्म में शैलेंद्र की भावुकता पूरी तरह से दिखाई देती है। अभिनय को देखते हुए 'तीसरी कसम' फिल्म राजकपूर के द्वारा उनके जीवन में की गई सभी फिल्मों में से सबसे खूबसूरत फिल्म मानी जाती है। राजकपूर को एशिया के सबसे बड़े शोमैन

का खिताब हासिल था। वे अपनी आँखों से अभिनय करने और अपनी आँखों से ही भावनाओं को दिखाने में माहिर थे। इसके विपरीत शैलेंद्र एक उमदा गीतकार थे जो भावनाओं को कविता का रूप देने में माहिर थे। शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं को अपनी कविता और फिल्म की कहानी में शब्द रूप दिए और राजकपूर ने भी उनको बड़ी ही खूबी से निभाया।

राजकपूर जानते थे कि 'तीसरी कसम' फिल्म शैलेंद्र की पहली फिल्म है इसलिए उन्होंने एक अच्छे और सच्चे मित्र के नाते शैलेंद्र को फिल्म की असफलता के खतरों से भी परिचित करवाया। परन्तु शैलेंद्र को न तो अधिक धन-सम्पत्ति का लालच था न ही नाम कमाने की इच्छा। उसे तो केवल अपने आप से संतोष की कामना थी। 'तीसरी कसम' चाहे आज बहुत कामयाब फिल्मों में गिनी जाती हो, लेकिन यह एक कड़वा सच रहा है कि इसे परदे पर दिखाने और प्रसारित करने के लिए लोग बहुत ही मुश्किल से मिले थे। इस फिल्म की कहानी में जो भावनाएँ थीं उनको समझना किसी मुनाफा कमाने वालों के लिए आसान नहीं था। इस फिल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको किसी तराजू में नहीं तौला जा सकता था।

'श्री 420' का एक गीत – 'प्यार हुआ, इकरार हुआ है, प्यार से फिर क्यूँ डरता है दिल' की एक पंक्ति – 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ', इस पंक्ति में संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति जताई थी। लेकिन शैलेन्द्र इस पंक्ति को बदलने के लिए तैयार नहीं हुए। वे चाहते थे कि दर्शकों की पसंद को ध्यान में रख कर किसी भी फिल्म निर्माता को कोई भी बिना मतलब की चीज़ दर्शकों को नहीं दिखानी चाहिए। उनका मानना था कि एक कलाकार का यह कर्तव्य भी है कि वह दर्शकों की पसंद को अच्छा और सुंदर भी बनाने की कोशिश करे।

शैलेंद्र ने जो भी गीत लिखे वे सभी बहुत पसंद किये जाते रहे हैं। शैलेंद्र ने कभी भी झूठे रंग-ढग या दिखावे को नहीं अपनाया। उनके गीत नदी की तरह शांत तो लगते थे

परन्तु उनका अर्थ समुद्र की तरह गहरा होता था। इसी विशेषता को उन्होंने अपनी जिंदगी में भी अपनाया था और अपनी फिल्म में भी इसी विशेषता को साबित किया था।

'तीसरी कसम' अगर सिर्फ एकलौती नहीं तो उन कुछ सफल फिल्मों में जरूर है जिन्होंने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया है। 'तीसरी कसम' फिल्म की यह खास बात थी कि उसमें दुःख को किसी भी तरह बड़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत नहीं किया गया था उसमें दुःख को जीवन की सही परिस्थितियों की ही भाँति प्रस्तुत किया गया था। 'तीसरी कसम' की जो मुख्य कहानी है वह खुद लेखक फणीश्वरनाथ रेणु ने लिखी है। कहानी का एक छोटे-से-छोटा भाग, उसकी छोटी-से-छोटी बारीकियाँ फिल्म में पूरी तरह से दिखाई देती हैं।

शब्दार्थ

अद्भुत	: आश्चर्यजनक
गहन	: गहरा
घोषणा	: सार्वजनिक बात
संभवतः	: संभव / मुमकिन है कि
कल्पना	: मन की उपज
अंतराल	: समय
अभिनीत	: अभिनय
सर्वोत्कृष्ट	: सर्वोत्तम / सबसे अच्छा
मार्मिक	: जो दिल या मर्म को छू जाए
सैल्यूलाइड	: कैमरे की रील में उतार चित्र पर प्रस्तुत करना
सार्थकता	: सफलता के साथ
कलात्मकता	: कला से परिपूर्ण
संवेदनशीलता	: भावुकता
शिद्दत	: तीव्रता
मौजूद	: उपस्थित
अनन्य	: एकमात्र / परम
तन्मयता	: तल्लीनता
पारिश्रमिक	: मेहनताना

बगैर	: बिना
याराना मस्ती	: दोस्ताना अंदाज
हैसियत	: रंग-ढंग / नाते
आगाह	: सचेत
भावुक	: सज्जन आदमी / भावनाओं में बहने वाला
कामना	: इच्छा
अभिलाषा	: इच्छा
बमुश्किल	: बहुत कठिनाई से
वितरक	: प्रसारित करने वाले लोग
नामज़द	: विख्यात
संवेदना	: सहानुभूति
नावाकिफ़	: अनजान
आदमियता	: इंसानियत
मंतव्य	: इच्छा
परिष्कार	: सुंदर एवं स्वच्छ बनाना
अभिजात्य	: परिष्कृत
भाव-प्रणव	: भावनाओं से भरा हुआ
दुरूह	: कठिन
उकडू	: घुटने मोड़कर पैर के तलवों के सहारे बैठना

सूक्ष्मता	: बारीकी
टप्पर-गाड़ी	: अर्धगोलाकार छप्परयुक्त बैलगाड़ी
हुजूम	: भीड़
अभिव्यक्ति	: प्रकट करना
लोक-तत्व	: लोक सम्बन्धी
त्रासद	: दुखद
ग्लोरिफ़ाई	: गुणगान करना
वीभत्स	: भयावह
जीवन-सापेक्ष	: जीवन के प्रति
चकाचौंध	: चमक दमक
धन-लिप्सा	: धन की अत्यधिक चाह
प्रक्रिया	: प्रणाली
व्यथा	: बहुत अधिक दुःख
पराजित	: हारना
संकेत	: इशारा
अद्वितीय	: अनोखा
दृष्टिकोण	: देखने, सोचने-समझने का पहलू
हसीन	: खूबसूरत
समीक्षक	: समीक्षा/परीक्षण करने वाला

कला-मर्मज्ञ	: कला की परख करने वाला
चर्मोत्कर्ष	: ऊँचाई के शिखर पर
खालिस	: शुद्ध
देहाती	: गाँव में रहने वाला
भुच्च	: गवाँर/मुख
मुकाम	: पड़ाव / जगह
किंवदंती	: कहावत
पटकथा	: मुख्य कथा

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए

- 'तीसरी कसम' फिल्म को सेल्युलाइट पर लिखी कविता क्यों कहा है?

उत्तर:- 'तीसरी कसम' फिल्म को सेल्युलाइट पर लिखी कविता इसलिए कहा जाता है क्योंकि सेल्युलाइट का अर्थ होता है कि कहानी को हु-ब-हु कैमरे की सहायता से परदे पर उतरना और इस फिल्म में हिंदी साहित्य की एक दिल को छू लेने वाली कहानी को बड़ी ही सफलता के साथ कैमरे की रील में उतार कर चलचित्र द्वारा प्रस्तुत किया गया था। इस फिल्म के कविता के सभी भाग जैसे- भावुकता, संवेदना और मार्मिकता भरी हुई थी इसीलिए कहा जाता है कि 'तीसरी कसम' फिल्म नहीं बल्कि कवि शैलेंद्र द्वारा कैमरे की रील पर लिखी गई एक कविता थी।

- 'तीसरी कसम' फिल्म को खरीददार क्यों नहीं मिल रहे थे?

उत्तर:- 'तीसरी कसम' फिल्म की कहानी में जो भावनाएँ थी उनको समझना किसी मुनाफा कमाने वालों के लिए आसान नहीं था। इस फिल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको किसी तराजू में नहीं तौला जा सकता था इसीलिए 'तीसरी कसम' फिल्म को खरीददार नहीं मिल रहे थे।

- शैलेंद्र के अनुसार कलाकार का कर्तव्य क्या है ?

उत्तर:- शैलेंद्र के अनुसार दर्शकों की पसंद को ध्यान में रख कर किसी भी फिल्म निर्माता को कोई भी बिना मतलब की चीज़ दर्शकों को नहीं दिखानी चाहिए। उनका मानना था कि एक कलाकार का यह कर्तव्य है कि वह दर्शकों की पसंद को अच्छा और सुंदर भी बनाने की कोशिश करे।

- फिल्मों में त्रासद स्थितियों का चित्रांकन ग्लोरिफ़ाई क्यों कर दिया जाता है ?

उत्तर:- फिल्मों में अगर फिल्मों में कहीं त्रासद अर्थात् दुखद स्थितियों का वर्णन किया जाता है तो उसको बहुत अधिक बड़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत किया जाता है। दुःख को इतना अधिक भयानक रूप से प्रस्तुत किया जाता है कि वो लोगो को भावनात्मक रूप से कमजोर कर सके और लोग ज्यादा-से-ज्यादा फिल्मों की ओर आकर्षित हो सकें।

- 'शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं को शब्द दिए हैं' – इस कथन से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- राजकपूर को एशिया के सबसे बड़े शोमैन का खिताब हासिल था। वे अपनी आँखों से अभिनय करने और अपनी आँखों से ही भावनाओं को दिखाने में माहिर थे। इसके विपरीत शैलेंद्र एक उमदा गीतकार थे जो भावनाओं को कविता का रूप देने में माहिर थे। शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं को अपनी कविता और फिल्म की कहानी में शब्द रूप दिए और राजकपूर ने भी उनको बड़ी ही खूबी से निभाया।

- लेखक ने राजकपूर को एशिया का सबसे बड़ा शोमैन कहा है। शोमैन से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर:- शोमैन का अर्थ होता है जो अपने अभिनय से लोगो को आकर्षित कर सके, अपने निभाय गए किरदार से जो सबको मनोरंजित करे और अंत तक लोगो को अपने अभिनय के साथ जोड़ कर रखे। ये सारी खूबियाँ राजकपूर में कूट-कूट कर भरी थी इसीलिए लेखक ने राजकपूर को एशिया का सबसे बड़ा शोमैन कहा है।

- 'श्री 420' के गीत – 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' पर संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति क्यों की?

उत्तर:- 'श्री 420' के गीत – 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' पर संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति की क्योंकि उनका मानना था कि दर्शकों को चार दिशाएँ तो समझ आ सकती है परन्तु दर्शक दस दिशाओं को समझने में परेशान हो सकते हैं। सामान्यतः दिशाएँ चार ही कही जाती हैं और संगीतकार जयकिशन भी चार दिशाओं का ही प्रयोग करना चाहते थे।

- राजकपूर द्वारा फिल्म की असफलता के खतरों के आगाह करने पर भी शैलेंद्र ने यह फिल्म क्यों बनाई ?

उत्तर:- राजकपूर जानते थे कि 'तीसरी कसम' फिल्म शैलेंद्र की पहली फिल्म है इसलिए उन्होंने एक अच्छे और सच्चे मित्र के नाते शैलेंद्र को फिल्म की असफलता के खतरों से भी परिचित करवाया। परन्तु शैलेंद्र तो एक सज्जन भावनाओं में बहने वाला कवि था, जिसको न तो अधिक धन-सम्पत्ति का लालच था न ही नाम कमाने की इच्छा। उसे तो केवल अपने आप से संतोष की कामना थी। 'तीसरी कसम' की मुख्य कहानी में जो भावनाएँ थी वे शैलेंद्र के दिल को छूँ गई थी और वे इस फिल्म को बनाने का मन बना चुके थे।

- 'तीसरी कसम' में राजकपूर का महिमामय व्यक्तित्व किस तरह हिरामन की आत्मा में उतर गया। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- 'तीसरी कसम' फिल्म राजकपूर के फ़िल्मी जीवन में अभिनय का वह पड़ाव था, जब राजकपूर को एशिया के सबसे बड़े शोमैन का स्थान मिल चुका था। राजकपूर का अपना खुद का व्यक्तित्व ही कहावत बन चुका था, लोग उनकी मिसाल देने लगे थे। लेकिन 'तीसरी कसम' फिल्म में राजकपूर ने अपने उस महान व्यक्तित्व को पूरी तरह से हिरामन बना दिया था। पूरी फिल्म में राजकपूर कहीं पर भी हिरामन का अभिनय करते हुए नहीं दिखे, बल्कि वे तो खुद ही हिरामन बन गए थे। ऐसा हिरामन जो हीराबाई की फेनू-गिलासी बोली पर प्यार दिखता है, उसकी 'मनुआ-नटुआ' जैसी भोली सूरत पर अपना सब कुछ हारने को तैयार है और हीराबाई के थोड़े से भी गुस्सा हो जाने पर आपने आप को ही दोषी ठहरता हुआ सच्चा हिरामन बन जाता है।

- लेखक ने ऐसा क्यों लिखा है कि तीसरी कसम ने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया है ?

उत्तर:- 'तीसरी कसम' फिल्म फणीश्वरनाथ रेणु की पुस्तक मारे गए गुलफाम पर आधारित है। शैलेंद्र ने इस साहित्य के सभी पात्रों, भावनाओं, घटनाओं को हु-ब-हु दर्शाया है। कहानी का एक छोटे-से-छोटा भाग, उसकी छोटी-से-छोटी बारीकियाँ फिल्म में पूरी तरह से दिखाई गई है। राजकपूर जानते थे कि 'तीसरी कसम' फिल्म शैलेंद्र की पहली फिल्म है और यह एक भावनात्मक फिल्म है इसलिए उन्होंने एक अच्छे और सच्चे मित्र के नाते शैलेंद्र को फिल्म की असफलता के खतरों से भी परिचित करवाया। परन्तु शैलेंद्र तो एक सज्जन भावनाओं में बहने वाला व्यक्ति था, जिसको न तो अधिक धन-सम्पति का लालच था न ही नाम कमाने की इच्छा। उसे तो केवल अपने आप से संतोष की कामना थी। इस फिल्म की कहानी में जो भावनाएँ थीं उनको समझना किसी मुनाफा कमाने वालों के लिए आसान नहीं था। इस फिल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको किसी तराजू में नहीं तौला जा सकता था। शैलेंद्र ने मूल कथा को यथा रूप में प्रस्तुत किया था। इन सभी कारणों की वजह से लेखक ने लिखा है कि तीसरी कसम ने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया है।

- शैलेंद्र के गीतों की क्या विशेषताएँ हैं। अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:- शैलेंद्र ने जो भी गीत लिखे वे सभी बहुत पसंद किये जाते रहे हैं। शैलेंद्र ने कभी भी झूठे रंग-ढग या दिखावे को नहीं अपनाया। वे अपने गीतों में भावनाओं को अधिक महत्त्व देने वाले थे न कि अपने गीतों को कठिन बनाने वाले। 'मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंग्लिस्तानी, सर पे लाल टोपी रुसी, फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी' -यह गीत शैलेंद्र ही लिख सकते थे, क्योंकि इसमें सच्ची भावना झलक रही है। उनके गीत नदी की तरह शांत तो लगते थे परन्तु उनका अर्थ समुद्र की तरह गहरा होता था। उनका मानना था कि एक कलाकार का यह कर्तव्य भी है कि वह दर्शकों की पसंद को अच्छा और सुंदर भी बनाने की कोशिश करे।

- फिल्म निर्माता के रूप में शैलेंद्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ?

उत्तर:- 'तीसरी कसम' फिल्म शैलेंद्र की पहली और आखरी फिल्म थी। शैलेन्द्र को न तो अधिक धन-सम्पति का लालच था, न ही नाम कमाने की इच्छा। उन्हें तो केवल अपने आप से संतोष की कामना थी। इस फिल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको किसी

तराजू में नहीं तौला जा सकता था। शैलेंद्र ने राजकपूर और वहीदा रहमान की भावनाओं को शब्द दिए हैं। उनका मानना था कि फिल्म निर्माता को कोई भी बिना मतलब की चीज़ दर्शकों को नहीं दिखानी चाहिए। एक कलाकार का यह कर्तव्य भी है कि वह दर्शकों की पसंद को अच्छा और सुंदर भी बनाने की कोशिश करे। शैलेंद्र ने जो भी गीत लिखे वे सभी बहुत पसंद किये जाते रहे हैं। शैलेंद्र ने कभी भी झूठे रंग-ढग या दिखावे को नहीं अपनाया। 'तीसरी कसम' फिल्म फणीश्वरनाथ रेणु की पुस्तक मारे गए गुलफाम पर आधारित है। शैलेंद्र ने इस साहित्य के सभी पात्रों, भावनाओं, घटनाओं को हु-ब-हु दर्शाया है। कहानी का एक छोटे-से-छोटा भाग, उसकी छोटी-से-छोटी बारीकियाँ फिल्म में पूरी तरह से दिखाई गई हैं।

- शैलेन्द्र के निजी जीवन की छाप उनकी फिल्म में झलकती है-कैसे ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- शैलेन्द्र के निजी जीवन की छाप उनकी फिल्म में झलकती है। शैलेंद्र ने कभी भी झूठे रंग-ढग या दिखावे को नहीं अपनाया। वे अपने गीतों में भावनाओं को अधिक महत्त्व देने वाले थे न कि अपने गीतों को कठिन बनाने वाले। वे चाहते थे कि दर्शकों की पसंद को ध्यान में रख कर किसी भी फिल्म निर्माता को कोई भी बिना मतलब की चीज़ दर्शकों को नहीं दिखानी चाहिए। उनका मानना था कि एक कलाकार का यह कर्तव्य भी है कि वह दर्शकों की पसंद को अच्छा और सुंदर भी बनाने की कोशिश करनी चाहिए। उनके गीत नदी की तरह शांत तो लगते थे परन्तु उनका अर्थ समुद्र की तरह गहरा होता था। इसी विशेषता को उन्होंने अपनी जिंदगी में भी अपनाया था और अपनी फिल्म में भी इसी विशेषता को साबित किया था।

- लेखक के इस कथन से कि 'तीसरी कसम' फिल्म कोई सच्चा कवि-हृदय ही बना सकता था, आप कहा तक सहमत हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- शैलेंद्र ने ऐसी फिल्म बनाई थी जिसे सिर्फ एक सच्चा कवि-हृदय ही बना सकता था क्योंकि इतनी भावुकता केवल एक कवि के हृदय में ही हो सकती है। यह फिल्म कला से परिपूर्ण थी जिसके लिए इस फिल्म की बहुत तारीफ़ हुई थी। इस फिल्म में शैलेंद्र की भावुकता पूरी तरह से दिखाई देती है। इस फिल्म की कहानी में जो भावनाएँ थी उनको समझना किसी मुनाफा कमाने वालों के लिए आसान नहीं था। इस फिल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको किसी तराजू में नहीं तौला जा सकता था। शैलेंद्र के द्वारा लिखे गीतों में सच्ची भावना झलकती है। उनके गीत नदी की तरह शांत तो लगते थे परन्तु उनका अर्थ समुद्र की तरह गहरा होता था। लेखक के इस कथन से कि 'तीसरी कसम' फिल्म कोई सच्चा कवि-हृदय ही बना सकता था, हम पूरी तरह सहमत हैं।

निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए

-वह तो एक आदर्शवादी भावुक कवि था, जिसे अपार सम्पति और यश तक की इतनी कामना नहीं थी जितनी आत्म-संतुष्टि के सुख की अभिलाषा थी।

उत्तर:- जब राजकपूर ने एक अच्छे और सच्चे मित्र के नाते शैलेन्द्र को फिल्म की असफलता के खतरों से भी परिचित करवाया। तो शैलेन्द्र ने उनकी बात नहीं मणि क्योंकि शैलेन्द्र एक भावनात्मक कवि था, जिसको न तो अधिक धन-सम्पति का लालच था न ही नाम कमाने की इच्छा। उसे तो केवल अपने आप से संतोष की कामना थी।

- उनका दृढ़ मंतव्य था कि दर्शकों की रुचि की आड़ में हमें उथलेपन को उन पर नहीं थोपना चाहिए। कलाकार का यह कर्तव्य भी है कि वह उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करने का प्रयत्न करे।

उत्तर:- जब संगीतकार जयकिशन ने गीत 'प्यार हुआ, इकरार हुआ है, प्यार से फिर क्यूँ डरता है दिल' की एक पंक्ति 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' में आपत्ति जताई थी, और उनका कहना था कि दर्शकों को चार दिशाएँ तो समझ आ सकती है परन्तु दर्शक दस दिशाओं को समझने में परेशान हो सकते हैं। लेकिन शैलेन्द्र इस पंक्ति को बदलने के लिए तैयार नहीं हुए। वे चाहते थे कि दर्शकों की पसंद को ध्यान में रख कर किसी भी फिल्म निर्माता को कोई भी बिना मतलब की चीज़ दर्शकों को नहीं दिखानी चाहिए। उनका मानना था कि एक कलाकार का यह कर्तव्य भी है कि वह दर्शकों की पसंद को अच्छा और सुंदर भी बनाने की कोशिश करे।

- व्यथा आदमी को पराजित नहीं करती, उसे आगे बढ़ने का संकेत देती है।

उत्तर:- शैलेन्द्र के गीतों में सिर्फ दुःख-दर्द नहीं होता था, उन दुखों से निपटने या उनका सामना करने का इशारा भी होता था। और वो सारी क्रिया-प्रणाली भी मौजूद रहती थी जिसका सहारा ले कर कोई भी व्यक्ति अपनी मंजिल तक पहुँच सकता है। उनका मानना था कि दुःख कभी भी इंसान को हरा नहीं सकता बल्कि हमेशा आगे बढ़ने का इशारा देता है।

- दरअसल इस फिल्म की संवेदना किसी दो से चार बनाने का गणित जानने वाले की समझ से परे थी।

उत्तर:- 'तीसरी कसम' फिल्म की कहानी में जो भावनाएँ थीं उनको समझना किसी मुनाफा कमाने वालों के लिए आसान नहीं था। इस फिल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको किसी तराजू में नहीं तोला जा सकता था।

- उनके गीत भाव-प्रणव थे-दुरुह नहीं।

उत्तर:- शैलेंद्र ने जो भी गीत लिखे, वे सभी बहुत पसंद किये जाते रहे हैं। शैलेंद्र ने कभी भी झूठे रंग-ढग या दिखावे को नहीं अपनाया। वे अपने गीतों में भावनाओं को अधिक महत्त्व देने वाले थे न कि अपने गीतों को कठिन बनाने वाले। 'मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंग्लिस्तानी, सर पे लाल टोपी रुसी, फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी' -यह गीत शैलेंद्र ही लिख सकते थे, क्योंकि इसमें सच्ची भावना झलक रही है। उनके गीत नदी की तरह शांत तो लगते थे परन्तु उनका अर्थ समुद्र की तरह गहरा होता था।

INTERVAL

Individual Tuition Concept

पाठ -12

अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

लेखक परिचय

लेखक – निदा फ़ाज़ली

जन्म – 12 अक्तूबर 1938 (दिल्ली)

अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले पाठ का सारांश

इस पाठ में वर्णन किया गया है कि किस तरह आदमी नाम का जीव सब कुछ समेटना चाहता है और उसकी यह भूख कभी भी शांत होने वाली नहीं है। वह इतना स्वार्थी हो गया है कि दूसरे प्राणियों को तो पहले ही बेदखल कर चुका था परन्तु अब वह अपनी ही जाति अर्थात् मनुष्यों को ही बेदखल करने में जरा भी नहीं हिचकिचाता। परिस्थिति यह हो गई है कि न तो उसे किसी के सुख-दुःख की चिंता है और न ही किसी को सहारा या किसी की सहायता करने का इरादा।

लेखक पाठ में ऐसे व्यक्तियों के उदाहरण देते हैं जो सभी तरह के प्राणधारियों की रक्षा करना अपना कर्तव्य मानते थे। इनमें सबसे पहला उदाहरण सुलेमान का है। सुलेमान ईसा से 1025 वर्ष पहले एक बादशाह थे। वह सभी पशु-पक्षियों की भाषा भी जानते थे। एक बार सुलेमान अपनी सेना के साथ एक रास्ते से गुज़र रहे थे। रास्ते में कुछ चींटियों ने जब रास्ते से गुज़रते हुए घोड़ों के चलने की आवाज़ सुनी तो वे डर गईं और एक दूसरे से कहने लगीं कि जल्दी से सभी अपने-अपने बिलों में चलो। सुलेमान ने उनकी बातें सुन लीं, वे चींटियों से बोले कि तुम में से किसी को भी घबराने की जरूरत नहीं है, सुलेमान को खुदा ने सबकी रक्षा करने के लिए बनाया है।

सुलेमान की नेक दिली की तरह एक और उसी तरह की घटना का वर्णन सिंधी भाषा के महाकवि शेख अयाज़ ने अपनी जीवन कथा में किया है। एक दिन शेख अयाज़ के पिता कुँए से नहाकर लौटे। अभी उनके पिता ने रोटी का पहला टुकड़ा तोड़ा ही था कि उनकी नज़र उनके बाजू पर धीरे-धीरे चलते हुए एक काले च्योटे पर पड़ी। जैसे ही उन्होंने कीड़े को देखा वे भोजन छोड़ कर खड़े हो गए। इस पर माँ ने पूछा कि क्या भोजन अच्छा नहीं लगा? इस पर शेख

अयाज़ के पिता ने जवाब दिया कि ऐसी कोई बात नहीं है। उन्होंने एक घर वाले को बेघर कर दिया है वे उसी को उसके घर यानि कुँए के पास छोड़ने जा रहे हैं। बाइबिल और जितने भी दूसरे पवित्र ग्रन्थ हैं उनमें नूह नाम के एक ईश्वर के सन्देश वाहक का वर्णन मिलता है। उनका असली नाम नूह नहीं था उनका नाम लशकर था, लेकिन अरब के लोग उनको इस नाम से याद करते हैं क्योंकि वे सारी उम्र रोते रहे अर्थात् दूसरों के दुःख में दुखी रहते थे।

लेखक कहता है कि जब पृथ्वी अस्तित्व में आई थी, उस समय पूरा संसार एक परिवार की तरह रहा करता था लेकिन अब इसके टुकड़ें हो गए हैं और सभी एक-दूसरे से दूर हो गए हैं। वातावरण में इतना अधिक बदलाव हो गया है कि गर्मी में बहुत अधिक गर्मी पड़ती है, बरसात का कोई निश्चित समय नहीं रह गया है, भूकम्प, सैलाब, तूफ़ान और रोज कोई न कोई नई बीमारियाँ न जाने और क्या-क्या, ये सब मानव द्वारा किये गए प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ का नतीजा है। कहा जाता है कि जो जितना बड़ा होता है उसको गुस्सा उतना ही कम आता है परन्तु जब आता है तो उनके गुस्से को कोई शांत नहीं कर सकता। समुद्र के साथ भी वही हुआ जब समुद्र को गुस्सा आया तो एक रात वह अपनी लहरों के ऊपर दौड़ता हुआ आया और तीन जहाज़ों को ऐसे उठा कर तीन दिशाओं में फेंक दिया जैसे कोई किसी बच्चे की गेंद को उठा कर फेंकता है।

Individual Tuition Concept

लेखक कहता है कि बचपन में उनकी माँ हमेशा कहती थी कि शाम के समय पेड़ों से पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए क्योंकि उस समय यदि पत्ते तोड़ोगे तो पेड़ रोते हैं। पूजा के समय फूलों को नहीं तोड़ना चाहिए क्योंकि उस समय फूलों को तोड़ने पर फूल श्राप देते हैं। नदी पर जाओ तो उसे नमस्कार करनी चाहिए वह खुश हो जाती है। कभी भी कबूतरों और मुर्गों को परेशान नहीं करना चाहिए।

ग्वालियर में लेखक का एक मकान था, उस मकान के बरामदे में दो रोशनदान थे। उन रोशनदानों में कबूतर के एक जोड़े ने अपना घोंसला बना रखा था। बिल्ली ने जब कबूतर के एक अंडे को तोड़ दिया तो लेखक की माँ ने स्टूल पर चढ़ कर दूसरे अंडे को बचाने की कोशिश की। परन्तु इस कोशिश में दूसरा अंडा लेखक की माँ के हाथ से छूट गया और टूट गया। कबूतरों की आँखों में उनके बच्चों से बिछुड़ने का दुःख देख कर लेखक की माँ की आँखों में आँसू आ गए। इस पाप को खुदा से माफ़ कराने के लिए लेखक की माँ ने पुरे दिन का उपवास रखा। अब लेखक समय के साथ मनुष्यों की बदलती भावनाओं के लिए एक उदाहरण देते हैं -दो कबूतरों ने लेखक

के फ्लैट में एक ऊँचे स्थान पर आपने घोंसला बना रखा था। उनके बच्चे अभी छोटे थे। उनके पालन-पोषण की जिम्मेवारी उन बड़े कबूतरों की थी। लेकिन उनके आने-जाने के कारण लेखक और लेखक के परिवार को बहुत परेशानी होती थी। कभी कबूतर किसी चीज़ से टकरा जाते थे और चीज़ों को गिराकर तोड़ देते थे। कबूतरों के बार-बार आने-जाने और चीज़ों को तोड़ने से परेशान हो कर लेखक की पत्नी ने जहाँ कबूतरों का घर था वहाँ जाली लगा दी थी, कबूतरों के बच्चों को भी वहाँ से हटा दिया था। जहाँ से कबूतर आते-जाते थे उस खिड़की को भी बंद किया जाने लगा था। अब दोनों कबूतर खिड़की के बाहर रात-भर चुप-चाप और दुखी बैठे रहते थे। मगर अब न तो सोलोमेन है जो उन कबूतरों की भाषा को समझ कर उनका दुःख दूर करे और न ही लेखक की माँ है जो उन कबूतरों के दुःख को देख कर रात भर प्रार्थना करती रहे। अर्थ यह हुआ कि समय के साथ-साथ व्यक्तियों की भावनाओं में बहुत अंतर आ गया है।

अंत में लेखक हमें बताना चाहता है कि हमें नदी और सूरज की तरह दुसरो के हित के कार्य करने चाहिए और तोते की तरह सभी को सामान समझना चाहिए तभी संसार के सभी जीवधारी प्रसन्न और सुखी रह सकते हैं।

शब्दार्थ

बाइबिल : ईसाईयों का पवित्र ग्रन्थ

कुरआन : इस्लाम का पवित्र ग्रन्थ

हाकिम : राजा /मालिक

एक दफा : एक बार

लश्कर : सेना

दुआ : प्रार्थना

जिक्र : वर्णन करना

कौर : ग्रास /टुकड़ा

च्योंटा : एक प्रकार का कीड़ा

रेंगना	: धीरे-धीरे चलना
बेघर	: जिसका घर न हो
पावन	: पवित्र
पैगंबर	: ईश्वर का सन्देश वाहक
दुत्कार	: अपमान, तिरस्कार
लक़ब	: ख़िताब, ऐसा नाम जिससे व्यक्ति के गुणों का पता चले
वजूद	: अस्तित्व
हिस्सेदारी	: अपने- अपने हिस्से पर अधिकार
दालान	: बरामदा
सिमटने	: संकुचित /सिकुड़ना
सरकाना	: धकेलना
बेवक्त	: जिसका कोई समय न हो
ज़लज़ले	: भूकंप
नेचर	: प्रकृति
हथियाना	: कब्ज़ा करना
उकड़ूं	: घुटने मोड़ कर बैठना
औंधे मुँह	: मुँह के बल
काबिल	: योग्य /लायक
बद्दुआ	: श्राप

दरिया	: नदी
सलाम	: नमस्कार
अज़ीज़	: प्यारा
मज़ार	: दरगाह
गुम्बद	: गोलकार शिखर
इज़ाज़त	: आज्ञा
दालान	: बरामदा
उचककर	: उछलकर
गुनाह	: पाप
रोज़ा	: उपवास
दुआ	: प्रार्थना
परिंदे	: पक्षी
बस्ती	: गाँव
डेरा	: अस्थाई घर
मचान	: बाँस आदि की सहायता से बनाया गया ऊँचा स्थान /मंच

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

- अरब में लशकर को नूह के नाम से क्यों याद करते हैं ?

उत्तर:- अरब में लशकर को नूह के नाम से इसलिए याद करते हैं क्योंकि वे हमेशा रोते रहते थे अर्थात् दूसरों के दुःख में दुखी रहते थे। नूह को ईश्वर का सन्देश वाहक भी कहा जाता है।

- लेखक की माँ किस समय पेड़ों के पत्ते तोड़ने के लिए मना करती थी और क्यों ?

उत्तर:- लेखक की माँ कहती थी कि जब भी सूरज ढले अर्थात् शाम के समय पेड़ों से पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए क्योंकि उस समय यदि पत्ते तोड़ोगे तो पेड़ रोते हैं।

- प्रकृति में आए असंतुलन का क्या परिणाम हुआ ?

उत्तर:- प्रकृति में आए असंतुलन का बहुत अधिक भयानक परिणाम हुआ, गर्मी में बहुत अधिक गर्मी पड़ती है, बरसात का कोई निश्चित समय नहीं रह गया है, भूकम्प, सैलाब, तूफान और रोज कोई न कोई नई बीमारियाँ जन्म ले लेती है और मानव का जीवन बहुत अधिक कठिन हो गया है।

- लेखक की माँ ने पुरे दिन का रोज़ा क्यों रखा ?

उत्तर:- बिल्ली ने जब कबूतर के एक अंडे को तोड़ दिया तो लेखक की माँ ने स्टूल पर चढ़ कर दूसरे अंडे को बचाने की कोशिश की। परन्तु इस कोशिश में दूसरा अंडा लेखक की माँ के हाथ से छूट गया और टूट गया। ये सब देख कर कबूतरों का जोड़ा परेशान हो कर इधर-उधर फड़फड़ाने लगा। कबूतरों की आँखों में उनके बच्चों से बिछुड़ने का दुःख देख कर लेखक की माँ की आँखों में आँसू आ गए। इस पाप को खुदा से माफ़ कराने के लिए लेखक की माँ ने पुरे दिन का उपवास रखा।

- लेखक ने ग्वालियर से बम्बई तक किन बदलावों को महसूस किया? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- लेखक कहता है कि ग्वालियर से बंबई के बीच समय के साथ काफी बदलाव हुए हैं। वसोवा में जहाँ लेखक का घर है, वहाँ लेखक के अनुसार किसी समय में दूर तक जंगल ही जंगल था। पेड़-पौधे थे, पशु-पक्षी थे और भी न जाने कितने जानवर थे। अब तो यहाँ समुद्र के किनारे केवल लम्बे-चौड़े गाँव बस गए हैं। इन गाँव ने न जाने कितने पशु-पक्षियों से उनका घर छीन

लिया है। इन पशु-पक्षियों में से कुछ तो शहर को छोड़ कर चले गए हैं और जो नहीं जा सके उन्होंने यहीं कहीं पर भी अस्थाई घर बना लिए हैं। अस्थाई इसलिए क्योंकि कब कौन उनका घर तोड़े कर चला जाये कोई नहीं जनता।

- 'डेरा ढलने 'से आप क्या समझते हैं'?स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- 'डेरा' अर्थात अस्थाई घर। अस्थाई इसलिए क्योंकि कब कौन तोड़ कर चला जाये कोई नहीं जनता। बड़ी-बड़ी इमारतें बन जाने के कारण कई पक्षी बेघर हो गए और जब उन्हें अपना घोंसला बनाने की जगह नहीं मिली तो उन्होंने इन इमारतों में अपना डेरा डाल लिया।

- शेख अयाज़ के पिता अपनी बाजू पर काला च्योटा रेंगता देख भोजन छोड़ कर क्यों उठ खड़े हुए?

उत्तर:- एक दिन शेख अयाज़ के पिता कुँए से नहाकर लौटे। उनकी माँ ने भोजन परोसा। अभी उनके पिता ने रोटी का पहला टुकड़ा तोड़ा ही था कि उनकी नज़र उनके बाजू पर धीरे-धीरे चलते हुए एक काले च्योटे पर पड़ी। जैसे ही उन्होंने कीड़े को देखा वे भोजन छोड़ कर खड़े हो गए। उनको खड़ा देख कर शेख अयाज़ की माँ ने पूछा कि क्या बात है? क्या भोजन अच्छा नहीं लगा? इस पर शेख अयाज़ के पिता ने जवाब दिया कि ऐसी कोई बात नहीं है। उन्होंने एक घर वाले को बेघर कर दिया है वे उसी को उसके घर यानि कुँए के पास छोड़ने जा रहे हैं।

Individual Tuition Concept

- बढ़ती हुई आबादी का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर:- जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ रही है वैसे-वैसे समुद्र अपनी जगह से पीछे हटने लगा है, लोगों ने पेड़ों को काट कर रास्ते बनाना शुरू कर दिया है। प्रदुषण इतना अधिक फैल रहा है कि उससे परेशान हो कर पंछी बस्तियों को छोड़ कर भाग रहे हैं। बारूद से होने वाली मुसीबतों ने सभी को परेशान कर रखा है। वातावरण में इतना अधिक बदलाव हो गया है कि गर्मी में बहुत अधिक गर्मी पड़ती है, बरसात का कोई निश्चित समय नहीं रह गया है, भूकम्प, सैलाब, तूफ़ान और रोज कोई न कोई नई बीमारियाँ न जाने और क्या-क्या ,ये सब मानव द्वारा किये गए प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ का नतीजा है। इन सभी के कारण मानव जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। मानव के जीवन पर इसका बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है।

- लेखक की पत्नी को खिड़की पर जाली क्यों लगानी पड़ी ?

उत्तर:- दो कबूतरों ने लेखक के फ्लैट में एक ऊँचे स्थान पर अपना घोंसला बना रखा है। उनके बच्चे अभी छोटे हैं। उनके पालन-पोषण की जिम्मेवारी उन बड़े कबूतरों की थी। बड़े कबूतर दिन में बहुत बार उन छोटे कबूतरों को खाना खिलाने आते जाते रहते थे। लेकिन उनके आने-जाने के कारण लेखक और लेखक के परिवार को बहुत परेशानी होती थी। कभी कबूतर किसी चीज़ से टकरा जाते थे और चीज़ों को गिराकर तोड़ देते थे। कबूतरों के बार-बार आने-जाने और चीज़ों को तोड़ने से परेशान हो कर लेखक की पत्नी ने जहाँ कबूतरों का घर था वहाँ जाली लगा थी, कबूतरों के बच्चों को भी वहाँ से हटा दिया था। जहाँ से कबूतर आते-जाते थे उस खिड़की को भी बंद किया जाने लगा था।

- समुद्र के गुस्से की क्या वजह थी ? उसने अपना गुस्सा कैसे निकाला ?

उत्तर:- कई सालों से बड़े-बड़े मकानों को बनाने वाले बिल्डर मकान बनाने के लिए समुद्र को पीछे धकेल कर उसकी जमीन पर कब्ज़ा कर रहे थे। बेचारा समुद्र लगातार सिकुड़ता जा रहा था। पहले तो समुद्र ने अपनी फैली हुई टांगों को इकट्ठा किया और सिकुड़ कर बैठ गया। फिर जगह कम होने के कारण घुटने मोड़ कर बैठ गया। अब भी बिल्डर नहीं माने तो समुद्र खड़ा हो गया..... जब समुद्र के पास खड़े रहने की जगह भी कम पड़ने लगी और समुद्र को गुस्सा आ गया। कहा जाता है कि जो जितना बड़ा होता है उसको गुस्सा उतना ही कम आता है परन्तु जब आता है तो उनके गुस्से को कोई शांत नहीं कर सकता। समुद्र के साथ भी वही हुआ जब समुद्र को गुस्सा आया तो एक रात वह अपनी लहरों के ऊपर दौड़ता हुआ आया और तीन जहाज़ों को ऐसे उठा कर तीन दिशाओं में फेंक दिया जैसे कोई किसी बच्चे की गेंद को उठा कर फेंकता है। एक को वर्ली के समुद्र के किनारे फेंका तो दूसरे को बांद्रा के कार्टर रोड के सामने मुँह के बल गिरा दिया और तीसरे को गेट-वे-ऑफ इंडिया के पास पटक दिया जो अब घूमने आये लोगों का मनोरंजन का साधन बना हुआ है। समुद्र ने तीनों को इस तरह फेंका की कोशिश करने पर भी उन्हें चलने लायक नहीं बनाया जा सका।

- निम्नलिखित पंक्तियों के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है ? स्पष्ट कीजिए।

मिट्टी से मिट्टी मिले,

खो के सभी निशान।

किसमें कितना कौन है,

कैसे हो पहचान।।

उत्तर:- लेखक इन पंक्तियों के माध्यम से कहना चाहता है कि उस ईश्वर ने हम सभी प्राणधारियों को एक ही मिट्टी से बनाया है। यदि सभी से प्राण निकाल कर वापिस मिट्टी बना दिया जाए तो किसी का कोई निशान नहीं रहेगा जिससे पहचाना जा सके कि कौन सी मिट्टी किस प्राणी की है। भाव यह हुआ की लेखक कहना चाहता है व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व पर घमण्ड नहीं करना चाहिए क्योंकि यह कोई नहीं जानता की उसमें कितनी मनुष्यता है और कितनी पशुता।

निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए

- प्रकृति की सहनशक्ति की एक सीमा होती है। प्रकृति के गुस्से का एक नमूना कुछ साल पहले बंबई (मुंबई) में देखने को मिला था।

उत्तर:- प्रकृति एक सीमा तक ही सहन कर सकती है। कहा जाता है कि जो जितना बड़ा होता है उसको गुस्सा उतना ही कम आता है परन्तु जब आता है तो उनके गुस्से को कोई शांत नहीं कर सकता। प्रकृति को भी जब गुस्सा आता है तो क्या होता है इसका एक नमूना कुछ साल पहले मुंबई में आई सुनामी के रूप में देख ही चुके हैं। ये नमूना इतना डरावना था कि मुंबई के निवासी डर कर अपने-अपने देवी-देवताओं से उस मुसीबत से बचाने के लिए प्रार्थना करने लगे थे।

- जो जितना बड़ा होता है उसको गुस्सा उतना ही कम आता है।

उत्तर:- कई सालों से बड़े-बड़े मकानों को बनाने वाले बिल्डर मकान बनाने के लिए समुद्र को पीछे धकेल कर उसकी जमीन पर कब्ज़ा कर रहे थे। जब समुद्र के पास खड़े रहने की जगह भी कम पड़ने लगी और समुद्र को गुस्सा आ गया। कहा जाता है कि जो जितना बड़ा होता है उसको गुस्सा उतना ही कम आता है परन्तु जब आता है तो उनके गुस्से को कोई शांत नहीं कर सकता। समुद्र के साथ भी वही हुआ जब समुद्र को गुस्सा आया तो एक रात वह अपनी लहरों के ऊपर दौड़ता हुआ आया और तीन जहाज़ों को ऐसे उठा कर तीन दिशाओं में फेंक दिया जैसे कोई किसी बच्चे की गेंद को उठा कर फेंकता है।

- इस बस्ती ने न जाने कितने परिंदों-चरिन्दों से उनका घर छीन लिया है। इनमें से कुछ शहर छोड़ कर चले गए हैं। जो नहीं जा सके हैं उन्होंने यहाँ-वहाँ डेरा दाल लिया है।

उत्तर:- लेखक कहता है कि ग्वालियर से बंबई के बीच किसी समय में दूर तक जंगल ही जंगल थे। पेड़-पौधे थे, पशु-पक्षी थे और भी न जाने कितने जानवर थे। अब तो यहाँ समुद्र के किनारे केवल लम्बे-चौड़े गाँव बस गए हैं। इन गाँव ने न जाने कितने पशु-पक्षियों से उनका घर छीन लिया है। इन पशु-पक्षियों में से कुछ तो शहर को छोड़ कर चले गए हैं और जो नहीं जा सके उन्होंने यहीं कहीं पर भी अस्थाई घर बना लिए हैं। अस्थाई इसलिए क्योंकि कब कौन उनका घर तोड़े कर चला जाये कोई नहीं जनता।

- शेख अयाज़ के पिता बोले, 'नहीं यह बात नहीं है। मैंने एक घर वाले को बेघर कर दिया है। उस बेघर को कुँए पर उसके घर छोड़ने जा रहा हूँ।' इन पंक्तियों में छिपी हुई उनकी भावना को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- शेख अयाज़ के पिता बोले, 'नहीं यह बात नहीं है। मैंने एक घर वाले को बेघर कर दिया है। उस बेघर को कुँए पर उसके घर छोड़ने जा रहा हूँ।' इन पंक्तियों में शेख अयाज़ के पिता की छिपी हुई भावना यह थी कि वे पशु-पक्षियों की भावना को समझते थे। वे अपना खाना छोड़ कर केवल एक काले च्योंटे को उसके घर कुँए पर छोड़ने चल पड़े। उनका व्यक्तित्व ऐसा था जो किसी को भी तकलीफ नहीं देना चाहते थे।

INTERVAL

Individual Tuition Concept

पाठ - 13

पतञ्जर में टूटी पत्तियाँ

लेखक परिचय

लेखक – रविंद्र केलेकर

जन्म – 7 मार्च 1925 (कोंकण)

पतञ्जर में टूटी पत्तियाँ पाठ का सारांश

लेखक ने प्रस्तुत पाठ में जो प्रसंग प्रस्तुत किए हैं, उनमें पहले प्रसंग (गिन्नी का सोना) जीवन में अपने लिए सुख-साधन जुटाने वालों से नहीं बल्कि उन लोगों से परिचित करवाता है जो इस संसार को सब के लिए जीने और रहने योग्य बनाए हुए हैं। लेखक कहते हैं कि शुद्ध सोने में और सोने के सिक्के में बहुत अधिक फर्क होता है, सोने के सिक्के में थोड़ा-सा ताँबा मिलाया जाता है, जिस कारण अधिक चमक आ जाती है और यह अधिक मज़बूत भी होता है। औरतें अकसर उन्हीं सोने के सिक्कों के गहनें बनवाती हैं। लेखक कहते हैं कि किसी व्यक्ति का जो उच्च चरित्र होता है वह भी शुद्ध सोने की तरह होता है उसमें कोई मिलावट नहीं होती। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपने चरित्र में ताँबा अर्थात् मिलावटी व्यवहार मिला देते हैं, उन्हीं लोगों को सभी लोग व्यावहारिक आदर्शवादी कह कर उनका गुणगान करते हैं। लेखक हम सभी को ये बताना चाहते हैं कि हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वर्णन कभी भी आदर्शों का नहीं होता, बल्कि आपके व्यवहार का होता है। कुछ लोग कहते हैं कि गाँधी जी भी व्यावहारिक आदर्शवादियों में से एक थे। यदि गाँधी जी अपने आदर्शों को महत्त्व नहीं देते तो पूरा देश उनके साथ हर समय कंधे-से-कंधा मिला कर खड़ा न होता। जो लोग केवल अपने व्यवहार पर ही ध्यान देते हैं, केवल वैज्ञानिक ढंग से ही सोचते हैं, वे व्यवहारवादी लोग कहे जाते हैं और ये लोग हमेशा चौकाने रहते हैं कि कहीं इनसे कोई ऐसा काम न हो जाए जिसके कारण इनको हानि उठानी पड़े। सबसे महत्पूर्ण बात तो यह है कि खुद भी तरक्की करो और अपने साथ-साथ दूसरों को भी आगे ले चलो और ये काम हमेशा से ही आदर्शों को सबसे आगे रखने वाले लोगों ने किया है। हमारे समाज में

अगर हमेशा रहने वाले कई मूल्य बचे हैं तो वो सिर्फ आदर्शवादी लोगो के कारण ही बच पाए हैं।

दूसरा प्रसंग (झेन की देन) बौद्ध दर्शन में वर्णित ध्यान की उस पद्धति की याद दिलाता है जिसके कारण जापान के लोग आज भी अपनी व्यस्ततम दिन भर के कामों के बीच भी कुछ चैन भरे या सुकून के पल हासिल कर ही लेते हैं।

लेखक ने जब अपने जापानी मित्र से वहाँ की सबसे खतरनाक बीमारी के बारे में पूछा तो उसने कहा कि जापान के लोगों को सबसे अधिक मानसिक बीमारी का शिकार होना पड़ता है। लेखक के इस मानसिक बिमारी की वजह पूछने पर लेखक के मित्र ने उत्तर दिया कि उनके जीवन की तेजी औरों से अधिक है। जापान में कोई आराम से नहीं चलता, बल्कि दौड़ता है अर्थात सब एक दूसरे से आगे जाने की सोच रखते हैं। कोई भी व्यक्ति आराम से बात नहीं करता, वे लोग केवल काम की ही बात करते हैं। जापान के लोग अमेरिका से प्रतियोगिता में लग गए जिसके कारण वे एक महीने में पूरा होने वाला काम एक दिन में ही खत्म करने की कोशिश करने लगे। यही कारण है कि जापान के लोगो में मानसिक बिमारी फैल गई है।

लेखक कहते हैं कि एक शाम को उनका जापानी दोस्त उन्हें चा-नो-यू अर्थात जापान के चाय पीने के एक विशेष आयोजन में ले गया। लेखक और उनका मित्र चाय पीने के आयोजन के लिए जहाँ गए थे वह एक छः मंजिल की इमारत थी। उसकी छत पर एक सरकने वाली दीवार थी जिस पर चित्रकारी की गई थी और पत्तों की एक कुटिया बनी हुई थी जिसमें जमीन पर चटाई बिछी हुई थी। उसके बाहर बैडोल-सा मिट्टी का एक पानी भरा हुआ बरतन था। लेखक और उनके मित्र ने उस पानी से हाथ-पाँव धोकर अंदर गए। अंदर चाय देने वाला एक व्यक्ति था जिसे चानीज कहा जाता है। उन्हें देखकर वह खड़ा हो गया। कमर झुका कर उसने उन्हें प्रणाम किया और बैठने की जगह दिखाई। अँगीठी को जलाया और उस पर चाय बनाने वाला बरतन रख दिया। वह साथ वाले कमरे में गया और कुछ बरतन ले कर आया। फिर तौलिए से बरतन साफ किए।

ये सारा काम उस व्यक्ति ने बड़े ही सलीके से पूरा किया और उसकी हर एक मुद्रा या काम करने के ढंग से लगता था कि जैसे जयजयवंती नाम के राग की धुन गूँज रही हो। उस जगह का वातावरण इतना अधिक शांत था कि चाय बनाने वाले बरतन में उबलते हुए पानी की आवाज़ें तक सुनाई दे रही थी।

लेखक कहते हैं कि चाय बनाने वाले ने चाय तैयार की और फिर उन प्यालों को लेखक और उनके मित्रों के सामने रख दिया। जापान में इस चाय समारोह की सबसे खास बात शांति होती है। इसलिए वहाँ तीन से ज्यादा व्यक्तियों को नहीं माना जाता। वे करीब डेढ़ घंटे तक प्यालों से चाय को धीरे-धीरे पीते रहे। पहले दस-पंद्रह मिनट तो लेखक को बहुत परेशानी हुई। लेकिन धीरे-धीरे लेखक ने महसूस किया कि उनके दिमाग की रफ्तार कम होने लगी है। और कुछ समय बाद तो लगा कि दिमाग बिलकुल बंद ही हो गया है।

लेखक हमें बताना चाहते हैं कि हम लोग या तो बीते हुए दिनों में रहते हैं या आने वाले दिनों में। जबकि दोनों ही समय झूठे होते हैं। जो समय अभी चल रहा है वही सच है। और यह समय कभी न खत्म होने वाला और बहुत अधिक फैला हुआ है। लेखक कहते हैं कि जीना किसे कहते यह उनको चाय समारोह वाले दिन मालूम हुआ। जापानियों को ध्यान लगाने की यह परंपरा विरासत में देन में मिली है।

शब्दार्थ

गिन्नी : सिक्का

आदर्श : उच्चतम चरित्र

व्यवहारिकता : व्यावहारिक रूप में होने वाली स्थितियाँ

बखान : वर्णन

सूझबूझ : सोचने समझने की शक्ति

विलक्षण : अत्यंत लक्षणों वाला

सजग : सतर्क, सावधान

हिसाब : लेखा-जोखा

शाश्वत : सदा रहने वाला

फीसदी : प्रतिशत

मनोरुग्ण	: मानसिक रोग /मानसिक बिमारी
रफ़्तार	: तेज़ी
प्रतिस्पर्धा	: प्रतियोगिता /मुकाबला
तनाव	: द्वेष की स्थिति /टेंशन
टी-सेरेमनी	: जापान में चाय पिने का विशेष आयोजन
दफ़ती	: लकड़ी की खोखली सरकने वाली दीवार जिस पर चित्रकारी होती है
पर्णकुटी	: पत्तों की बनी कुटिया
बेढब-सा	: बेडौल-सा
चानीज़	: जापानी विधि में चाय पिलाने वाला
गरिमापूर्ण	: सलीके से
भंगिमा	: मुद्रा
जयजयवंती	: एक राग का नाम
खदबदाना	: उबलना
चुसकी	: होंठों से कोई तरल पदार्थ थोड़ा-थोड़ा तथा धीरे-धीरे करके पीने की क्रिया का भाव
सिलसिला	: क्रम
उलझन	: असमंजस की स्थिति
अनंतकाल	: कभी ख़त्म न होने वाला समय
सन्नाटा	: मौन /शांति

मिथ्या	- झूठ
विस्तृत	- बहुत अधिक फैला हुआ
ज्ञान परंपरा	- ध्यान लगाने की परंपरा

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

- शुद्ध आदर्श की तुलना सोने से और व्यावहारिकता की तुलना ताँबे से क्यों की गई है?

उत्तर:- शुद्ध सोने में चमक होती है और आदर्श भी शुद्ध सोने की तरह चमकदार और महत्वपूर्ण मूल्यों से भरा होता है। ताँबे से सोना मजबूत तो होता है परन्तु उसकी शुद्धता समाप्त हो जाती है। इसी प्रकार व्यावहारिकता के कारण आदर्श समाप्त हो जाते हैं परन्तु यदि सही ढंग से व्यावहारिकता और आदर्शों को मिलाया जाये तो जीवन में बहुत कुछ हासिल किया जा सकता है।

- चानीज ने कौन-सी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग से पूरी की?

उत्तर:- लेखक और उनके मित्र को देखकर चानीज खड़ा हो गया। कमर झुका कर उसने उन्हें प्रणाम किया और बैठने की जगह दिखाई। अँगीठी को जलाया और उस पर चाय बनाने वाला बरतन रख दिया। वह साथ वाले कमरे में गया और कुछ बरतन ले कर आया। फिर तौलिए से बरतन साफ किए। ये सारा काम चानीज ने बड़े ही सलीके से पूरा किया और उसकी हर एक मुद्रा या काम करने के ढंग से लगता था कि जैसे जयजयवंती नाम के राग की धुन गूँज रही हो।

- 'टी-सेरेमनी' में कितने आदमियों को प्रवेश दिया जाता था और क्यों?

उत्तर:- जापान में 'टी-सेरेमनी' समारोह की सबसे खास बात शांति होती है। इसलिए वहाँ तीन से ज्यादा व्यक्तियों को नहीं माना जाता।

- चाय पिने के बाद लेखक ने स्वयं में क्या परिवर्तन महसूस किया ?

उत्तर:- लेखक कहते हैं कि वे करीब डेढ़ घंटे तक प्यालों से चाय को धीरे-धीरे पीते रहे। पहले दस-पंद्रह मिनट तो लेखक को बहुत परेशानी हुई। लेकिन धीरे-धीरे लेखक ने महसूस किया कि उनके दिमाग की रफ्तार कम होने लगी है। और कुछ समय बाद तो लगा कि दिमाग बिलकुल

बंद ही हो गया है। लेखक को लगा जैसे वह कभी न खत्म होने वाले समय में जी रहा है। यहाँ तक की लेखक का मन इतना शांत हो गया था की बाहर की शांति भी शोर लग रही थी।

- लेखक के मित्र ने मानसिक रोग के क्या-क्या कारण बताए? आप इन कारणों से कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर:- लेखक के मित्र ने मानसिक रोग के कारण बताते हुए कहा कि वहाँ जापान में कोई आराम से नहीं चलता, बल्कि दौड़ता है अर्थात सब एक दूसरे से आगे जाने की सोच रखते हैं। कोई भी व्यक्ति आराम से बात नहीं करता, वे लोग केवल काम की ही बात करते हैं। यहाँ तक की जब जापान के लोग कभी अपने आप को अकेला महसूस करते हैं तो वे किसी और से नहीं बल्कि अपने आप से ही बातें करते हैं। जापान के लोग अमेरिका से प्रतियोगिता में लग गए जिसके कारण वे एक महीने में पूरा होने वाला काम एक दिन में ही खत्म करने की कोशिश करने लगे। ऐसा करने के कारण जब दिमाग थक जाता है और टेंशन में आ कर पूरा इंजन टूट जाता है। यही कारण है कि जापान के लोगो में मानसिक बिमारी बहुत अधिक फैल गई है। हम इन कारणों से पूरी तरह सहमत हैं।

- गांधीजी में नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी; उदहारण सहित इस बात की पुष्टि कीजिए।

उत्तर:- गांधीजी में नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी। गाँधी जी भी व्यावहारिक आदर्शवादियों में से एक थे। वे अपनी व्यावहारिकता को जानते थे और उसकी कीमत को भी पहचानते थे। इन्हीं कारणों की वजह से वे अपने अनेक लक्षणों वाले आदर्श चला सके। यदि गाँधी जी अपने आदर्शों को महत्त्व नहीं देते तो पूरा देश उनके साथ हर समय कंधे-से-कंधा मिला कर खड़ा न होता। यह बात उनके अहिंसात्मक आंदोलन उसे स्पष्ट हो जाती है। वह अकेले चलते थे और लाखों में उनके पीछे हो जाते थे। नमक का कानून तोड़ने के लिए जब उन्होंने जनता का आह्वान किया तो उनके नेतृत्व में हजारों लोग उनके साथ पैदल ही दांडी यात्रा पर निकल पड़े थे। इसी प्रकार से असहयोग आंदोलन के समय भी उनकी एक आवाज़ पर देश के हजारों नौजवान अपनी पढाई छोड़कर उनके नेतृत्व में आंदोलन के रास्ते पर चल पड़े थे।

- आपके विचार से कौन-से ऐसे मूल्य हैं जो शाश्वत हैं ? वर्तमान समय में इन मूल्यों की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- हमारे विचार से – सत्य, अहिंसा, दया, प्रेम, भाईचारा, त्याग, परोपकार, मीठी वाणी, मानवीयता इत्यादि ये मूल्य शाश्वत हैं। वर्तमान समाज में इन मूल्यों की प्रासंगिकता अर्थात् महत्व बहुत अधिक है। जहाँ- जहाँ और जब-जब इन मूल्यों का पालन नहीं किया गया है वहाँ तब-तब समाज का नैतिक पतन हुआ है। सबसे महत्पूर्ण बात तो यह है कि खुद भी तरक्की करो और अपने साथ-साथ दूसरों को भी आगे ले चलो और ये काम हमेशा से ही आदर्शों को सबसे आगे रखने वाले लोगो ने किया है।

- 'शुद्ध सोने में ताँबे की मिलावट या ताँबे में सोना', गांधीजी के आदर्श और व्यवहार के सन्दर्भ में यह बात किस तरह झलकती है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- गांधीजी ने जीवन भर सत्य और अहिंसा का पालन किया। वे आदर्शों को ऊंचाई तक ले कर जाते थे अर्थात् वे सोने में ताँबा मिलकर उसकी कीमत कम नहीं करते थे, बल्कि ताँबे में सोना मिलकर उसकी कीमत बड़ा देते थे। वे अपनी व्यावहारिकता को जानते थे और उसकी कीमत को भी पहचानते थे। इन्हीं कारणों की वजह से वे अपने अनेक लक्षणों वाले आदर्श चला सके। गाँधी जी कभी भी अपने आदर्शों को अपने व्यवहार पर हावी नहीं होने देते थे। बल्कि वे अपने व्यवहार में ही अपने आदर्शों को रखने की कोशिश करते थे। वे किसी भी तरह के आदर्शों में कोई भी व्यावहारिक मिलावट नहीं करते थे बल्कि व्यवहार में आदर्शों को मिलते थे जिससे आदर्श ही सबको दिखे और सब आदर्शों का ही पालन करे और आदर्शों की कीमत बड़े।

- 'गिरगिट' कहानी में अपने समाज में व्याप्त अवसरानुसार अपने व्यवहार को पल-पल में बदल डालने की एक बानगी देखी। इस पाठ के अंश 'गिन्नी का सोना' के सन्दर्भ में स्पष्ट कीजिए कि 'आदर्शवादिता' और 'व्यावहारिकता' इनमेसे जीवन में किसका महत्त्व है ?

उत्तर:- 'गिरगिट' कहानी में स्वार्थी इंस्पेक्टर समाज में व्याप्त अवसरानुसार अपने व्यवहार को पल-पल बदलता है। वह अवसर के साथ-साथ जहाँ उसका लाभ हो रहा हो वहाँ उसी के अनुसार अपना व्यवहार बदलता है। 'गिन्नी का सोना' कहानी में इस बात पर बल दिया गया है कि आदर्श शुद्ध सोने के समान हैं। उनमे व्यावहारिकता का गुण मिलाकर उन्हें और भी अधिक मजबूत किया जा सकता है। समाज में देखा गया है कि व्यवहारवादी लोग आदर्शवादी लोगो से बहुत आगे तो बढ़ जाते हैं परन्तु वे अपने जीवन के नैतिक मूल्यों को पीछे छोड़ देते हैं और

स्वार्थी हो जाते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि खुद भी तरक्की करो और अपने साथ-साथ दूसरों को भी आगे ले चलो और ये काम हमेशा से ही आदर्शों को सबसे आगे रखने वाले लोगो ने किया है। हमारे समाज में अगर हमेशा रहने वाले कई मूल्य बचे हैं तो वो सिर्फ आदर्शवादी लोगो के कारण ही बच पाए हैं। व्यवहारवादी लोग तो केवल अपने आप को आगे लाने में लगे रहते हैं उनको कोई फर्क नहीं पड़ता अगर समाज को नुकसान हो रहा हो।

- लेखक के अनुसार सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- लेखक के अनुसार सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए। हम लोग या तो बीते हुए दिनों में रहते हैं या आने वाले दिनों में। जबकि दोनों ही समय झूठे होते हैं। वो इसलिए क्योंकि एक बीत चुका होता है और दूसरा अभी आया भी नहीं होता। तो बात आती है कि सच क्या है तो इस बात पर लेखक कहते हैं कि जो समय अभी चल रहा है वही सच है।

- लेखक के मित्र ने मानसिक रोग के क्या-क्या कारण बताए ?आप इन कारणों से कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर:- लेखक के मित्र ने मानसिक रोग के कारण बताते हुए कहा कि वहाँ जापान में कोई आराम से नहीं चलता, बल्कि दौड़ता है अर्थात् सब एक दूसरे से आगे जाने की सोच रखते हैं। कोई भी व्यक्ति आराम से बात नहीं करता, वे लोग केवल काम की ही बात करते हैं। यहाँ तक की जब जापान के लोग कभी अपने आप को अकेला महसूस करते हैं तो वे किसी और से नहीं बल्कि अपने आप से ही बातें करते हैं। जापान के लोग अमेरिका से प्रतियोगिता में लग गए जिसके कारण वे एक महीने में पूरा होने वाला काम एक दिन में ही खत्म करने की कोशिश करने लगे। ऐसा करने के कारण जब दिमाग थक जाता है और टेंशन में आ कर पूरा इंजन टूट जाता है। यही कारण है कि जापान के लोगो में मानसिक बिमारी बहुत अधिक फैल गई है। हम इन कारणों से पूरी तरह सहमत हैं।

- लेखक के अनुसार सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- लेखक के अनुसार सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए। हम लोग या तो बीते हुए दिनों में रहते हैं या आने वाले दिनों में। जबकि दोनों ही समय झूठे होते हैं। वो इसलिए

क्योंकि एक बीत चुका होता है और दूसरा अभी आया भी नहीं होता। तो बात आती है कि सच क्या है तो इस बात पर लेखक कहते हैं कि जो समय अभी चल रहा है वही सच है।

- 'पतझड़ में टूटी पत्तियाँ' पाठ के दूसरे प्रसंग (झेन की देन) में लेखक ने किस पद्धति का वर्णन किया है?

उत्तर:- बौद्ध दर्शन में वर्णित ध्यान की उस पद्धति की याद दिलाता है जिसके कारण जापान के लोग आज भी अपनी व्यस्ततम दिन भर के कामों के बीच भी कुछ चैन भरे या सुकून के पल हासिल कर ही लेते हैं।

- लेखक के मित्र के अनुसार जापानी किस रोग से पीड़ित हैं और क्यों?

उत्तर:- लेखक के मित्र के अनुसार जापानी मानसिक रोग से पीड़ित हैं। इसका कारण उनकी असीमित आकांक्षाएँ, उनको पूरा करने के लिए किया गया भागम-भाग भरा प्रयास, महीने का काम एक दिन में करने की चेष्टा, अमेरिका जैसे विकसित राष्ट्र से प्रतिस्पर्धा आदि है।

- 'टी-सेरेमनी' की चाय का लेखक पर क्या असर हुआ?

उत्तर:- 'टी-सेरेमनी' में चाय पीते समय लेखक पहले दस-पंद्रह मिनट परेशान हो गया। फिर उसके दिमाग की रफ्तार धीमी होने लगी। जो कुछ देर में बंद-सी हो गई। अब उसे सन्नाटा भी सुनाई दे रहा था। उसे लगने लगा कि वह अनंतकाल में जी रहा है।

- 'जीना किसे कहते हैं' लेखक को किस स्थिति में एहसास हुआ?

उत्तर:- 'जीना किसे कहते हैं' लेखक ने ऐसा उस स्थिति में महसूस किया जब वह भूतकाल और भविष्य दोनों को मिथ्या मानकर उन्हें भूल बैठा। उसके सामने जो वर्तमान था उसी को उसने सच मान लिया था। टी-सेरेमनी में चाय पीते-पीते उसके दिमाग से दोनों काल उड़ गए थे। वह अनंतकाल जितने विस्तृत वर्तमान में जी रहा था।

- जापान में चाय समारोह की सबसे खास बात क्या होती है और लेखक को वहाँ कैसा महसूस हुआ?

उत्तर:- लेखक कहते हैं कि चाय समारोह में चाय बनाने वाले ने चाय तैयार की और फिर उन प्यालों को लेखक और उनके मित्रों के सामने रख दिया। जापान में इस चाय समारोह की सबसे खास बात शांति होती है। इसलिए वहाँ तीन से ज्यादा व्यक्तियों को नहीं माना जाता।

वे करीब डेढ़ घंटे तक प्यालों से चाय को धीरे-धीरे पीते रहे। पहले दस-पंद्रह मिनट तो लेखक को बहुत परेशानी हुई। लेकिन धीरे-धीरे लेखक ने महसूस किया कि उनके दिमाग की रफ्तार कम होने लगी है। और कुछ समय बाद तो लगा कि दिमाग बिलकुल बंद ही हो गया है।

- लेखक हमें वर्तमान समय के बारे में क्या बताना चाहते हैं ?

उत्तर:- लेखक हमें बताना चाहते हैं कि हम लोग या तो बीते हुए दिनों में रहते हैं या आने वाले दिनों में। जबकि दोनों ही समय झूठे होते हैं। क्योंकि बीते हुए समय को हम फिर से जी नहीं सकते और आने वाले समय का हम अंदाजा भी नहीं लगा सकते कि वह कैसा होगा। जो समय अभी चल रहा है अर्थात् वर्तमान , वही सच है। और यह समय कभी न खत्म होने वाला और बहुत अधिक फैला हुआ है। क्योंकि हम हमेशा वर्तमान में ही रहते हैं।

- जापान की तरह ही भारत में भी लोगों की जिंदगी की गतिशीलता में खूब वृद्धि हुई है। 'झेन की देन' पाठ के आधार पर वर्णन कीजिए।

Individual Tuition Concept

उत्तर:- अपने जीवन में अत्यधिक सुख-सुविधाएँ को पाने की इच्छा, भौतिकवादी सोच और विकसित बनने की चाहत ने भारतीयों की जिंदगी की गतिशीलता में वृद्धि की है। भारत भी अन्य विकासशील देशों की भाँती विकास के पथ पर अग्रसर है। गाँव हो या महानगर, सभी प्रगति के लिए भागते दिख रहे हैं। विकसित देशों की भाँति जीवन शैली अपनाने के लिए लोगों की जिंदगी में भागमभाग मची हुई है। अपनी जिंदगी में इतने व्यस्त होने के कारण अब लोगों के पास अपनों के लिए भी समय नहीं बचा है। भारत के लोगों की स्थिति भी जापानियों जैसी हो रही है जो चलने की जगह दौड़ रहे हैं, बोलने की जगह बक रहे हैं और इससे भी दो कदम आगे बढ़कर मानसिक रोगी होने लगे हैं।

- 'झेन की देन' पाठ से आपको क्या संदेश मिलता है?

उत्तर:- 'झेन की देन' पाठ हमें अत्यधिक व्यस्त जीवनशैली और उसके दुष्परिणामों से अवगत करवाता है। पाठ में जापानियों की व्यस्त दिनचर्या से उत्पन्न मानसिक रोग की चर्चा की गई है, वहाँ की 'टी-सेरेमनी' के माध्यम से जापान के लोग अपने मानसिक तनाव से मुक्त होते हैं। 'टी-सेरेमनी' के माध्यम से लेखक ने हमें यह संदेश दिया है कि अधिक तनाव मनुष्य को पागल बना देता है। इससे बचने का उपाय है मन को शांत रखना। हमें बीते दिनों और भविष्य की कल्पनाओं को भूलकर वर्तमान की वास्तविकता में जीना चाहिए और वर्तमान का भरपूर आनंद लेना चाहिए। क्योंकि बीते हुए दिनों को हम चाह कर भी वापिस नहीं ला सकते और भविष्य में क्या होना है इसका अंदाजा भी हम नहीं लगा सकते। मानसिक तनाव से मुक्त होने के लिए मन से चिंता, तनाव और अधिक काम की बोझिलता हटाना आवश्यक है ताकि शांति एवं चैन से जीवन कटे।

- लेखक ने जब अपने जापानी मित्र से वहाँ की सबसे खतरनाक बीमारी के बारे में पूछा तो उसने क्या कहा और उसका क्या कारण बताया?

उत्तर:- लेखक ने जब अपने जापानी मित्र से वहाँ की सबसे खतरनाक बीमारी के बारे में पूछा तो उसने कहा कि जापान के लोगों को सबसे अधिक मानसिक बीमारी का शिकार होना पड़ता है। लेखक के इस मानसिक बिमारी की वजह पूछने पर लेखक के मित्र ने उत्तर दिया कि उनके जीवन की तेजी औरों से अधिक है।

जापान में कोई आराम से नहीं चलता, बल्कि दौड़ता है अर्थात् सब एक दूसरे से आगे जाने की सोच रखते हैं। कोई भी व्यक्ति आराम से बात नहीं करता, वे लोग केवल काम की ही बात करते हैं। जापान के लोग अमेरिका से प्रतियोगिता में लग गए जिसके कारण वे एक महीने में पूरा होने वाला काम एक दिन में ही खत्म करने की कोशिश करने लगे। यही कारण है कि जापान के लोगों में मानसिक बिमारी फैल गई है।

- लेखक का दोस्त लेखक को चा-नो-यू के लिए कहाँ ले गया और वहाँ का माहौल कैसा था ?

उत्तर:- एक शाम को लेखक का जापानी दोस्त उन्हें चा-नो-यू अर्थात् जापान के चाय पीने के एक विशेष आयोजन में ले गया। लेखक और उनका मित्र चाय पीने के आयोजन के लिए जहाँ गए थे वह एक छः मंजिल की इमारत थी। उसकी छत पर एक सरकने वाली दीवार थी जिस पर चित्रकारी की गई थी और पत्तों की एक कुटिया बनी हुई थी जिसमें जमीन पर चटाई बिछी हुई थी। उसके बाहर बैडोल-सा मिट्टी का एक पानी भरा हुआ बरतन था।

लेखक और उनके मित्र उस पानी से हाथ-पाँव धोकर अंदर गए। अंदर चाय देने वाला एक व्यक्ति था जिसे चानीज कहा जाता है। उन्हें देखकर वह खड़ा हो गया। कमर झुका कर उसने उन्हें प्रणाम किया और बैठने की जगह दिखाई। अँगीठी को जलाया और उस पर चाय बनाने वाला बरतन रख दिया। वह साथ वाले कमरे में गया और कुछ बरतन ले कर आया। फिर तौलिए से बरतन साफ किए। ये सारा काम उस व्यक्ति ने बड़े ही सलीके से पूरा किया और उसकी हर एक मुद्रा या काम करने के ढंग से लगता था कि जैसे जयजयवंती नाम के राग की धुन गूँज रही हो। उस जगह का वातावरण इतना अधिक शांत था कि चाय बनाने वाले बरतन में उबलते हुए पानी की आवाज़ें तक सुनाई दे रही थीं।

निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए –

- समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है।

उत्तर:- हमारे समाज में अगर हमेशा रहने वाले कई मूल्य बचे हैं तो वो सिर्फ आदर्शवादी लोगों के कारण ही बच पाए हैं। खुद भी तरक्की करो और अपने साथ-साथ दूसरों को भी आगे ले चलो और ये काम हमेशा से ही आदर्शों को सबसे आगे रखने वाले लोगों ने किया है। व्यवहारवादी लोग तो केवल अपने आप को आगे लाने में लगे रहते हैं उनको कोई फर्क नहीं पड़ता अगर समाज को नुकसान हो रहा हो।

- जब व्यावहारिकता का बखान होने लगता है तब 'प्रेक्टिकल आइडियालिस्टों' के जीवन से आदर्श धीरे-धीरे पीछे हटने लगते हैं और उनकी व्यवहारिक सूझबूझ ही आने लगती है।

उत्तर:- जब किसी के व्यवहार का वर्णन होना शुरू होता है तो जिन्हें व्यावहारिक आदर्शवादी लोग समझते हैं उन व्यावहारिक आदर्शवादी लोगों के जीवन से आदर्श व्यावहारिक वर्णन के कारण कम होने लगते हैं क्योंकि वर्णन कभी भी आदर्शों का नहीं होता, बल्कि आपके व्यवहार का होता है। और आदर्शों के कम होते ही सोचने की शक्ति बढ़ने लगती है।

- जीवन की रफ्तार बढ़ गई है। यहाँ कोई चलता नहीं, बल्कि दौड़ता है। कोई बोलता नहीं, बकता है। हम जब अकेले पड़ते हैं तब अपने आपसे लगातार बड़बड़ाते रहते हैं।

उत्तर:- जापान के लोगों के जीवन की तेजी औरों से अधिक है। जापान में कोई आराम से नहीं चलता, बल्कि दौड़ता है अर्थात् सब एक दूसरे से आगे जाने की सोच रखते हैं। जापान में कोई भी व्यक्ति आराम से बात नहीं करता, वे लोग केवल काम की ही बात करते हैं। यहाँ तक की जब जापान के लोग कभी अपने आप को अकेला महसूस करते हैं तो वे किसी और से नहीं बल्कि अपने आप से ही बातें करते हैं।

- सभी क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण ढंग से कीं कि उसकी हर भंगिमा से लगता था मानो जयजयवंती के सुर गूँज रहे हों।

उत्तर:- जापान में चाय बनाने वाले को चानीज कहते हैं और उसने लेखक और उनके मित्रों के स्वागत से ले कर चाय परोसने तक का सारा काम इतने ही सलीके से पूरा किया और उसकी हर एक मुद्रा या काम करने के ढंग से लगता था कि जैसे जयजयवंती नाम के राग की धुन गूँज रही हो। उस जगह का वातावरण इतना अधिक शांत था कि चाय बनाने वाले बरतन में उबलते हुए पानी की आवाज़ें तक सुनाई दे रही थी।

INTERVAL

Individual Tuition Concept

पाठ - 14

कारतूस

लेखक परिचय

लेखक – हबीब तनवीर

जन्म – 1923 (छत्तीसगढ़, रायपुर)

कारतूस पाठ का सारांश

प्रस्तुत पाठ में एक ऐसे अपनी जान पर खेल जाने वाले शूरवीर के कारनामों का वर्णन किया गया है, जिसका केवल एक ही लक्ष्य था-अंग्रेजों को देश से बाहर निकालना। प्रस्तुत पाठ में लेखक ने चार व्यक्तियों का वर्णन किया है, वे हैं – कर्नल, लेफ्टिनेंट, सिपाही और सवार।

कर्नल और लेफ्टिनेंट आपस में वज़ीर अली के कारनामों की बात करते हुए कहते हैं कि वज़ीर अली ने अंग्रेजों की नाक में दम कर रखा है और उसको देख कर उन्हें रॉबिनहुड की याद आ जाती है। फिर कर्नल लेफ्टिनेंट को सआदत अली यानि वज़ीर अली के चाचा के बारे में बताता है की किस तरह वो वज़ीर अली के पैदा होने से दुखी था और अंग्रेजो का मित्र बन गया था। अवध के सिंहासन पर बने रहने के लिए उसने अंग्रेजो को अपनी आधी दौलत और दस लाख रूपए दिए थे।

लेफ्टिनेंट को जब पता चलता है की हिंदुस्तान के बहुत से राजा, बादशाह और नवाब अफगानिस्तान के नवाब को दिल्ली पर हमला करने के लिए आमंत्रित कर रहे हैं तो लेफ्टिनेंट की बातों में हामी भरते हुए कर्नल कहता है, कि अगर ऐसा हुआ तो कंपनी ने जो कुछ हिन्दुस्तान में हासिल किया है वह सब कुछ गवाना पड़ेगा।

कर्नल की बातों को सुन कर लेफ्टिनेंट कर्नल से कहता है कि वज़ीर अली की आजादी अंग्रेजों के लिए खतरा है। इसलिए अंग्रेजों को किसी भी तरह वज़ीर अली को गिरफ्तार करना ही चाहिए। कर्नल कहता है कि तभी तो वह अपनी पूरी फ़ौज को ले कर उसका पीछा कर रहा है और वज़ीर अली उनको सालों से धोखा दे रहा है। वज़ीर अली बहुत ही बहादुर आदमी है। वज़ीर अली ने

कंपनी के एक वकील की हत्या भी की है। कर्नल ने हत्या की घटना का वर्णन करते हुए कहा कि वज़ीर अली को उसके पद से हटाने के बाद अंग्रेजों ने वज़ीर अली को बनारस भेज दिया था, कुछ महीनों के बाद गवर्नर जनरल वज़ीर अली को कलकत्ता (कोलकता) में बुलाने लगा। वज़ीर अली ने कंपनी के वकील से शिकायत की कि गवर्नर जनरल उसे कलकत्ता बुला रहा है। वकील ने वज़ीर अली की शिकायत पर कोई गौर नहीं किया और उल्टा वज़ीर अली को ही बुरा-भला कहने लगा। वज़ीर अली के दिल में तो पहले से ही अंग्रेजों के खिलाफ नफ़रत कूट-कूटकर भरी हुई थी और वकील के इस तरह के व्यवहार ने वज़ीर अली को गुस्सा दिला दिया और उसने चाकू से वहीं वकील की हत्या कर दी।

कर्नल लेफ्टिनेंट को समझाता है कि वज़ीर अली किसी भी तरह नेपाल पहुँचना चाहता है। वहाँ पहुँच कर उसकी योजना है कि वह अफगानिस्तान का हिन्दुस्तान पर हमले का इंतजार करेगा, अपनी ताकत को बढ़ाएगा, सआदत अली को सिंहासन से हटाकर खुद अवध पर कब्ज़ा करेगा और अंग्रेजों को हिन्दुस्तान से निकालेगा। अंग्रेजी फ़ौज और नवाब सआदत अली खाँ के सिपाही बहुत सख्ती से वज़ीर अली का पीछा कर रहे हैं। अंग्रेजी फ़ौज को पूरी जानकारी है कि वज़ीर अली जंगलों में कहीं छुपा हुआ है।

लेफ्टिनेंट कहता है कि घोड़े पर सवार आदमी सीधा अंग्रेजों के तम्बू की ओर आता मालूम हो रहा है। घोड़े के टापों की आवाज़ बहुत नजदीक आकर रुक जाती है। सिपाही अंदर आकर कर्नल से कहता है कि वह सवार उससे मिलना चाहता है। कर्नल सिपाही से उस सवार को अंदर लाने के लिए कहता है। कर्नल सवार से आने का कारण पूछता है। सवार कर्नल से कुछ कारतूस मांगता है और कहता है कि वह वज़ीर अली को गिरफ्तार करना चाहता है। यह सुन कर कर्नल सवार को दस कारतूस दे देता है और जब सवार से नाम पूछता है तो सवार अपना नाम वज़ीर अली बताता है और कहता है कि कर्नल ने उसे कारतूस दिए हैं इसलिए वह उसकी जान को बख़्श रहा है। इतना कह कर वज़ीर अली बाहर चला जाता है, घोड़े के टापों की आवाज़ों से लगता है की वह दूर चला गया है। इतने में लेफ्टिनेंट अंदर आता है और कर्नल से पूछता है कि वह सवार कौन था। कर्नल अपने आप से कहता है कि वह एक ऐसा सिपाही था जो अपनी जान की परवाह नहीं करता और आज ये कर्नल ने खुद देख लिया था।

शब्दार्थ

हुकूमत : शासन

पाक : साफ़

तकरीबन	: लगभग
अफ़साने	: कहानियाँ
उम्मीद	: आशा / भरोसा
पैदाइश	: जन्म
तख़्त	: राजसिंहासन
मसलेहत	: रहस्य
ऐश पसंद	: भोग-विलास को पसंद करने वाला
बरस	: साल
आँखों में धूल झोंकना	: धोखा देना
जाँबाज़	: जान की बाज़ी लगाने वाला
मुठी भर	: बहुत कम
दमखम	: शक्ति और दृढ़ता
किस्सा	: कहानी / घटना
वज़ीफ़ा	: सहायता / वृत्ति
मुकरर	: निश्चित
तलब	: खोज / तलाश
हुक्मरां	: शासक
हिफ़ाजत	: देख-रेख
कारवाँ	: पैदल चलने वाले यात्रियों का समूह / काफ़िला

स्कीम	: योजना
गर्द	: धूल
मसरूफ़	: संलग्न / काम में लगा हुआ
काफ़िला	: एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाने वाले यात्रियों का समूह
सरपट	: तेज़ दौड़ते हुए
शुब्हे	: संदेह / शक
गुंजाइश	: सम्भावना / स्थान
हुज़ूर	: जनाब / मालिक
खामोश	: चुप
तन्हार्ई	: एकांत
राज़ेदिल	: जो भी दिल में हो
दीवार हमगोश दारद	: दीवारों के भी कान होते हैं
वक्फ़े	: समय
मुकाम	: जगह / स्थान
हुक्म	: आदेश
लावलशकर	: सेना और उसके साथ रहने वाली तमाम सामग्री / संगी-साथी
जाँबाज़	: अपनी जान से खेल जाने वाला
चंद	: थोड़े
कारतूस	: पीतल और दफ़्ती आदि की एक नली जिसमें गोली तथा बारूद भरी

	जाती है
शुक्रिया	: धन्यवाद
हक्का-बक्का	: घबराया सा

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

- वज़ीर अली के अफ़साने सुन कर कर्नल को रॉबिनहुड की याद क्यों आ जाती थी ?

उत्तर:- कर्नल को वज़ीर अली की कहानियाँ सुन कर रॉबिनहुड के कारनामे याद आ जाती थी। रॉबिनहुड की ही तरह वज़ीर अली के मन में भी अंग्रेजों के खिलाफ बहुत अधिक नफरत भरी पड़ी थी। वज़ीर अली भी रॉबिनहुड की ही तरह बहादुर था और अंग्रेजों को अपने देश से निकलना चाहता था।

- सआदत अली कौन था ? उसने वज़ीर अली की पैदाइश को अपनी मौत क्यों समझा ?

उत्तर:- सआदत अली, वज़ीर अली का चाचा और आसिफ़ुद्दौला का भाई था। वज़ीर अली के पैदा होने को सआदत अली ने अपनी मौत ही समझ लिया था क्योंकि वज़ीर अली के पैदा होने के बाद अब वह अवध के सिंहासन को हासिल नहीं कर सकता था।

- सआदत अली को अवध के तख़्त पर बिठाने के पीछे कर्नल का क्या मकसद था ?

उत्तर:- सआदत अली अंग्रेजों का दोस्त था और भोग-विलास में रहना पसंद करता था। इसी कारण उसने अपनी आधी जायदाद और दौलत अंग्रेजों को दे दी और साथ ही दस लाख रुपये नगद भी दिए ताकि अंग्रेज उसको सिंहासन पर बना रहने दें। इस तरह अंग्रेजों का उसे तख़्त पर बिठाने में लाभ-ही-लाभ था।

- कंपनी के वकील का क़त्ल करने के बाद वज़ीर अली ने अपनी हिफ़ाजत कैसे की ?

उत्तर:- वज़ीर अली वकील की हत्या करने के बाद भाग गया था। वह अपने साथियों के साथ आजमगढ़ की तरफ़ भाग गया। आजमगढ़ के शासकों ने उन सभी को अपनी सुरक्षा देते हुए घागरा तक पहुँचा दिया। तब से वह वहाँ के जंगलों में ही रहने लगा।

- सवार के जाने के बाद कर्नल क्यों हक्का-बक्का रह गया ?

उत्तर:- वज़ीर अली बहुत ही चतुराई और बहादुरी से कर्नल के तम्बू में सवार बन कर गया था और कर्नल को बेवकूफ बना कर दस कारतूस भी ले लिए थे। जाने के समय तक कर्नल को यह जानकारी नहीं थी कि वह सवार असल में कौन है। जब जाते हुए सवार ने अपना नाम वज़ीर अली बताया तो कर्नल उसकी बहादुरी को देख कर हक्का-बक्का रह गया।

- लेफ़्टिनेंट को ऐसा क्यों लगा कि कंपनी के खिलाफ़ सारे हिन्दुस्तान में एक लहार दौड़ गई है ?

उत्तर:- जब लेफ़्टिनेंट ने कहा कि कहीं से खबर है कि वज़ीर अली अफ़ग़ानिस्तान के बादशाह शाहे-ज़मा को हिन्दुस्तान पर हमला करने के लिए आमंत्रित कर रहा है। तो कर्नल ने कहा कि सबसे पहले अफ़ग़ानिस्तान को हिन्दुस्तान पर हमला करने के लिए टीपू सुल्तान ने आमंत्रित किया था और उसके बाद वज़ीर अली ने और फिर शमसुद्दौला ने भी अफ़ग़ानिस्तान को हिन्दुस्तान पर हमला करने के लिए आमंत्रण दिया। ये सब जान कर लेफ़्टिनेंट को लगा कि कंपनी के खिलाफ़ सारे हिन्दुस्तान में एक लहार दौड़ गई है।

- वज़ीर अली ने कंपनी के वकील का क़त्ल क्यों किया ?

उत्तर:- वज़ीर अली को उसके नवाब के पद से हटाने के बाद अंग्रेजों ने वज़ीर अली को बनारस भेज दिया था, कुछ महीनो के बाद गवर्नर जनरल वज़ीर अली को कलकत्ता (कोलकता) बुलाने लगा। वज़ीर अली कंपनी के वकील से शिकायत की कि गवर्नर जनरल उसे कलकत्ता बुला रहा है।

वकील ने वज़ीर अली की शिकायत पर कोई गौर नहीं किया और उल्टा वज़ीर अली को ही बुरा-भला कहने लगा। वज़ीर अली के दिल में तो पहले से ही अंग्रेजों के खिलाफ़ नफ़रत कूट-कूटकर भरी हुई थी और वकील के इस तरह के व्यवहार ने वज़ीर अली को गुस्सा दिला दिया और उसने चाकू से वहीं वकील का क़त्ल कर दिया।

- सवार ने कर्नल से कारतूस कैसे हासिल किया ?

उत्तर:- वज़ीर अली सवार बन कर अकेले ही अंग्रेजों के तम्बू में गया और कर्नल को ऐसे दिखाया जैसे यह भी वज़ीर अली के खिलाफ है। उसने कर्नल को कहा की उसे वज़ीर अली को गिरफ्तार करने के लिए कुछ कारतूस चाहिए। कर्नल को लगा की वह भी वज़ीर अली को पकड़ना चाहता है इसलिए कर्नल ने सवार को दस कारतूस दे दिए। इस तरह सवार ने कर्नल से कारतूस हासिल किए।

- वज़ीर अली एक जाँबाज़ सिपाही था, कैसे ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- वज़ीर अली को अंग्रेजों ने उनके नवाब पद से हटा दिया था और बनारस भेज दिया था। वज़ीर अली के लिए जो रकम दी गई थी उसमें अड़चन डालने के लिए उसे कलकत्ता बुलाया जा रहा था, जब इसकी शिकायत वकील से करने गया तो वकील उल्टा उसी को बुरा-भला कहने लगा। वकील के ऐसे व्यवहार पर उसे गुस्सा आया और उसने वकील की हत्या कर दी। महीनों अंग्रेजों को जंगलों में दौड़ाता रहा परन्तु फिर भी उनके हाथ नहीं आया। अकेले ही अंग्रेजों के तंबू में कर्नल से मिलने चला गया और उससे दस कारतूस भी ले आया और जाते-जाते अपना सही नाम भी बता दिया। इतने जोखिम भरे कारनामों से सिद्ध होता है कि वज़ीर अली एक जाँबाज़ सिपाही था।

- वज़ीर अली कौन था?

उत्तर:- वज़ीर अली अवध के शासक आसिफउद्दौला का पुत्र था। अंग्रेजों ने वज़ीर अली को सत्ता से हटाकर उसके चाचा सआदत अली को अवध की गद्दी पर बिठाया था। वज़ीर अली के मन में अंग्रेजों के प्रति घृणा भरी थी। उसने कंपनी के वकील की हत्या कर दी थी, इसलिए अंग्रेज उसे पकड़ना चाहते थे।

- अंग्रेज वज़ीर अली को क्यों पकड़ना चाहते थे?

उत्तर:- गद्दी पर से हटाए जाने के कारण वज़ीर अली के मन में अंग्रेजों के प्रति घृणा भरी थी। वह अंग्रेजों को हिन्दुस्तान से भगाना चाहता था। उसने कंपनी के एक वकील की हत्या कर दी थी और वह अंग्रेजों के लिए खतरा बना हुआ था, इसलिए अंग्रेज उसे पकड़ना चाहते थे।

- 'कारतूस' पाठ में जान पर खेल जाने वाले शूरवीर का क्या लक्ष्य था?

उत्तर:- 'कारतूस' पाठ में एक ऐसे अपनी जान पर खेल जाने वाले शूरवीर के कारनामों का वर्णन किया गया है, जिसका केवल एक ही लक्ष्य था-अंग्रेजों को देश से बाहर निकालना।

- कर्नल और लेफ्टिनेंट को वज़ीर अली के कारनामों से किसकी याद आती है?

उत्तर:- कर्नल और लेफ्टिनेंट को वज़ीर अली के कारनामों की बात करते हुए कहते हैं कि वज़ीर अली ने अंग्रेजों की नाक में दम कर रखा है और उसको देख कर उन्हें रॉबिनहुड की याद आ जाती है।

- अंग्रेज़ सैनिक वज़ीर अली को पकड़ने का प्रयास कब और कहाँ कर रहे थे?

उत्तर:- अंग्रेजों ने वज़ीर अली को शासन से हटाया था और उसे काशी भेज दिया था। वज़ीर अली अंग्रेजों से नफ़रत करता था। उसने कंपनी के वकील की हत्या कर दी और गोरखपुर के जंगलों में जा छिपा था। अंग्रेज़ सैनिक वहीं जंगल में खेमा डालकर वज़ीर अली को पकड़ने का प्रयास कर रहे थे।

- कर्नल लेफ्टिनेंट को सआदत अली यानि वज़ीर अली के चाचा के बारे में कर्नल क्या बताता है?

उत्तर:- कर्नल लेफ्टिनेंट को सआदत अली यानि वज़ीर अली के चाचा के बारे में बताता है कि किस तरह वो वज़ीर अली के पैदा होने से दुखी था और अंग्रेजों का मित्र बन गया था। अवध के सिंहासन पर बने रहने के लिए उसने अंग्रेजों को अपनी आधी दौलत और दस लाख रूपए दिए थे।

- शाहे-जमा कौन था? उसे वज़ीर अली ने भारत आने के लिए क्यों आमंत्रित किया?

उत्तर:- शाहे-जमा अफगानिस्तान का शक्तिशाली शासक था। उसे वज़ीर अली ने भारत आने के लिए इसलिए आमंत्रित किया ताकि वह भारत पर हमला करे। इसी समय वज़ीर अली भी उसका साथ पाकर अंग्रेजों पर हमला कर दे। इस तरह उसकी योजना थी कि वह शाहे-ज़मा के सहयोग से अंग्रेजों को भारत से भगा देगा और अपनी खोई सत्ता हासिल कर लेगा।

- यदि अफगानिस्तान के नवाब ने दिल्ली पर हमला किया तो क्या होगा?

उत्तर:- लेफ्टिनेंट को जब पता चलता है की हिंदुस्तान के बहुत से राजा, बादशाह और नवाब अफगानिस्तान के नवाब को दिल्ली पर हमला करने के लिए आमंत्रित कर रहे हैं तो लेफ्टिनेंट की बातों में हामी भरते हुए कर्नल कहता है, कि अगर ऐसा हुआ तो कंपनी ने जो कुछ हिन्दुस्तान में हासिल किया है वह सब कुछ गवाना पड़ेगा।

● वज़ीर अली ने किस तरह कर्नल को मात दी?

उत्तर:- वज़ीर अली को पकड़ने के लिए कर्नल ने पूरे लाव-लशकर के साथ खेमा डाल रखा था। वह इसी अवसर में था कैसे भी वज़ीर अली को पकड़ा जाए पर एक रात्रि स्वयं वज़ीर अली कर्नल के खेमे में आया और उससे दस कारतूस ही नहीं लिया बल्कि कारतूस देने के बदले उसकी जान बखशने की बात कहकर चला गया। इस तरह वज़ीर अली ने अपने साहस और चतुराई से कर्नल को मात दी।

● वज़ीर अली की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख 'कारतूस' पाठ के आधार पर कीजिए।

उत्तर:- 'कारतूस' पाठ से ज्ञात होता है कि वज़ीर अली अत्यंत साहसी, वीर, महत्वाकांक्षी और स्वाभिमानी शासक था। अवध की सत्ता छिनने के बाद उसके इन गुणों को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

Individual Tuition Concept

उसकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

साहसी – वज़ीर अली के साहस की जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम ही है। उसने कंपनी के वकील की हत्या कर दी थी। वह कर्नल के कैंप में घुसकर उससे कारतूस भी लाता है ये उसके साहसी होने के प्रमाण हैं।

वीर – वज़ीर अली इतना वीर है कि अवध की सत्ता छिनने के बाद भी अंग्रेजों को देश से खदेड़ने के लिए हर संभव प्रयास करता रहता है।

महत्वाकांक्षी – वज़ीर अली महत्वाकांक्षी व्यक्ति है। वह अवध का शासक बनने की महत्वाकांक्षा सदा बनाए रखता है।

स्वाभिमानी – वज़ीर अली इतना स्वाभिमानी है कि वह कंपनी के वकील की अपमानजनक

बातों को सह नहीं पाता है और उसकी हत्या कर देता है।

- भारतीय नवाबों ने अंग्रेजों से पीछा छुड़ाने के लिए विदेशी शासकों का भी सहारा लिया इसमें वे कितना सफल रहे। पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- भारतीय नवाबों को जब अंग्रेजों की कुटिल नीतियाँ समझ में आईं तो उन्होंने अंग्रेजों का विरोध करना शुरू कर दिया पर शायद तब तक बहुत देर हो चुकी थी। अंग्रेज 'फूट डालो और शासन करो' की नीति अपनाते हुए संपूर्ण भारत पर शासन करने का हर संभव हथकंडा अपना रहे थे।

भारतीय नवाब भी उनकी नीतियों का विरोध करते हुए उनसे युद्ध किया। इसमें सफलता न मिलती देखकर उन्होंने अफगानिस्तान के शासक शाहे-जमा को भी भारत पर हमला करने के लिए आमंत्रित किया। इस क्रम में टीपू सुल्तान ने सबसे पहले इस अफगान शासक को बुलावा भेजा। फिर बंगाल के नवाब शमसुद्दौला और अवध के नवाब वजीर अली ने शाहे-जमा को बुलावा भेजा पर इस प्रयास से भी अंग्रेजों से पीछा छुड़ाने में असफल रहे।

- कर्नल ने कंपनी के वकील की हत्या की घटना का कैसे वर्णन किया?

उत्तर:- कर्नल ने कंपनी के वकील की हत्या की घटना का वर्णन करते हुए कहा कि वजीर अली को उसके पद से हटाने के बाद अंग्रेजों ने वजीर अली को बनारस भेज दिया था, कुछ महीनों के बाद गवर्नर जनरल वजीर अली को कोलकता में बुलाने लगा। वजीर अली ने कंपनी के वकील से शिकायत की कि गवर्नर जनरल उसे कलकत्ता बुला रहा है।

वकील ने वजीर अली की शिकायत पर कोई गौर नहीं किया और उल्टा वजीर अली को ही बुरा-भला कहने लगा। वजीर अली के दिल में तो पहले से ही अंग्रेजों के खिलाफ नफरत कूट-कूटकर भरी हुई थी और वकील के इस तरह के व्यवहार ने वजीर अली को गुस्सा दिला दिया और उसने चाकू से वहीं वकील की हत्या कर दी।

- कर्नल लेफ्टिनेंट को वजीर अली की किस योजना को समझाता है और उस योजना को असफल करने के क्या उपाय बताता है?

उत्तर:- कर्नल लेफ्टिनेंट को समझाता है कि वज़ीर अली किसी भी तरह नेपाल पहुँचना चाहता है। वहाँ पहुँच कर उसकी योजना है कि वह अफगानिस्तान का हिन्दुस्तान पर हमले का इंतजार करेगा, अपनी ताकत को बढ़ाएगा, सआदत अली को सिंहासन से हटाकर खुद अवध पर कब्ज़ा करेगा और अंग्रेजों को हिन्दुस्तान से निकालेगा।

वज़ीर अली की इस योजना को असफल करने के लिए अंग्रेजी फ़ौज और नवाब सआदत अली खाँ के सिपाही बहुत सख्ती से वज़ीर अली का पीछा कर रहे हैं। अंग्रेजी फ़ौज को पूरी जानकारी है कि वज़ीर अली जंगलों में कहीं छुपा हुआ है। इसी कारण अंग्रेजी फ़ौज जंगल में तम्बू डाले वज़ीर अली को ढूँढ रही है।

- कर्नल ने कैसे जाना कि वज़ीर अली सच में अपनी जान की परवाह नहीं करता?

उत्तर:- जब घोड़े पर सवार आदमी ने कर्नल से कहा कि वह वज़ीर अली को गिरफ्तार करना चाहता है, तो यह सुन कर कर्नल ने सवार को दस कारतूस दे दिए और जब कर्नल सवार से उसका नाम पूछता है तो सवार अपना नाम वज़ीर अली बताता है और कहता है कि कर्नल ने उसे कारतूस दिए हैं इसलिए वह उसकी जान को बख़्श रहा है।

इतना कह कर वज़ीर अली बाहर चला जाता है, घोड़े के टापों की आवाजों से लगता है की वह दूर चला गया है। इतने में लेफ्टिनेंट अंदर आता है और कर्नल से पूछता है कि वह सवार कौन था। कर्नल अपने आप से कहता है कि वह एक ऐसा सिपाही था जो अपनी जान की परवाह नहीं करता और आज ये कर्नल ने खुद देख लिया था।

- 'कारतूस' पाठ में निहित संदेश स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- 'कारतूस' नामक एकांकी के माध्यम से खोई आज़ादी की कीमत पहचानने, उसकी रक्षा करने का संदेश दिया गया है। पाठ के माध्यम से बताया गया है कि हम यदि समय रहते सचेत न हुए तो हमें गुलाम होने से कोई भी नहीं बचा सकता है। हमें देश प्रेम, देशभक्ति, साहस, त्याग जैसी मानवीय भावनाएँ हमेशा सबसे पहले रखनी चाहिए।

जिस तरह कुछ नवाबों ने अंत तक देश को आजाद कराने का प्रयास किया तथा अंग्रेजों की दासता स्वीकार नहीं की उसी प्रकार हमें भी किसी लोभ या स्वार्थ के वशीभूत हुए बिना आज़ादी को बनाए रखना चाहिए और आजादी पाने के लिए किए गए बलिदानों को कभी नहीं भूलना चाहिए।

निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए –

- मुठ्ठी भर आदमी मगर ये दमखम।

उत्तर:- कर्नल अपनी पूरी फ़ौज को ले कर वज़ीर अली का पीछा कर रह है और वज़ीर अली उनको सालों से धोखा दे रहा है और इन्ही जंगलों में कहीं भटक रहा है परन्तु उसकी पकड़ में नहीं आ रहा है। वज़ीर अली के साथ कुछ अपनी जान को जोखिम में डालने वाले लोग हैं और ये इतने थोड़े से आदमी हैं परन्तु इनकी शक्ति और दृढ़ता की कोई सीमा नहीं है।

- गर्द तो ऐसी उड़ रही है जैसे की पूरा एक काफ़िला चला आ रहा हो मगर मुझे तो एक ही सवार नज़र आता है।

उत्तर:- जब सिपाही ने कर्नल को कहा कि दूर से धूल उड़ती हुई दिखाई दे रही है। तो कर्नल ने तुरंत सिपाही से कहा कि वह दूसरे सिपाहियों से तैयार रहने के लिए कहे। लेफ्टिनेंट खिड़की से बाहर देखने में व्यस्त था और कहने लगा धूल तो ऐसी उड़ रही है जैसे कि एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाने वाले यात्रियों का समूह आ रहा हो। परन्तु दिखाई तो एक ही घुड़सवार दे रहा है। कर्नल भी खिड़की के पास गया और देख कर बोला हाँ एक ही घुड़सवार लग रहा है जो तेज़ी से घोड़े को दौड़ा कर चला आ रहा है।

Individual Tuition Concept